

सुवर्णा नामावली



स्तम्भ

श्री वर्द्धमान स्थानकवामी जैन अमण संघ के
प्रधान मन्त्री सुनि श्री १००८ आं

आनन्द ऋषिजी महाराज

संरक्षक-श्री नेमीचन्दजी सरदारमलजी पुंगलिया,
इतवारी नागपुर

आजीवन सदस्य (LIFE MEMBERS)-

- १ श्री हीराचन्दजी नानुलालजी पारख,
सदर बाजार, नागपुर ।
- २ श्री माणकचन्दजी सेरमलजी सुराणा,
सदर बाजार, नागपुर ।
- ३ श्री केशरीमलजी रिखचन्दजी, धामक ।

आश्रयदाता—

- १ श्री नन्दरामजी चाँदमलजी बोहरा, पीपला ।
- २ ,, लालचन्दजी रतनचन्दजी भटेवड़ा, राहू ।
- ३ ,, फतेहराजजी धनराजजी संघवी, सिंधी ।
- ४ ,, हीरालालजी ताराचन्दजी गुगलिया,
बाबुलगांव ।
- ५ ,, सकल जैन संघ, बनोसा (दर्यापुर) ।
- ६ ,, जैन संघ, चाँदूर बाजार, जि० उमरावतां ।
- ७ ,, हीराचन्दजी फूलचन्दजी पारख
सदर बाजार, नागपुर ।
- ८ ,, श्रीकारलालजी मिश्रीलालजी वाफणा,
मन्दसौर ।

॥ श्री अमृत काव्य संग्रह ॥



रचयिता:—

शास्त्रविशारद प्रौढ कवि पं० मुनि श्री अमीन्ध्रषिजी म.



सम्पादक:—

श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के प्रधान मन्त्री

परिडत रत्न मुनिश्री आनन्द ऋषिजी म. सा.

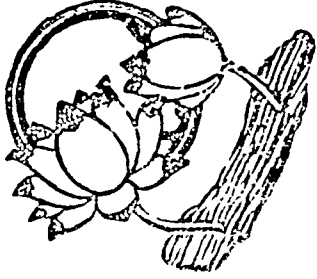
प्रथमावृत्ति }
२००० }

अमूल्य

वासुदेवप्रसाद

{ वीर सं. २४८२
ई. सं. १९५६
वि. सं. २०१२ }

प्रकाशकः—
श्री रत्न जैन पुस्तकालय, पाथर्डी (अहमदनगर)



मुद्रकः—
श्री जैनोदय प्रिंटिंग प्रेस, रतलाम.

धन्यवाद

प्रिय वाचकवृन्द !

आपके कर कमलों में श्रीरत्न जैन ग्रन्थमाला का “अमृत काव्य संग्रह” नामक पुष्प समर्पण करते हुए हमें प्रमोद होता है ।

इस पुस्तक में बोधप्रद, वैराग्यवर्धक, शान्तिदायक एवं चित्ताकर्षक काव्यों का संग्रह किया गया है अतः काव्य रसिक तथा साहित्य प्रेमी सज्जन इस काव्य से लाभ उठावेंगे ऐसी आशा है ।

इस पुस्तक की दो हजार प्रतियों के प्रकाशन में श्रमणसंघीय प्रधान मन्त्री पं. रत्न श्री ?००८ श्रीआनन्दऋषिजी म० के संसार पक्षीय निम्न लिखित गुगलिया परिवार ने अपनी उदार भावना के फलस्वरूप सहायता प्रदान की है:—

(१) श्रीमान् वरुतावरमलजी लखमीचन्दजी गुगलिया राणावास

(२) श्रीमान् सेसमलजी मिश्रीमलजी गुगलिया, घटावर

(३) श्रीमान् सेसमलजी गणेशमलजी गुगलिया, घटावर

(४) श्रीमान् सेसमलजी हस्तीमलजी गुगलिया, घटावर

एतदर्थे उपर्युक्त सभी दानी महाशय धन्यवाद के पात्र हैं ।

इस पुस्तक के प्रूफ संशोधनादि कार्य में श्री पं. बसन्तीलालजी नलवाया ने अपने परिश्रम का सहयोग दिया अतः वे भी धन्यवाद के पात्र हैं ।

मन्त्री, श्री रत्न जैन पुस्तकालय, पाथर्डी

सुप्रसिद्ध कविवर्य पं. रत्न सुनि श्रीअमीन्ध्रविजी महाराज का जीवन परिचय

आपके पिता श्रीमैरूलालजी दलोट (मालवा के निवासी थे। आपकी धर्मपत्नी श्रीयाराबाई म० से, मार्गशीर्ष कृष्णा ३, सं० १९३० में आपका शुभ जन्म हुआ। तेरह वर्ष की उम्र में पं. र. श्रीसुखान्ध्रविजी की विधि सम्पन्न हुई। आपकी बुद्धि बड़ी ही तीव्र थी और धारणा शक्ति भी गजब की थी। मगरदा (भोपाल) में दीक्षा आश्वयजनक हो जाता है। सौभाग्य से आपको यह सब चीजें प्राप्त थीं। अतएव आप जैनागमों में तो प्रवीण हुए ही, साथ ही प्रत्येक प्रचलित मत के मन्तव्यों के भी अच्छे ज्ञाता हो गए। इतिहास की ओर आपकी गहरी रुचि थी। शास्त्रीय एवं दार्शनिक चर्चा में भी आप अत्यन्त विचक्षण थे। इस विषय में आपने बड़ी ख्याति प्राप्त की थी। कई स्थानों पर मूर्त्तिपूजक सन्तों के साथ शास्त्रार्थ करके आपने विजय प्राप्त की थी। एक बार दिगम्बरों से शास्त्रार्थ करने के लिए आप वागड़ प्रान्त में पधारे थे। वहाँ आहार-पानी का सुयोग न मिलने के कारण आपको घोर परीपह सहन करने पड़े। लगातार आठ आठ दिन तक ब्राह्म में आटा घोल कर पिया और उसी के आधार पर रहे। वही आपका भोजन और वही पानी था। इस परिस्थिति में आप शान्त, संतुष्ट और प्रसन्न थे। ऐसे विकट और प्रतिकूल प्रसंगों पर आपका धैर्य देखने योग्य होता था। कितना और कैसा भी संकट क्यों न आ जाय, आप

कभी पल भर के लिए भी विचलित न होते और अपने निश्चित लक्ष्य की ओर अग्रसर ही होते जाते थे। आपने जैन धर्म के जिस स्वरूप को वास्तविक रूपसे समझा था, उसी को समझाना और जन साधारण के जीवन को उच्च स्तर पर ले जाना और इसी मार्ग से अपनी आत्मा का कल्याण करना आपका लक्ष्य था। यही लक्ष्य सदा आपके समक्ष रहता था।

कई लोगों की धारणा है कि दार्शनिक कवि और कवि दार्शनिक नहीं हो सकता। कवि कम्मनीय कल्पना का उपासक होता है और दार्शनिक वास्तविकता का मीमांसक। दोनों की दो विरोधी दिशाएँ हैं। मगर पं० मुनिश्री अमीरुद्दिन महाराज ने उक्त धारणा को अपने ही उदाहरण से भ्रान्त सिद्ध कर दिया था। मानो उन्होंने अपने जीवन से ही अनेकान्त का प्रतिपादन और समर्थन कर दिया हो ! वे उच्च कोटि के कवि भी थे और श्रेष्ठ दार्शनिक भी थे। पं० मुनिश्री द्वारा रचित निम्नलिखित ग्रन्थ आज भी सन्तों और सतियों के पास उपलब्ध हैं:—

- (१) स्थानक निर्णय
- (२) मुखवस्त्रिका निर्णय
- (३) मुखवस्त्रिका चर्चा
- (४) श्री महावीरप्रभु के छन्दोस भव
- (५) श्री प्रद्युम्न चरित
- (६) श्री पार्थनाथ चरित

- (७) श्री सीता चरित
- (८) सम्यक्त्व महिम्ना
- (९) सम्यक्त्व निर्णय
- (१०) श्री भावनासार
- (११) प्रश्नोत्तरमाला
- (१२) समाज स्थिति दिग्दर्शन
- (१३) कषाय कुटुम्बछद्महडालिया

- (१४) जिनसुन्दरी चरित
- (१५) श्रीमती सती चरित
- (१६) अभयकुमारजी की नवरंगी लावणी
- (१७) भरत-बाहुवलीचौडालिया
- (१८) अयवंता कुमार मुनि-छद्म ढालिया

- (१६) विविध बावनी
(२०) शिक्षा बावनी
(२१) सुबोध रातक
(२२) मुनिराजों की ८४ उपमाएँ

साहित्यिक दृष्टि से

एकाक्षर त्रिपदीबंध, चटाईबंध, गोमूत्रिकाबंध, छत्रबंध, वृत्ताकारबंध, धनुर्बंध, नागपशबंध, कटारबंध, कौपटबंध, चौकीबंध, स्वस्तिकबंध, आदि-आदि बहुत-से चित्रकाव्यों की रचना की है। इनमें से कुछ काव्य श्रीअमोल जैन ज्ञानालय, धूलिया से प्रकाशित भी हो चुके हैं। आपने काव्यमय 'जयकुंजर' की बड़ी ही सुन्दर कृति रची है, जो अवंलोकनीय है और आपकी कवित्व प्रतिभा का परिचय देती है।

- (२३) अम्बुड संन्यासी
(२४) कीर्तिध्वज राजा
(२५) सत्य घोष चरित
(२६) अरण्यक चरित
(२७) मेघरथ राजा का चरित
(२८) धारदेव चरित

आपका अत्यन्त सुन्दर था, जहाँ कवि-अनुभूतिमय और साथ ही शिक्षामय पूर्ति की है। इन सब काव्यों को देख कर निस्संकोच कहा जा सकता है कि आप श्रेष्ठ प्रतिभाशाली कवि थे। सन्त-साहित्य में आपकी रचनाएँ महत्वपूर्ण कहा जा रही हैं। आपकी कविता की भाषा सरल, सुबोध और प्रसाद गुण युक्त है। आपने छन्दः शास्त्र पर भी बराबर ध्यान रक्खा है और अपनी रचनाओं को छन्दोभंग के दोष से पूरी तरह बचाया है। इन सब दृष्टियों से पंडित मुनिश्री अमीरुद्दीन महाराज स्थानकवासी परम्परा के सर्वोत्तम कवि हैं। आपकी तुलना में ठहरने योग्य कवि इस परम्परा में विरले ही मिल सकते हैं।

आपकी कविता का उद्देश्य, सीतामऊ, उन्हें आदि ऐसे क्षेत्रों में भी पदार्पण हुआ था, जहाँ कवि-अनुभूतिमय और साथ ही शिक्षामय पूर्ति की है। इन सब काव्यों को देख कर निस्संकोच कहा जा सकता है कि आप श्रेष्ठ प्रतिभाशाली कवि थे। सन्त-साहित्य में आपकी रचनाएँ महत्वपूर्ण कहा जा रही हैं। आपकी कविता की भाषा सरल, सुबोध और प्रसाद गुण युक्त है। आपने छन्दः शास्त्र पर भी बराबर ध्यान रक्खा है और अपनी रचनाओं को छन्दोभंग के दोष से पूरी तरह बचाया है। इन सब दृष्टियों से पंडित मुनिश्री अमीरुद्दीन महाराज स्थानकवासी परम्परा के सर्वोत्तम कवि हैं। आपकी तुलना में ठहरने योग्य कवि इस परम्परा में विरले ही मिल सकते हैं।

आपकी कविता का उद्देश्य, सीतामऊ, उन्हें आदि ऐसे क्षेत्रों में भी पदार्पण हुआ था, जहाँ कवि-अनुभूतिमय और साथ ही शिक्षामय पूर्ति की है। इन सब काव्यों को देख कर निस्संकोच कहा जा सकता है कि आप श्रेष्ठ प्रतिभाशाली कवि थे। सन्त-साहित्य में आपकी रचनाएँ महत्वपूर्ण कहा जा रही हैं। आपकी कविता की भाषा सरल, सुबोध और प्रसाद गुण युक्त है। आपने छन्दः शास्त्र पर भी बराबर ध्यान रक्खा है और अपनी रचनाओं को छन्दोभंग के दोष से पूरी तरह बचाया है। इन सब दृष्टियों से पंडित मुनिश्री अमीरुद्दीन महाराज स्थानकवासी परम्परा के सर्वोत्तम कवि हैं। आपकी तुलना में ठहरने योग्य कवि इस परम्परा में विरले ही मिल सकते हैं।

आपश्री को सुलेखन कला के प्रति भी बड़ा अनुराग था। आपके अक्षर अत्यन्त सुन्दर थे। आपने शास्त्रीय लिपि में, अपने स्वाध्याय के लिए स्वयं ही श्रीवृहत्कल्प, प्रश्नव्याकरण, सूत्रकृतांग, अनुयोग द्वार आदि शास्त्र लिखे हैं। तेरह आगम आपको कंठस्थ याद थे।

सं० १९४६ में गुरुवर्य श्रीसुखाश्रमिजी म० ने बम्बई में चातुर्मास किया था, तब आप भी साथ थे। सूरत-सम्मिलन के अवसर पर आप मौजूद थे।

आपश्री के शिष्य श्रीओंकारश्रमिजी तथा श्रीदयाश्रमिजी म. संसारपत्र के बन्धु थे। श्रीदयाश्रमिजी म. की प्रज्ञा अत्यन्त निर्मल थी। कोई भी श्लोक या गाथा दो तीन बार देख लेने से ही उन्हें कण्ठस्थ हो जाती थी। उनमें भी कवित्व शक्ति का अच्छा विकास हुआ था।

मालवा, मेवाड़, मेरवाड़ा, मारवाड़, गुजरात, काठियावाड़, देहली तथा महाराष्ट्र आदि प्रांतों को आपने विहार करके पावन किया और जिनशासन का उद्योत किया।

सं० १९८२ में दक्षिण महाराष्ट्र में पदार्पण करके आपने ऋषि-सम्प्रदाय के संगठन के लिए बहुत प्रयत्न किया। अहमदनगर में विराजित सन्तों और सतियों ने आपको ही पूज्य पदवी प्रदान करने का विचार किया, किन्तु उस समय काललब्धि न आने से प्रयत्न सफल न हो सका। आप दक्षिण से मालवा की ओर पधारे और अनेक क्षेत्रों में विचरते तथा धर्म प्रभावना करते रहे। ४४ वर्ष तक संयम पर्याय में व्यतीत करके, मिस्री वैशाख शुक्ल १४, सं० १९८८ को सुजालपुर (मालवा) में स्वर्गवासी हो गए। उस समय आपकी आयु ५८ वर्ष की थी।

प० रत्न मुनिश्री अमीश्रमिजी म० एक वरिष्ठ विभूति थे। आपने अपने जीवन में चतुर्विध

श्रीसंघ का और संसार का महान् उपकार किया । जिनशासन की शोभा बढ़ाई । आपके सदृश शास्त्र-वेत्ता, सुलेखक, सुकवि और धर्मोपदेशक उत्पन्न होकर जगत् के जीवों का कल्याण करें, यही मनोकामना है ।

लेखक:—

श्री वर्द्धं स्यात् जैन श्रमण संघ के पं. रत्न प्रधान मन्त्री

श्री आनन्दचन्द्रपिजी म० के शिष्य पं. मुनिश्री मोतीचन्द्रपिजी म०

श्री अमृत काव्य संग्रह पर

मरुधर केसरी मन्त्री मुनि श्रीमिश्रीमलजी म० का

आभिमताथ

पावनता चित्त में उमगे मन मानस में थिरता पनपावत ।

अघ होहन चीज अनोखी बनी सवही जड़भाव को शीघ्र जरावत ॥

काज बखान सुजानन के सुनते सुनते कबहुन अघावत ।

पीपूष पान करो "मिसरी" भान अध्यात्म को तु प्रकासत ॥

ता० १-१-५६]

क

—जालिया (ब्यावर)

(८)

रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीच्छाषेजी म०

॥ ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥

अमृत काव्य संग्रह

शिक्षा-बावनी



॥ दोहा ॥ प्रणमूँ श्री चोवीस जिन, गौतमादि गुणधार ॥
सरस्वती माय मया करी, कर बुद्धि विस्तार । १ ॥
असिध्याउसा नमूँ, पंच परम पद सार ॥
सद्गुरु उपकारां महा, ज्ञान दान दातार ॥ २ ॥
स्वपर चित्त हित कारणे, रचूँ बावनी सार ॥
शोता श्रोतेन्द्रिय भणो, सुखद मह्य हितकार ॥ ३ ॥

श्री अमृत
काव्यसंग्रह

रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीच्छाषेजी म०

॥ घनाक्षरी छन्द ॥

ॐ। ॐ नमो सिद्ध नाम लेत काम होय सिद्ध, ऋद्धि वृद्धि र दाता, दुरित निवारणं ।
 नरेंद्र सुरेंद्र वृन्द वंदत सकल जग, तिहुँ लोक स्वामी धामी, मोक्ष सुखकारणं ॥
 अजर अमर नित्य, अलख अगम प्रभु, करी अरि दूर सो, अनंत रिद्ध धारणं ।
 अमीरिख कहे वंदो, प्राणी चित्त ठाम प्राणी, पवि सुखसंपत्ति, अशुभ अधवारणं ॥
 न। नमो सत्य गुरु उर वसे हे सुमतपूर, देइ ज्ञानदान सब कुमति सिटाई है ।
 भ्रमत अनंत काल, अंधके समान ज्ञान अंजन को आंज, शिव राह को बताई है ॥
 गुरुके समान उपकारी नहीं लोक मांही, सेवो इम जाणी प्राणी, सदा सुखदाई है ।
 अमीरिख कहे निर्यामक समान गुरु, तारे भव्य जीव दया नाव में बैठाई है ॥२॥
 म। मनमें विचार नर, आउखो अल्प तामें, करे अति आशान भरोसा पल दमका ।
 पलमें पलट जाय, इंद्र धनुष्य जिस, सध्या का पुलाना कुमलाना ज्यों कुसुमका ॥
 कोमल शरीर सुख ऐशमें लोभाय रखो, निकसत दम ढेर होयगा भसम का ।
 जम डर आनके सयाने अमीरिख कहे, धार ले शरण चित्त, प्रभु के कदम का ॥३॥
 ।सि। सीख नहीं दीजे हठ ग्राही मूढ प्राणिनकू, सार नहीं होवे जैसे पानीके मथाएसे
 खरको चंदन लेप सुकूट भूषण तन, होवत निकाम जैसे आँस बिंदु बाये से ।
 मकूटके गले द्वार सार शोभादार बहु, तोरीके देवत फेंक फंद जानी काये से ॥
 अमीरिख कहे नहीं माने उपकार मन, होवत है वैरी बात हितकी बताये से ॥४॥

।द्वे। धन्य जगमाही मुख दुःख आया धारे धीर, जाणे परपौर मन टारे जग फंको ।
 करत विचारी काम बोलत मथुर वेण, लमा दया चित्त धारे, वारे कर्म बंधको ॥
 मन तन वचन गु करे उपकार नित्य, देव गुरु आण गहे, रोकत स्वच्छंद को ।
 अमीरिख कहे वलिहारी वांकी वारवार, धन्य वांकी मानको सो जाए ऐसे नंदको ॥४॥

।अ। अगर अगन पर धरत सुगंध होत, तपावत वारवार हेमद्युति दरसे ।
 दूध को तपावे स्वाद, काटत चंदन वास, तिल तेल इलु को पीलत रस तरसे ।
 देवे पय सुरभि चरण को बंधन क्रिये, देत फल अन्न जो ये भारत पत्थर से ।
 अमीरिख कहे तैसे संत कुलवंत भित्त, गिणे नहीं पीड उपकार तस कर से । ६॥

।आ। आउखो अथिर जैसे, विद्युत उजाससम, राखे आस मोटी पड़े खबर न पलकी
 तामे कूड कपट भ्रपट कर ठगे लोक, राग द्वेष वश होय, करे बात छलकी ॥
 तुष्टा की लाय लाग रही घट माहे अती, पातक की पोट सिर कैसे होय हलकी ।
 अमीरिख कहे प्रोणी धारिये संतोष मन, करमों के बीज बाल्या मौज है अचलकी ॥

।इ। इण मोह जालमाही वोत्यो है अनंतकाल नाना जोनिमाही कष्ट सखा है अपाररे
 क्रोध मान माया लोभ रागद्वेष वश जीव, पायो दुःख अनंत न छोड़त गंवाररे ॥
 आपाको विसार पर गुणनें मगन होय, बांधत करम नहीं करत विचार रे ।
 अमीरिख कहे छोड़ सकल जंजाल भव्य, धार गुरु सोख वेगा जाग हो दुशाररे ॥

श्री अमृत

काव्यसंग्रह

शिक्षा

वावनी

[५]

।ऋ। ऋद्धि नहीं पावे कोई सुकृत कमाई धिन, छोड़ घर देश परदेश जाय दौड़े हे ।
नाना भांत करत व्यापार जीव घातनके, क्रीमिया के काज नेह कुंगुरु से जोड़े है ॥
चोरो करी सहे दंड, पड़त है कैद माही, सहे अति मार नहीं ममता को मोड़े है ।
अमारिख कहे धन अति काज देखे दुःख काल आये बेरयो तोउ तृष्णा न तोड़े है ॥

।ऌ। लियो नहीं सुजस, न गायो है जिनेशमुख, छायो घट पाप नेड़ो आयो न धरमके
लूट्या है जीवा का प्राण, दया नहीं लायो मन, लुं काइ धापण वेण बोल्यो है मरमके
कूडो तोला मापा कर ठग्या है जगत लोक, काम में विकल नहीं लायो है सरमके ।
करके ममत्, मूढ सिधायो नरक माही, अमीरिख कहे वश होयगा करमके ॥१४॥

।ऍ। लोला माहे लीन भयो, लीनो न धरम धन दीनो परदुःख मन पोर न विचारी हे
आश्रव प्रसाद मद कपाय विषय माही, भोचो रहे रातदिन, पाप अतिकारी हे ॥
चिंत्या नहीं देव अरिहंत निगरंथ गुरु, करुणा धरम चित्त, माही नहीं धारी हे ।
अमीरिख कहे थों, चल्यो द्वारके मनुष्य भव, चारु गति माही मरमर हुबो ख्यारी हे

।ए। एक बार अशुभ करम वश नरकमें, पायो है अनेक कष्ट, संही जमसार है ।
एक बार तिर्यंच रु थावर निगोद माही, जनम मरण नहीं, वेदना अपार है ॥
शुभ करमों के वश देवगति पायो जीव, विलस्या अन्नूप सुख, आनंद उदार है ।
भटकत भटकत, पायो है मनुष्य भव, अमीरिख कहे सद्गुरु सीख धार है ॥१६

श्री अमृतचरिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीरिखिजी म०

।अ.। अक्षर लिखित शुभाशुभ निज संचित को, तहनी अनुसार जीव, सुखदुःख पावे है कोई नर सुखी कोई दुःखी कोई निर्धन, कोई नर धनवंत आदर बुलावे है ॥ कोई हाथी घोड़ा चढ चालत आनंद माही, कोई पुन हित ताके चाकर कहावे है । कोई रंग महलमें पड़े कोई बंधन में, अमीरिख एते खेल करम करावे है ॥२१॥

।क्र.। करत जगत धंध अंधके समान सुख, ऐशमें मुलायो मन त्रास नहीं कालकी । उंडी उंडी नींव देह, चुणावे आवास जाली, भरोखा अटारो चित्र शोभा सुरसालकी मात तात नारी सुत, मोहमें बंधाय रह्यो, कृष्णा अधिक चित्त करे धनमाल की । अमीरिख कहे घट रोके जव मौत आय, जावे सब छोड़ बांध पोट पाप जालकी ॥

।ख.। खरं ज्यों जनस अण लेखे ते गमायो जीव, कियो नहीं सुदृढत मनुष्य देह पायरे गुणि जत संगत न संत को नमायो शीस, प्रभु नाम लियो नहीं निंदा मन भायरे ॥ धरम की सीख नहीं भावत करम वश नींद में गमाई रात, दिन काम मायरे । अमीरिख कहे भारे भारी तब मास मात, आयो मुष्टि बांध के पसार हाथ जायरे ॥

।ग.। गरभ में आयो तब पायो है अपार दुःख, जाणे निज चेतन के जाणे किरतार है अशुचिमें वास रह्यो, सवा तब मास चित्त, देखरे विमास तिहां, सुख न लिगार है ॥ नीचा सिर ऊंचा पाय, अंब ज्यूं रह्यो टेराय, निकस बाहिर दिये, दुःख को विसार है अमीरिख कहे धरे गरव गुमान मन, पापके किये से फिर, वहीं ठौर त्यार है ॥२४

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्री अमीर खान साहब द्वारा लिखित ॥

।घ। घटहीमे तेरे धन भरयो है अखूट नर, ताकू नहीं खोजे मठ बाहिर फिरत है ।
दहा दूर तजी भरी पानी को अथाए अति, होवे देह दुःख पण काज न सरत है ॥
भोजनको थाल छोड़, मांगे भीख घर घर, ऐसो मूढ भूल भ्रम मनमें धरत है ।
अमोरिख कहे मृग नामिमें सुवास होय, तांही न लखत वन दौड़के मरत है ॥२५॥

।न। नागी दुर्गति न्यारी सदा अपवित्र सब, देखरे विचार यामें कौन वस्तु सार है ।
हाडको पिंजर नसा जाल सांस रक्त भरयो, महा अपवान तामे, वहे सब द्वार है ॥
तामें तू लोभाय रह्यो, निजगति भूल गयो, मान मेरो कहां अजु जान दुःखकार है ।
अमीरिख कहे भवि, धाररे शीयल शुद्ध, करम कलंक टाल, होत जयकार है । २६
च । चित्तमें विचार नहीं, वखत ये धारवार, जतन अपार कर फोगट न हाररे ।
सकल असार है संसार आयु क्षण वार, नीज चमत्कार ज्ञान दृष्टिसे निहार रे ॥
काल ब्याल दुःखकार, फिरत है नित्य लार, चेत हो हुशियार प्रभु वेण चित्त धाररे ।
समकित जतसार, पुंगल संग टार, अमीरिख प्रभु नामे होय भव पार रे । २७॥

।छ। छक्यो मोहमदमें बक्यो है सुख कूड वेण, चख्यो न धारम रस, रुक्यो नहीं पापसे
लड़त है लोक से करत न थलाई कछु, धरत गुमान रोप राखे माय बाप से ॥
संतजन देखकर करत है निंदा मुख, औगुण को अहे नहीं, प्रभु जाप से ।
अमीरिख कहे जव होयगा हिंसाव तेरा, जम हाथ मार खूल खायेगा तूं धापसे ॥

।ज.। जाना है जहर घर दूर है चेतन तेरा, मौत फिर रही सिर पलमें गिरावेगा ।
वाप दादा तेरो न कमायो चले दाम संग, आगे नहीं ज्ञाति देह आदर बुलावेगा ॥
चार कोस जाय तब, बांधत खुराक साथ, चित्त में विचार परलोक कहां खावेगा ।
अमीरिख कहे लीजे, तप जप व्रत संग, अबसर चूके जीव पीछे पिछतावेगा ॥२६॥

।भ.। भगपटके जैसे वाज दावत है तोतरको, जैसे वनराज आय मृग गृही लेत है ।
मकड़ी ज्यों मच्छिकाको, आयके असत वेग, मेंढकको अहि ज्यों अचान दगो देत है ॥
मृसाको संभार जैसे, ताक कर गटकत, तैसे तोय काल आय लेगा गुरु केत है ।
अमीरिख कहे तब खड़ेगा उपाय सब, ऐसी न विचारे मन, सोचत अचेत है ॥३०॥

।न.। नाना भांत तोय समझावे गुरु वारंबार, संसार असार सार मानके लुभाना है ।
नानापन छोड़ नहीं दानापन धारे चित्त, मोहमें लुभाना अधिकाना पाप ठाना है ॥
मानमें भुलाना गुरुदेव नहीं माना, शुद्ध देव न पिछाना कर्म किये छाना छाना है ।
अमीरिख कहे स्थाना अंतकाल हाथ जाना, कुंभोपाक्रमें पचाना तवे पछताना है ॥

।ट.। टले नहीं काल लोपे करत उपाय क्रोड, मेरु शिर रहो भावे समुद्र सभार है ।
बख्तर सजीने तन, धारत आयुध सब, पेसे सात कोटड़ी में, देह दड़ द्वार है ॥
रक्तक मनुष्य द्वार द्वारपै रहे असंख्य, होय हुशियार हाथ लेह हथियार है ।
अमीरिख कहे काल आयके लियो उठाय, जतन धरे ही रहे खड़े परिवार है ॥३२

श्री अश्रुत

काव्यसंग्रह

श्री अश्रुत काव्यसंग्रह — श्री अमीरख कहे तस चाकर चरण को ॥

।ठ। ठाठ देख फूल मत भूल मत निज गुण, पुद्गल खेल थाकू थिर मत जाण रे ।
बांध्या सो बिखर जाय फूल्या सोही कुमलाय, चुणीया पड़त उगा जाय आथवान रे
देखत ही तेरे विरलाय नहीं रहे नित्य, हरि हर चंद्र आदि गये हैं राजान रे ।
अमीरख कहे प्राणी, जगत से प्रीति तोड़, धारले आतम गुण, होय निरवाण रे ॥

।डि। डरत न पाप से करत मन हरसाय, जाने नहीं प्राणी विन सुगते न छूटसी ।
दोड़त प्रदेशमाही, पाप करी जोड़े धन, सज्जन सनेही मिल माल तेरो लूटसी ॥
धेवर चुराया मोदी, खाया है कुटुम्ब मिल, मार पड़ी मोदी सिर, तैसे जम कूटसी ।
अमीरख कहे तेरो होय न सहाय कोई, नरकमें जम ले संडास चाम चूटसी ॥३४॥

।ढि। ढील नहीं कीजे गुरुदेवके वचन सुणी, छीजे छिन छिन आयु अंजलीके पानी ज्यू
देह बलहीन होय, आई है जरा नजीक, नदी पूर वेग जैसे, बीते है जवानी ज्यू ॥
कालदूत आय तेरे, शीस पर छाया रह्यो, देहकी समत्व नहीं छोड़े अभिमानी ज्यू ।
अमीरख कहे पाप बांधके सिधायो जब, जम हाथ नरकमें, पचे ताज धानी ज्यू ॥

।ण। णमुँ निगंथ गुरु, कीनी है कुमति दूर, संसार तजीने लियो भारग तरणको ।
महात्रत पाले शुद्ध, टालत कपाय चार, गुप्तेंद्रिया डर नहीं, वेदनी मरणको ॥
तीनरत्न पूरण, करण जोग भाव सत्य, जमा ने वैराग्य धारे, करम हरण को ।
महोगुणधारी उपकारी है जहाज सम, अमीरख कहे तस चाकर चरण को ॥

शिचा
वावनी

[१०]

श्री अमीरख कहे तस चाकर चरण को ॥

शिक्षा-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीरखण्डिजी म०

।त। तन है असार नर, कीजिये विचार मन, पिंजर है हाड तपे चाम जो मढाना है।
 दुर्गम्य खाना तु तो मानत है मेरा मेरा, अंत दगादार तन, जान दुःखदाना है ॥
 मांगत है खाना नहीं देवे तो हैरान करे, जोमत अनेक चोज, तोहु न अघाना है।
 अमीरिख कहे तन काचा कुंभ जैसे जान, रंग चंग देख नर, भया क्यो दिवाना है ॥
 ।थ। थिरता रहेगो यो गरु न रहेगो, मद् पूर ना रहेगो देह धूरमें मिलायगो।
 धन ना रहेगो ना रहेगो तन निकाम पन शौवन ये तेरो छिन एकमें विलायगो ॥
 करले भलाई भाई छोड़ी बल छंद मंद, सज्जन ये देह तेरी आग में मिलायगो।
 कहे अमीरखण्डिजी जायगो अकलो, तब तेरो हितवारो कोऊ संग ना चलायगो।
 ।द। दया है धरम मूल जाणी अनुकूल प्राणी, धारो चित्त माहो भव २ सुखकार है
 समुद्रमें नाव भूला जनको मारग दाता, प्यासा को शीतल जल, भूखेको आहार है ॥
 पक्षीको गगन जैसे, लाकड़ी है अंधलेको, तैसे भवि जीव ताको दया को आधार है।
 अमीरिख कहे भवि, कालो चित्त भाव आणी, दयासे अनंत जीव, पाम्या भवपार है
 ।ध। धार शुद्ध भाव मन संसार तारणहार, भाव विन फीकी सब, तप जप करणी।
 भाव मरुदेत्री नंद खटखंड पति भरतजी, केवल सुज्ञान पाय मेटी भव फिरणी ॥
 कोटि भव संचित पातक जाय विरलाय, शिवसुख दाता दुरगति दुःखहरणी।
 अमीरिख कहे भव तारण जहाज सम, भावना प्रधान जैन आगममें वरणी ॥४०

श्री अमृत
व्याज्यसंघ

शिक्षा-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीरखण्डिजी म०

शुद्धि-चरितः—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीर-अली म०

न। नरभव पायके गमायो तेने फोगटमें, राच्यो नहीं निजगुण खोय रह्यो भूलमें कान वश हिरण, पतंग नैन वश मरे, नासिका के वश मरे अमर ज्यूं फूज में । रसनासे मीन कायात्रश गजराज मरे जाणत है लाभ घाटो, खाय प्राण मूलमें ॥ अमीरिख कहे नर पड़े जो पांचोही वश, जनम अमोल हार जाय मिल्यो धूलमें ।

प। प्रभु नाम लिए सब विघन विलाय जाय, गरुड शब्द सुन त्रास होय व्यालको महामोह तिमिर पुलाय ज्यों दिनेश उदे, भेघ वरमत दूर करत दुकाल को ॥ चिंतामणि होय जहाँ दरिद्र न रहे रंच, धनंतर आयो भेदे, वेदन कराल को । तैसे जिन नामसे करसको न रहे अंश, ऐसे प्रभु अमीरिख जपत त्रिकालको ॥४२

फ। फूल्यो फूल्यो फिरे कहाँ, काल शिर छाथ रह्यो, छिनमें बेहाल करे काल बलवंत है बालक जवान वृद्ध, दरिद्र दरबवंत, सुखी दुःखी नर नहीं, छोड़े ज्ञानी संत है ॥ देखो जिन चक्रवर्ती, बलदेव वासुदेव, इंद्र चंद्र देव पशु, ताको करे अन्त है । अमीरिख कहे भोला, तेरो तो गिणत कहां, ऐसी न विचारो मूढ, सोवत निश्चित है

वि। बालवय खेलमाही, खोयके जवान भयो, काम क्रोध छायायो घट, भूल्यो जिनराजने वृद्धवय आयो तव, हुचो है निर्बल तन, घेर लियो सांस खांस, छोड़ी सब लाजने । नैन मुख श्रवण थक्या है सब हाथ पग, कुटुम्ब दिखायो छेह, करे नहीं काजने । अमीरिख कहे घेर लियो जव काल आय, चलयो खाली हाथ नहीं लियो धर्म साजने

श्री अमृत
काव्यसंग्रह

शुद्धि-चरितः—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीर-अली म०

शुद्धि-चरितः—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीर-अली म०

।म। भटकरत मनरूप, अश्र महवेगवन्त, स्वयो नही रहे करे नानाविध रंग हे । कवहू वैराग्य कतु मन में धरत राग, कवहू धरम कतु रात्रे पाप संग हे ॥ चार गति माहे भटकावे नही पावे पार, गिणी नही जाय जैसे उदधि तरंग हे । अमीरिख कहे मुनि, ज्ञान रूप वाग करो, लावत है मनवश, आनंद अभंग हे ॥४५

।म। मनुष्य जनम धुर, पायवो दुर्लभ क्षेत्र, आरज उत्तम कुल चिर आयु धाररे पूरण इंद्रिय जोग, तनमे समाधि निलोभी सद्गुरु जोग, दुर्लभ विचार रे ॥ श्रवण आगम वेण, सरधा दुर्लभ अति, धरम उद्यम किया, होय भवपार रे । अमीरिख कहे प्राणी, दश वोल जोग पाय, तजके प्रमाद धार, दया धर्म साररे ॥

।य। याद क्यो न करे जीव, सहा जो नरक दुःख, निरंतर मारे मार, परम अधरमी । अन्ती है भूख प्यास रोग शोक खास ज्वर, परवश पणो है अन्ती शीत गरमी ॥ अन्ती है भय कुंभी पाक वृक्ष सामलीको, अंग अंग छेद पार, सींचे तरे असरमी । अमीरिख कहे नही वेतरणी माही न्दाक्यो, याद कर दुःख मत होवे दुष्ट करमी ॥४७

।र। रात समे पंखी मिल, रहत है वृक्ष पर, उगत सूरज दिसो दिसमें उडाना है । बाजीगर खेल मेला महोत्सव माही नर, मिलत अनेक फिर जाय विरलाना है ॥ धेनुपाल वनमाहो, करत है गाय मेरी, सांक समे मंडले अकेला घर जाना है । अमीरिख कहे तैसे, मिल्यो परिवार आय, विछडत वार नहीं चेत न सयाना है ॥४८

भी अमृत
का अन्यसह

लि०। लागरही जगतमें, स्वारथ सगाई सब, स्वजन स्वारथ बिन, होय दुःखदाई है ।
मात तात नारी श्रात, देवे न आइर मान, देखो नृप भरतने बाहुबल भाई है ॥
सिंहसेण कोणिक कनकरथ कंसराथ, सूरिकंता चूलणी कुजस जग पाई है ।
अमीरिख कहे जीव अन्तं स्वारथ वश, हरथा है सज्जन प्राण ज्ञानी फरमाई है ॥४६
वि०। वचन मधुर लवे दिलमें कपट भाव तासे कर प्रीत मन भेद न उचार रे ।
बोलत कटुक मन, माही है सरल भाव, ताका सुण बोल मन, क्रोध मन धार रे ॥
अंतर कपट और वचन कटुक होय, एसो जन होय तांको संगति निवार रे ।
अमीरिख कहे मन सरल मधुर वेण, तांकी हित सोख भव भव सुखकार रे ॥५०
श०। संसार असार जैसे सभनको मायासम, छिनमें विरलाय जाय, छाया जो बादलकी
विषयभोग दुःखदाई, जानो भव भव मांही सिरि जिन उपमा बताई विष फलकी ॥
रतन अमोल चिंतामणि सस नरभव विषय वश होय करे, कीमन क्यों हलकी ।
अमीरिख कहे प्राणी मोहमें लुभाय रखो, पलकी खबर नहीं, आश करे कलकी ॥
प०। पट् खंड नायक पायक जीके देव रहे, चवदे रतन नव तिध के भंडार है ।
हाथी घोड़ा रथ जाके, चौरासी चौरासी लक्ष, सेंस छन्नु क्रोड पांय सुभट जुं भार है
त्रिया एक लक्ष और बाणव सहस्र सार छन्नु क्रोड गाम देश बत्तीस हजार है ।
अमीरिख एती ऋद्धि त्यागते न वार करी, कहे तेरो केती ऋद्धि चेतन गंवार है ॥

रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रोफ़ कार्व श्री अमीरज़ाबिजी म०

।र। समकित विन नहीं। पावे कोई शिव सुख समकित विन सब करणी असार है।
 छार पर लीपण दीपण सूका चूना पर। विलोवत नार जैसे, फोगट विचार है ॥
 उपरमें बीज और कूटवो। पराल पुंज, अंक विन शून्य सार, होय न लगार है।
 अमीरिख कहे होय जनम मरण दूर, सेवो समकित इम जाणी नरनार है ॥५३॥

।ह. हंस और बक कोई होवत है एक रंग, वाको मन सरल वो कपटकी खान है।
 सोनो ने पोतल दोनो, होत है सरीखे रंग, रजत कथीर दोई होवे एक वान है ॥
 कोकिल वायस दोनो, होवे है वरण एक, धेनु दूध शोहर को, रंग एक जान है।
 रंग एक सम पिए। गुणमें फरक अति, अमीरिख धरम अधरम बखाण है ॥५४

।चि। क्षमा सुखदाई फरमाई है धरम धुर, करत करम चूर, जिनवेण जंपती।
 मुनि गजसुकुमार, खंधक उत्तारी खाल, मेतारज रिख ते कृपाय रही कंपती ॥
 पांचसे खंधक शिष्य, टाल्यो है करम विष, परदेशी क्षमाधारी त्रिया कंठ चंपती।
 अमीरिख कहे क्रोध जीते सोही शूरवीर जनम मरण तज, पामे थिर संपति ॥५५॥

।त्रि। तृपणाक्री लाय छाथ रही घट मांही तेरे, जोड जोड माया उंडो, गाडके धरत है
 धनमांहे पांती सात धरती अगन न्यात, देवता भूपाल पानी चोर भी हरत है।
 खर्चो न खायो नहीं, लायो है संतोष मन, मरी दुरगति गयो, विपत भरत है।
 अमीरिख कहे नहीं आवे माया संग तेरे, मोटा मोटा राय मेरी मेरो के मरत है ॥

सुबोध शतक

॥ दोहा ॥

श्रीयुत शांति जिनाधिपति, शांति करण सुखदाय ॥
अशुभ अमंगल आदि सब, नाम लेत टल जाय ॥ १ ॥
श्रुत देवी वरदायिनी, समरो उर धरि हेत ॥
जासु कृपातेँ जडमति, वने सुबुद्धि निकेत ॥ २ ॥
चरण करण शिवपंथ पुनि, ज्ञानदान दातार ॥
लहि रजाय गुरुरोय की, रचूं ग्रंथ हितकार ॥ ३ ॥
धरयो नाम गुण जानि के, सुबोध शतक ग्रंथ ॥
सुगुण सबे हिय धारिये, धर्म नीति को पंथ ॥ ४ ॥

शारदा नाम—

प्रथम भारती देवी, दूजो सरस्वती तीजो शारदा सुनाम वर चोथो हंसमामिनी ।
पंचमो विश्व विख्यात छट्टो वागेश्वरी सुसप्तमो कौमारी अष्टमो है ब्रह्मचारिणी ॥
नवमो विदुषां देवी, दशमो सुब्रह्म सुता, ग्यारमो ब्रह्माणी वारमो है ब्रह्मवादिनी ।
प्रात उठो पठन करे जो वर नाम यह, होवे अमोरिख पै प्रसन्न श्रुतस्वामिनी ॥ १ ॥

श्री अमृत

काव्यसंग्रह

सुबोध

शतक

[१७]

रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीश्रुतपंजी म०

श्री अशुत
काव्यसंग्रह

अरिहंत देव वर्णन—

परम प्रताप तिहुँ लोक में अखंड जाको, दरशन ज्ञान बल चायक अतंत है ।
इन्द्र सुरधुन्द अहमिंद्र औ नरेंद्र आदि, जोरो कर पद-अरविंद को नसंत है ॥
तत्त्व को उच्चारी निराधार नर नारिन को, दुःखतें निकायो सुखी कीने भगवंत है ।
सहिंसा अपार जाके, गुणको न पारावार, कहे अमीरिख ऐसे, देव अरिहन्त है ॥२

सिद्ध वर्णन—

जाके वसु करम समस्त भये दग्ध तातें, आतमिक महागुण अष्ट प्रगटाना है ।
जनम मरण जरा व्याधि रोग शोक भय, विपत्ति वियोग आदि दूर विरलाना है ॥
लोक अग्र जायके विराजे निराकार होय, सदा अविचल पुनि भवमें न आना है ।
कहे अमीरिख सब, कारज किये हैं सिद्ध, ऐसे भगवंत सिद्ध मोक्ष पुरी राना है ॥३॥

आचार्य वर्णन—

भोगसे उदास होय, छोड़ी गृहवास सबे, आश्रव विनाशि के आचार पंच धारे है ।
जानि जिन आगमके, भेद भव्य प्रोगिन को, मधुर वचन प्रतिबोध देइ तारे है ॥
गुण को न पार जामें छत्तीस प्रधान जाए, संपदा सहित जिनमत उजियारे है ।
कहे अमीरिख समभावें जो आचार विधि, ऐसे आचारज भव भीतिको निवारे है ॥४

उपाध्याय वर्णन—

जगसे विरत होय, धारे जित्तमत ब्रत, ज्ञान क्रिया युक्त जिन मारग विपावे है ।
श्रुतज्ञानसिंधु अचगाही भये पार आये, कृपा करी और भवि जीवकों पढ़ावे है ॥
संसय हस्त गुण धरत पचांस वर, मिथ्यात्वांको मान भंग करिके हरावे है ।
कहे अमोरिख ज्ञान भानु है प्रत्यक्ष जेह, ऐसे गुणधारी उपाध्यायजी कहावे है ॥५॥

साधु वर्णन—

महाव्रत पंच आदि सप्तविंश गुण जासे, जानि दुःखमूल जग भोग भये त्यागी है ।
निशस्तिन करत अभ्यास जिन आगसको, आतम स्वरूप साधवेंको मति जागी है ॥
पुद्गल चाह तजी, वाराविध धारे तप, परंपह दुष्कर सहत शिवरानी है ।
कहे अमोरिख सेवे करम कलंक मेंटो, पांसे मोक्षवास ऐसे साधु बड़ भागी है ॥६॥

अष्ट प्रातिहार्य—

बृक्ष है अशोक फूल, फल दल शोभित सुसिंहासन रतन जडित मनुहारी है ।
चामर अन्नूप शुभ्र, डारत सुरेंद्र मिली, छत्रोपरि छत्र तीन, ताकी छत्र न्यारी है ॥
देव वरसावे विन जीवके कुसुम पुंज, दुंदुभि वजत प्रभामंडल उजारी है ।
देशना प्रकाशे जिन शोभे प्रतिहार आठ, कहे अमोरिख अरिहंत उपकारी है ॥७॥

जिन जप महिमा—

विषय आताप दूर करिवेको शीतकर, मिथ्यातम नाशिवेको भातुके समान है ।
 सुमति सुबुद्धिके बढायवेको शारदा सो ज्ञान ध्यान पूरिवेको, कुबेर सुजान है ॥
 चिंता सब भेटिवेको चिंतामणि जाणो यह, इच्छा फल दाता कल्पतरु सो सहान है ।
 कहे अमीरिख वर शिवपद देनवारो, सुखको निधान जिनराजजो को ध्यान है ॥१॥
 पुष्करावरत सुख वेलाके बढायवेको, कामित दातार काम कुंभ सुख धाम है ।
 भव व्याधि दूर करिवेको धनंतर सम, विप वृत्त कापिवे कुठार अभिराम है ॥
 कष्टगिरि तोरिवेको, वज्रके समान पुनि गरुड करम अहि त्रासवेके काम है ।
 भवोदधि पार करिवेको है जहाज सम, अमीरिख ऐसो जिनराजजो को नाम है ॥६

पद प्रयोग—

अष्ट महाकर्म रिपु-मारन को मारन है, अनुभव मोहिवे को मोहन उच्चार है ।
 विषय कपाय आदि दांपको उच्चाटन है, आकर ख करे निज रिद्धि सो अपार है ॥
 मनको कुमारगते रोकिवेको स्तंभन है, शिववधू काज वशीकरण उदार है ।
 छहो है प्रयोग जिनराज नाम मंत्र हूँ के, कहे अमीरिख सवे मंत्रन को सार है ॥१०

अनंत जिनगुण—

लब्धिके प्रभाव एक हुंते कोटि देह करे, देह देह प्रति कोटि शीश जो बचावे है ।

शीश शीश क्लोटिमुद्ग, प्रतिमुख क्लोटि जिह्वा ल्योंही प्रतिजिह्वा क्लोटि भारती वसात्रे हे । सागर अन्त पर्यंत ओं निरंतर ही, था विध अन्त भगवंत गुण गावे हे । कहे अमीरिख जिनराजके अपार गुण, काहूँ विध ताको नेक पार नहीं पावे हे ॥ कौन गिनी सके धन बुद्ध वन पत्रतको, सागर तरंग संख्या, कर्हिके बतावे कौन ? कौन कर अंगुलतें माप पुहवीको करे, सुमेरु गिरिको तोल, करिके दिखावे कौन ? कौन रतनागर मुजातें तिरी पावे पार, अंबर में उड़ी नभ अंतकं सुनावे कौन ? । कहे अमीरिख जिनराजके अन्त गुण, मंदमति नर पूरे गुण कथि गावे कौन ? १२

श्रोता के १४ गुण--

भक्तिवंत बोलें मीठे वचन गरव त्यागी, सुणिवेको रुचि किते चित्त ना डुलावे हे । सुणे सो प्रगट कहे प्रश्न करो जाणे पुनि, सुणे वने सूत्र नींद आलस न आवे हे ॥ बुद्धिवंत दाता गुरु महिमा बढावे भूरि, प्रीतिवंत होय निदा ओगुण न गावे हे । कहे अमीरिख दश चार गुणधारी ऐसो, सरल विवेकी नर श्रोता सो कहावे हे ॥ वक्ता के १४ गुण--

ज्ञाता बोल पोडश सिद्धांतके अरथ ठाने, औसरको जाने वाणी मधुर उच्चार हे । संशय निवारें गीतारथ उपयोगी वर, सत्यवादी आगम संकोच विस्तार हे ॥ त्यागे अपशब्द मन सभाको रिभावे प्रथ, अरथको ग्रहे पै न मान उर धारे हे । धरमी संतोपी दश चार गुण धारी कहे, अमीरिख वक्ता सोही, भवजल तारे हे । १४

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ चरिताः—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीरचिजी म० ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

बल प्रमाण --

बारे नर वृषभ वृषभ दश अश्व एक, बारे अश्वहुको बल, महिष महानने ।
पांचसे महिष गज एते गज सिंह एक, दोय सेंस सिंह अष्टापद बलवान में ॥
दश लाख बलि दूनो हरि दूनो चक्रवर्ती, क्रीड चक्रों देव क्रीड देव सुररान में ।
इंद्र जुं अनंत मिले, अंगुलि ना नमे जाकी, कइं अमीरिख एतां, बल भगवानमें ॥१५

समदृष्टि लक्षण --

जे ते जगमाहो जगवासी देहधारी जीव, ते ते सब अनादि करमतें मलीन है ।
निजकृत सुखदुःख, उदे रस देही तवे, जाने सब शुभाशुभ, करम आधीन है ॥
लाखे निज चेतन से भिन्न पुद्गल ऐसो, समदृष्टि निज गुण में प्रवीण है ।
कहे अमीरिख भलो, प्रगट्यो विवेक उर, संयोग वियोगमें न सुख नहीं दीन है ॥

मिथ्यादृष्टि लक्षण --

करम आधीन मूढ विकल अनादिहुसे, भयो न प्रकाश ज्ञान, आत्म परम को ।
जो जो पुद्गलके संयोग दिशा चेतनकी, सोही निज मानत न मानत भरम को ॥
ज्ञानादिक गुण से जो होय के विमुख रहे, जाणे पुद्गल रूप आत्म धरम को ।
ऐसो घट विभाव अज्ञान बसी रह्यो ताके, कहे अमीरिख वंश बड़े है करम को ॥

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ चरिताः—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीरचिजी म० ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

卐卐卐卐卐 रचयिताः—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीरकुपिजी म० 卐卐卐卐卐

बारा विध तप पुनि दर्शन चारित्र ज्ञान, क्रोध मान माया लोभ चारों परिहारी है ।
चरण-सित्तर मूल गुणको आराधे मुनि, कहे अमीरिख नित्य वंदना हमारी है ॥

करण-सित्तरी—

समिति गुपति शुद्ध पडिमा द्वादश विध, भावना सुभावे मुनि द्वादश प्रकारी है ।
पच्चीस प्रकार पडिलेहण करत नित्य, करे पंच इन्द्रिय स्ववश उपकारी है ॥
निरदोष आहार स्थानक वस्त्र पात्र लेत, द्रव्य क्षेत्रकाल भाव अभिग्रह चारी है ।
करण सित्तर इस धारत उत्तरगुण, कहे अमीरिख नित्य वंदना हमारी है ॥२२॥
देवच्यवन समय १० चिन्ह—

देवता चवन समे दश चिन्ह होय यह, प्रथम कुसुम कंठ माला कुमलावे है ।
लड्जा जाय तंज झांको दीसत शरीरहूँको, वस्त्र गंध हांय अंग आलस समावे है ॥
निद्रो को आगम पुनि, काम राग भग होय, उपजे शरीर कंफ, दृष्टि फिर जावे है ।
आरत उदासो होय कहे अमीरिख ऐसे, तीजा अंग मांडो ज्ञानी देव फरमावे है ॥
भरत क्षेत्र में १० बोल विच्छेद—

जम्बूस्वामी माल में विराड्या पीछे भरतमें, गये हैं विच्छेद दश बोल ये जहारी है ।
परम अवधि मनःपर्यव केवलज्ञान, चारित्र सूक्ष्म संपराय गुणभारी है ॥
यथाह्यात जंघा विद्या चारण लवधि मुनि, पडिमा द्वादशमी पुलाक अणगारी है
उपशम श्रेणि और तपक श्रेणि ये दोय, कहे अमीरिख जैन ग्रंथमें उच्चारि है ॥२४॥

卐卐卐卐卐 रचयिताः—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीरकुपिजी म० 卐卐卐卐卐

पंच परमेष्ठि के १०८ गुण —

अरिहंत देव वारे गुण ने विराजमान, अष्ट गुण सिद्ध कर्म रिपु किया छारी है ।
 आचारज प्रसु गुण छत्तीस महोन जान, उपाध्याय स्वामि गुण पच्चीस उचारी है ॥
 गुण सत्तावीस धारी साधु महा उपकारी, एक शत आठ पंच पद गुण सारी है ॥
 मन वच काया शुद्ध, जपिये त्रिकाल नाम, कहे अमीरिख नित्य वंदना हमारी है ॥

ज्ञान क्रिया के विना मुक्ति का अभाव —

केते स्तिर पैर लौं मुंडावे केश वारंवार केते पंच केशी नख जटाही वढावे है ।
 केते न्हे दिगंबर वसन तजि फिरे केते, नाना रंग भेष्य केते भसमी रमावे है ॥
 केते जोग आसन समाधि गद्दी बैठे केते पंचाग्नि चौरासी मांही देहको तपावे है ।
 अमीरिख करी क्योंना देखो कष्ट नाना भांत, जीव दया ज्ञान विना मोक्ष नहीं पावे है ।

संतोष-धन सहिमा —

पुण्य जोग पासे धन, रजत कनक खान, पोरस रमान वर रतन निधान है ।
 होरा नील विद्रुम गोमेध पुखराज पन्ना, माणिक लसन मोती, पारस पापाण है ॥
 भूमि गृह भूपण वसन यान भाजन आयुध सेना, त्रिया पशु गजादि महान है ।
 कहे अमीरिख जब आवत संतोष धन, तांके ढिग सब धन, धूलके समान है ॥

सुबोध

शतक

[२५]

श्री अद्वैत

काव्यसंग्रह

आयु अस्थिर—

पेरे मति मंद खूछी रखी क्यों जगत बीच, भौत तो सदा ही संग छाह जैसे रहे ॥
जाके घर भूत औ भुयंगको रहे है वास, सो तो काहूँ कालमें अचान दुःख सहे रहे ॥
सोचरे सयाने तेरो आयु दिन रात बटे, सरिता का पूरके समान नित बहे रहे ॥
कहे अमीरिख क्यों नचित होय देठो हिय, दया मूल परम धरम क्यों ना गहे रहे ॥

शिव साधनोपाय—

मानुष जनम शुभ पाय के सुलाय मत, औसर गमाय चित्त, फेर पछितावेगो ।
साधु जन संगत अनेक भांत धर तप, छोरिके कुपंथ एक ज्ञान पंथ आवेगो ॥
जीवदया सत्य गिरा अदत्त न लाजे कर्मों, धारिके शीयल मोह ममत मिटावेगो ।
ठावेगो सुक्रिया एतो, मनसे विराग धार, कहे अमीरिख तबे सोत्तपद पावेगो ॥
रत्नत्रय साधनोपदेश—

दूषण रहित गुण भूषण विराजे शुभ, देवपद राजे तांही शीसकी नसाय ले ।
आगमके ज्ञाता जगत्राता गुरुदाता मुख, सुनि उपदेश निज चित्तमें जमाय ले ॥
भरम विहीन शुभ परम धरम गही, जानिके मरम शिव, मारग समाय ले ।
जग हटवारै मांही, आय गुणवारै प्यारे, अमीरिख कहे यही रतन कमाय ले ॥

सुबोध

शतक

[२६]

शरचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीरिखपिजी म०

धर्मपदेश -

जो लौं यह देह तेरो बृद्ध नाहीं होय तोलौं तप जप उग्रम सुकिया उर धरि ले ।
जो लौं ना नामांति राग भले नारासीर तेरो, तो लौं जिनराज यश, भावसे उच्चरिले ।
जो लौं पंच इंद्रिय सुबल नहीं क्षीण होय, तो लौं नम सुकृत-रतन रूप भरि ले ।
कहे अमोरिख जो लौं कालरिपु धरे नाहीं, तो लौं तूं धरमको कमाई खूब करि ले ॥

भावनाग परीक्षा करण शिक्षा -

संयम सुहीरा नील नियम विद्रुम व्रत, नौमोत्र विराग ज्ञान मानिक हरखि ले ।
तप जप मोती ध्यान पद्मा नय लालनिया, अभय मुदान पुखराज ही निरखि ले ॥
कहे अमोरिख दुःख दारिद्र पलाय पैलो, समक्ति पदारथ अमोल पाम रखि ले ।
पूरण भरी है जिन धरम मंजूस यह, तेरे जीव जौहरी, जवाहिर परखि ले ॥३२॥

समय सरलता -

खुनहु सुजान प्यारे पायके समय सार, भूलि हूँ न पेयो कहुँ औसर विताइए ।
परम पुनीत जिनगत सुखधाम लही, हरख सहित ज्ञान नद में नहाइए ॥
सार जिनवाणी सुबदानी हितकारी मानो, जानी निजरूप पर संग बिसराइए ।
तिरनेको दाव नाव सफरी समान यह, कहे अमोरिख परे पुण्य जोग पाइए ॥३३॥

सं अमृत

सं अमृत

शान्त-विशारद प्रौढ कवि श्री अर्माश्रुपिजी म०

शुबोद
शान्तक

देह की अस्थिरता --

ऐरे हो सयाने प्रीति ठाने या शरीर साथ, जाने नहीं पथके बटाउ सम वासा है ।
पातकमें राचिके गमावत वृथा हां यह, रतन अमोल जैसा एक एक स्वासा है ॥
परम धरम यह तिग्ने के दाव शुभ, नीठ करो पायो ज्यों जुवारीका सा पासा है ।
कहे अमीरिख नर देहको भरोसो कहां, पानीमें पतासा तैसा तन का तमासा है ।

संसार की असारता --

आयु है अधिर जैसे अंजली के नीर सम, दौलत चपलता ज्यों दामिनि भलकमें ।
यौवन पतंग रंग, काया है नीकाम अति, वार नहीं लागे ओस बिंदु की ढलकमें ॥
सपन समान यह, संपदा पिछान मन, सरिता को पूर ढल जाय ज्यों पलक में ।
कहे अमीरिख जग मुख है असार धार, सुकृत सर्वैव यही सार है खलक में ॥

अभिमान त्यजनोपदेश --

ऐरे मूढ क्यों वखानत है बड़ाई बहु, जाहिर जहान जाने तेरो हाल सारो है ।
मनमें विचार तूं बहो है तात युक्र पुनि, माताको रुधिर दोष ताते तन धारो है ॥
रख्यो है उदर कढ्यो, बढ्यो मलमूत्र ही में, तोहमें अमित भरणो, अनित भंगारो है ।
कहे अमीरिख उतपत्ति ना विचारै नेक, देह की नीकाइ लखि, भयो मतवारो है ॥३६

श्री अमृत

काव्यसंग्रह

सुबोध

शतक

[२८]

प्रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीरिखिजी म०

शतक सुबोध
शतक
[२६]
श्री अमीर खान साहब की कविता:—शास्त्र-विशारद श्री कवि श्री अमीर खान साहब

तेरे मन मेरे तू भयो मलिन मंदमति, अति मतवारो तोही, रंचहू न चेत है ।
 भयो है कलंको अघचारी अनाचारी चौर, रांचिके करम भयो पातक निकेत है ॥
 सीख या हमारी हितधारी सुखकारी मान, अमीरिख कहे तोही भारी सुख देत है ।
 त्यागी अभिमान सुधरम आगेवान होहु, रतन अमोल क्यों वृथा ही खोय देत है ॥
 नूर ना रहेगो यो गरूर ना रहेगो मदपूर ना रहेगो देह धूरमें मिलायगो ।
 धन ना रहेगो ना रहेगो तन नीकापन, जोवन ये तेरो छिन एकमें विलायगो ।
 करले भलाई भाई छोड़ी छल छंद मंद, जन मिल देह तेरो, आगमें जलायगो ।
 कहे अमीरिख बल्यो जायगो अकेला तब, तेरे हितवारो कोउ रांग ना चलायगो ॥
 सुनरे सयाने तूं करत क्यों गरूर-एतो, वहे के अभिमानी हित वेण नहीं धारे है ।
 नीकापन यह तेरो द्वेषमें विनशी जाय, थिर ना रहेगा साज बाज ये तिहारे है ।
 देखतही तेरे कते धूर में भिले है जन, अजहूँ ना नेक अभिमान को उतारे है ॥
 कहे अमीरिख धारिके विनय मूल होहु, छोड़ी दे गरूर गुरुदेव यो उचारे है । ॥३६॥
 अंध क्यों भयो रे मतिमंद बरबंध ही में, एरे अभिमानी तोही केचो समझायो है ॥
 सद्गुरु तोही जिनवेण को सुनावे पिय, करमके भारी ना विवेक उर आयो है ॥
 धरम न भावत न गावत [१.१.१] गुण, दुष्कृत कमाय शिर पातक चढायो है ॥
 श्री तरसो पाई आ करते भलाई भाई, पीको अमीरिख उपदेश दरसायो है ॥४०॥

श्री अमृत
का अयसंग्रह

श्री अमीर खान साहब की कविता:—शास्त्र-विशारद श्री कवि श्री अमीर खान साहब

भी असून

काव्यसम्बद्ध

खलकमें आय ललचाओ है विषय सुख फूलो फिरे काल अय चित्तसे विस्कारके ।
वड़े बड़े राया वनछाया ज्यों विलाया ताको, लेह गयो काल जराभूतें छहारके
श्यास ही की श्यास फेर कौन विसवास करे, ले जावन साहो करे छार तन जारके ।
अमीरिख कहें आय, वसे थे जगतसाहो, अंतको सिधये महिमजन दिन चारके ॥

काम वश विष्णु -

कुजके बिहारी हितकारी ब्रज नारीन श्री, शोभा गुण रूपकी भीकाइये लुभाते हैं ।
शुद्धि बुद्धि हारी रास क्रीडा विसताओ, कोनो नृत्य देइतारी चित्त नेक ना लजाते हैं ।
कीनी मकभोरी घट फोति के भरोरि बाहू ठानी रस रीत रति प्रीत सरसाने है ।
कहें अमीरिख समरत्य मनमत्य हत्य, मन वच तन होय विवश विकाने है ॥४२

काम-वश ब्रह्मा --

ब्रह्मा तप धारो फल फूलके आहारी बैठे आसन लगाय धरा योग विधि टाने है ।
रूप गुण रमी डरबसी डर बसी ताकी, सुख मानि हारी सवे सुध विसरते हैं ।
वहके विपरीत रति सानी प्रीत ठानी तिन, करी गुण हानि सोह पासमें बंधाते हैं ।
कहें अमीरिख समरत्य मनमत्य हत्य, मन वच तन होय विवश विकाने है ॥४३

काम-वश महेश --

शंभु शिर जटा को बढाय तप ठाय तन, असमी रमाय कामवश अधिकाने हैं ।
निश दिन नसेमें विहाल उनसत्त वढेके, गिरिजा के भोगमें मगन सुख माने है ॥

सुबोध
शतक

[३०]

चयिता:—शास्त्र-विशारद प्राढ काव श्री अमीत्रुषिजी म०

वसन विहीन नाच नाचिके रिक्ताय तिन्हें, सबे भांति ताके रहे अधिक उरफाने हे ।
कहे अमीरिख समरत्थ मनगत्थ हत्थ, मन वच तन होय विवरा विकाने हे ॥४४॥
अंध के २३ प्रकार--

प्रथम लोचन अंध, क्रोध मान माया अंध लोभ अंध भय अंध, रागद्वेष अंध हे ।
मोह अंध धन अंध, जोवन के जोर अंध, मद अंध चिंता अंध, अंध मतिमंद हे ॥
भूख अंध प्यास अंध इज्जत करज अंध, विद्या के गदुर अंध और जन्मंध हे ।
रात अंध दिन अंध, कहे अमीरिख तामें, सबहूसे विषय विकार अंध फंद हे ॥४५
पूर्ण श्रेष्ठ विद्या का २७ जने को अभाव--

कामी क्रोधी लोभी अरु दरिद्री प्रमादी मूढ, दुःखी पराधीन पक्षपाती अभिमानीको
मोह मदवंत व्यग्र चंचल कृपण पुनि, रहे सोच सकूची कुभांगी औ अज्ञानी को ॥
अनाचारी आलसी अभागी अनचाही नर निंदक अनोसरी अधीर अकुलानीको ।
अमीरिख चित्त सुविचारी या उचारों वात, पूरी बरविद्या नहीं आवे इन प्राणीको ॥
१६ रत्नों के नाम--

गोमंथ रतन अक्र रतन फटिक वर, लोहितान्न मरकत, जानो सुविचार के ।
मसारग रत्न भुज मोचक सुदंड नील चंदन गैरिक हंस गरभ उचार के ॥
पुलक रतन नाम, सोगंधिक जानो पुनि चंद्रप्रभ वेडूरथ, मौल जु अपार के ।
जलकांत सोलमो, सुनाम कहे अमीरिख कहे जिन रतन ये षोडश प्रकार के ॥४७

श्री अमृत
काव्यसंग्रह

आयुध के ३६ प्रकार--

चक्र शूल धनु वज्र. फरसु वान वान तुर्क गह छुरा औ कटार शैल धार ये ।
खेटक संगह गदा, तोमर भृशुण्डी पास, जम्बू वाक खंजर अंकुश लट्टु सार ये ॥
जंत्र हल सुसल खडग वर बंदूक भाल जंजाल जरह गुप्ति गुरज उदार ये ।
दाओ मिसतोल पटा नाम कहे अमीरिख, आयुध पिछानो खटतीस जो प्रकार ये ॥

संसारी जीव अवस्था --

कवहुक जीव यह पायो गज देह स्थूल, कवहुक लघुतन, कथनो कहायो हे ।
कवहुक राय होय, शीसपे धरायो छत्र, कवहुंक रंक होय भीख मांगी खायो हे ॥
कवहुक देव कभौ नरक निगोद भव कवहु, विकल तन लेई दुःख पायो हे ।
कहे अमीरिख ऊंच नीच भव धारी जीव, कालही अनंत जग माही यों गमायो हे ॥

चिदानंद की अनभिज्ञता --

ऐ रे चिदानंद तू अनादिते अरूपी गुण, अनंत र ऋद्धि सिद्ध के समाना हे ।
राच्यो जड संग सरवंग भौ आधीन सब, निज शुद्धि भूलि गयो, मूर्ख दिवाना हे
मोह में विकल जग वस्तु ए हमारी सब, समतमें बंध्यो ए सबे कत अयाना हे ।
कहे अमीरिख यह तेरा ही आयानपना, कभौ तेने निज पर भेद ना पिछाना हे ॥

सुबोध
शतक

सत्य वस्तु-कथन--

सांचे सिद्ध सोही जो न उपजे संसार माही, सोही सांची रिद्धि कभौ खातहू न खूटे
साचो हें पंडित सोही, सभाको रिभावे मन, सांचो शूर करमों के सामो जाय जुटे
अमीरिख साचो सोही कंचन कसौटी चढे, साचो वज्र सोही वन घावतें न फूटे
साचो हें धरम सोही होय जीव दया मूल, साची प्रीति सोहो कांहू भांति नहीं तूटे

धूर्त के लक्षण--

हियेमें कपट और सुखतें मधुर लवे, भूलिहू के ताको विसवास नहीं कीजिये ।
जहरको कुंभ तापै अमृत दांकन वर, अहि औ मशूर को दृष्टांत तसु दीजिये ॥
वक्वत् ध्यान राखे, मंजार समान दाव, एसो ढंग देखो चित्त, नेक ना पतीजिये ।
अमीरिख कहे ऐसो कपटी धूरत होय, भूलिहू के ताको कभौ नाम नहीं लीजिये ।

शुद्ध ज्ञान चर्चा के गुण--

सुगुणी से चरचा करत ज्ञानवृद्धि होय, दीपक से दीप मिल्या ज्योति बढ जात है ।
भगु विप्र नंदनसे, संजतीसे ज्ञत्रीराज टाल्यो केशो स्वामी परदेशी को सिध्यात है
केशी मुनि गौतम की चर्चा भई है भली, मनका गंदेह टल्या सुजस विख्यात है ।
थावरचा पुत्रसे चरचा शुक्रदेव करी, कहे अमीरिख जैन आगम में बात है । ५६

बोली से गुण दोष--

बोली से आइ और जगमें सुजस होय, बोली से सकलजन, मित्र हो रहत है ।
बोली से अनेक विध भोजन मधुर मिले, बोली से सुने है गाली मार भी सहत है ।
बोली से सुप्यार और बोली से पैजार त्यार, बोली से कलंश कारागृह भो लहत है ।
कहे अमीरिख नर बोली है रतन सार, सुगुण विवेकी बोल तोल के कहत है ॥५७

पंचेंद्रिय-विषयासक्त को शिक्षा--

ऊंचे २ धाम नीके, चित्र अभिराम जाली भरोखा गवांच माने सुख भरपूर है ।
नाटक अनेक विध, अंतर फुलेल तेल, शुद्ध गंधोदक भले, भोजन मयूर है ॥
सेज सुख आसन आभूषण वसन वर, नवलो सुन्दर आय, उभी सो दजूर है ।
अमीरिख एते सुख, पायके मुलाय मत, धाम नहीं कांवे आगे संकट जरूर है ॥

सार तत्व कथन

शिवसुख साधन प्रधान जित बेण जान, करिके पिछान ऐ सुजान धारो चित्त ।
तारक है देव सोही, जामें नहीं दोष कोई, सोही गुरु काम वाम धाम चाह त्यागे वित्त ।
सत्य सो धरम जहा, दया पट् काय हूकी, तत्त्व ये प्रधान की श्रद्धान मन धारो भित्त ।
तजिके प्रमाद शिव साधन करीजे ऐसे अमीरिख सार उपदेश यो प्रकाश्यो हित ॥

श्री अमृत

काव्यसमग्र

सुबोध

रतक

[३५]

श्री अमृतपिजी म०

चेतन को चेतावनी—

महा मोह नींदमें अनादिकाल चिदःनंद, सूतो है निःशंक निज सुधि सबही विसार ।
विषय कपाय रागद्वेष औ प्रमाद वश, करम कमाय भव संकट सहे अपार ॥
घटमें अनंत रिद्ध राजे पै लुकाय रही परख न कीनी कभौ, ज्ञान नैन से निहार ।
कहे अमीरिख जाग त्याग मोह नींद अब, देख निजरूपको निवारिके मिथ्यांधकार ॥

संसार कारणगृह—

कैदी ज्यों संसारी लोक, बंदीखानो जानो गृह, त्रिया पगबेड़ी दृढ मोह के किवार है
पैरायत परिवार जावा देवे नहीं वार. आलस प्रमाद नींद मिथ्या अंधकार है ॥
मोह की दोवार गिरी लाधो शिवपंथ अब्र, भांगो चलो कहे ज्ञानी वेण हितकार है
कहे अमीरिख अवसर नहीं वारंवार, मनुष्य जन्म खुलो मोक्षपुरो द्वार है ॥६१॥

काल समर्थता—

योगके अभ्यासी जप ध्यान औ समाधि साधो, निरुपाधिकाल से भयो न कोई पंथमें
निज मुनि इंद्र सुरवृन्द धनवंत भूप, कोविद कुलीन मर, खूदे सब अंत में ॥
यंत्र मंत्र औपध उपाय कियो देहधारी, अमर भयो सो नाही सुन्यो को सिद्धांतमें ।
कहे अमीरिख कहनायत खरो है जग, दूटी की न बूटी किते देखी सुनो ग्रंथमें ॥

श्री अमृत

व्याख्यान

सुबोध

शतक

[३६]

स्त्री-दुःख —

वीक्ष्या भांगर और अनोठ मुंदडी वीदी, कंकण भूमर भुज-बंधही मंगायो हे ।
चंद्रहार तेडयो लाव, नथ चूप दांतनकू. औगन्या करन फूल विंदली सुहायो हे ॥
शीशफूल टीकी लाव, रखडो जतन जडी. साथाकू सेमद हीर, चीर मन भायो हे ।
कज्जल गुरसो भिस्सी, एतो तो मंगाय लीनो, फेरहु कहत पिय लंगर न लायो हे ॥७०॥
उखल मूसल लाव, हांडी कुंडो चाटु लाव, चलनी ने मूप थाली, बुहारी मंगई हे ।
राली परयंक लाव. सोड और सुई लाव, छोटे २ कटारे, पंडेरी मन भाई हे ।
रसोई करन वैट्टं. चून दाल घृत तैल लूण भिरी गोल खांड झाछी लाव राई हे ।
एतो तो मंगायो कहे, हांग नहीं लाई पिय, अमीरिख कहे नारी ऐसी दुःखदाई हे ॥७१॥

काम-जय-गुण —

केते नर महाउन्नमत गज जोते पुनि, महावलवंत गही केसरी विहारे हे ।
लाखन सुभट साथ, युद्ध करिवेको धीर केते महा ओठ गढ कोट तोरो डारे हे ॥
केते लोह शंखलादि तोरे गिर ढाहै ऐसे, औरहू अनेक वीरताई प्रण धारे हे ।
कहे अमीरिख ऐसे शूरको हराये काम, ऐसे रिपुराज ताको साधु ही पछारे हे ॥७२॥

काम-रिपु-निर्दयता —

काम बलवंत लेई हाथ पंचवाण तोप, वश करि लीने शूरवीर सभी मारिके ।

सुबोध

शतक

५५५५५

रचयिता:—शास्त्र-विशारद श्रेष्ठ कवि श्री अमीरिखपिजी म०

[३६]

५५५५५५५

श्री अमृत

काव्यमंजरी

५५५५५५५

रचयिता:—शास्त्र-विशारद श्रेष्ठ कवि श्री अमीरिखपिजी म०

५५५५५५५

श्री अमृत

काव्यसंग्रह

इंद्र देव खेचर नरेंद्र नर पशु आदि, सबहीको काने निजदास मान पारिके ॥
लाज बल साहस गमाय के दराय गुण, शुद्धि बुद्धि छीनके आधीन किये नारीके ।
कहे अमोरिख मुनिराज हो बचे हैं यातें, धारो है शोयल काम-वैरीको पछारिके ॥७३॥

स्त्री परीपह जीतन गुण—

रूप चतुराई से लुभाय लेत कामीमन, साज वस्त्र भूषण सुगंध सुख मानि धान ।
हास औ विलास हाव भाव गीत गान आदि, करिके कटाक्ष मन, विधे मारी नैन बाण ॥
काम वश होय सुधी लाजको विहाय चली, आई छलिवेको जहां ठाडे मुनि धरी ध्यान
कहे अमीरिख मनके सहु चले न नेक, जाने मुनि निज पुत्री मात भगिनी समान ॥

एक राजू का मान—

तीन क्रीड मन लख एकयासी सोले हजार, नवसे सित्तर मन ताको एक भार है ।
ऐसी संस भार लोह, वज्रमयी गोलो करी, पेला देवलोक से गिरावे सुविचार है ॥
मारगमें वेता पट मास दिन पर घडी, पल माहो आवे मध्य खंड के मन्मार है ।
पूगीफल आमला समान रहे शेष कहे, अमीरिख एक राज-लोक को विचार है ॥

जिन-जननी के १४ स्वप्न—

देख्यो ऐरापति वर वृषभ शार्दूलसिंह, कमला कुसुम दाम पूरण सुचंद को ।
सहस्र किरण भातु, ध्वजा सुकलश मान, सरोवर पद्म देख्यो खीर के समुद्रको ॥

सुबोध

शतक

श्री अमृत-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीरिखपिजी म०

शुभरचयिताः—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीरखण्डिजी म०

देवको विमान नाना भाँतिकी स्तन राशि, पावक की झाल घृत सिंचित अमंदकी ।
जितराज माय यह चवदे स्वप्न पाय, कहे अमीरिख पामी, चित्तमें आनन्दकी ॥
संगम-व्रत दुष्करता--

सहज नहीं है अस्थिधारा पे गमन पुनि, ल्योंही ना सहज पावकमें तन दाहिवो ।
अंगुलिपै सेरु धरी राखवो सहज नहीं, भुजानी ते स्वयंभुरमण सिंधु आहिवो ॥
देह सुकुमार अति संगम कठिन जावजीव विसराम पे न दो दिनको चाहिवो ॥
यातें अमीरिख सुविचार करी लीजे व्रत, सहज नहीं है मुनि मारग निवाहिवो ।
चाववो कठिन मरण दांत हूँ ते लोहजव, कठिन प्रवाह गंग सामे उर धाहिवो ।
कठिन पवन धोट वांधि के उचावो शीश, कठिन सुमेरु तौल करिके बताहिवो ॥
ल्योंही है कठिन महाव्रत पद औवनमे, परीसे सहन करो, चित्त ना चलाहिवो ।
यातें अमीरिख सुविचार करो लीजे व्रत, सहज नहीं है मुनि-मारग निवाहिवो ॥
व्रत व्यसन निषेध--

जुवा का व्यसन जग कुजस करन सुख संपत्ति हरन शिर पातक चढावे है ।
कलह दारद्रको निकंत दुःख हेत भय आपदा को खेत शुभ क्रिया को नसावे है ॥
स्वजन कुटुंब नहीं प्रीति औ प्रतीत करे, भौति ना करसकी अनीति हो सुहावे है ।
कहे अमीरिख भलो सीख या हमारी मान, तजिदं जुवाका खेल, जातें सुख पावे है ॥

शुभरचयिताः—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीरखण्डिजी म०

श्री अमृत
काव्यसंग्रह

श्री अश्रुत

काव्यसंग्रह

मांस-निषेध—

मांसहार्दके काज जीव, जंगम विनासे नीच, रस वश होय नेक दया न धरत है ।
कृमि-कुल-राशि कृति नाम सपरस गंध परम अशुचि छिये शुद्धता हरत है ॥
माखी भिनकारे उर देखतही आवे विन, अंध अकुलीन नर ताको आवरत है ।
कहे अमोरिख दुःखमूल लखी त्यागी देहु, आमिष आहारी मरी, नरक परत है ॥ ८० ॥

मदिरा-निषेध—

वासित दुर्गंध रहे दहे कीट वृंद आते, परम अशुचि प्रिय लागत अजानको ।
शुद्धि बुद्धि खोयके विकल भूमिपात करे, वसन विहिन वहे तजे है कुल कानको ॥
वहे मुख लाल माखी वृंदना वचन सुधी, माता बेन देखिके विसारी देत भानको ।
कहे अमोरिख धिक् धिक् है जनम तामु, ऐसी दुःख जानिके तजोरे मद्यपानको ॥ ८१ ॥

वेश्या-निषेध—

परधन ठगिबेको करत कला अनेक, हाव भाव दाखे मोठे वचन उच्चारै है ।
पतंगके रंग सम, जनवे अनित्य प्रीति, तन मन धन लूटी करत असार है ।
नित मुख लव नित, चाखत अभक्ष्य ऐसी, कुटिला कुपात्र महा अशुचि आगार है ।
कहे अमोरिख सबै चातुरी भूले है करे, पातुरी को संग ताको, कोटिन धिक्कार है ॥

सुबोध

शतक

[४२]

शुद्धि बुद्धि खोयके विकल भूमिपात करे, वसन विहिन वहे तजे है कुल कानको ॥
वहे मुख लाल माखी वृंदना वचन सुधी, माता बेन देखिके विसारी देत भानको ।
कहे अमोरिख धिक् धिक् है जनम तामु, ऐसी दुःख जानिके तजोरे मद्यपानको ॥ ८१ ॥

शुद्धि बुद्धि खोयके विकल भूमिपात करे, वसन विहिन वहे तजे है कुल कानको ॥
वहे मुख लाल माखी वृंदना वचन सुधी, माता बेन देखिके विसारी देत भानको ।
कहे अमोरिख धिक् धिक् है जनम तामु, ऐसी दुःख जानिके तजोरे मद्यपानको ॥ ८१ ॥

शिकार-निषेध—

पीठ देह भागत रहत मुख दीन सदा, दांत दृण लेत कमौ होंत ना गरम है।
 डोले निराधार इत उत, छिपि राखे प्राण, गरोव अजाण सिर संकट परम है॥
 ऐसे वतचारित्तपै गजव गुजारिवो सु, कहे अमोरिख यह निन्दित करम है।
 मृतक समान वत फिरत अनाथ सदा, दीन पशु मारिवो न जत्रोंको धरम है॥२३॥
 वेद औ पुराण वाची, सनिके विवाह करे, ईश्वर रचो है सृष्टि पन्न दृढ धारे है।
 प्रभु के वनाये पशु पत्नी आदि जीव सब, ताको मारी डारे हिय न्याय ना विचारे है।
 कुम्भकार पात्र कोउ फोरे तो दिरावे दंड, आप सजावार भये ताको ना चिहारे है।
 कहे अमारिख कम न्यायतैं विरुद्ध देखो जत्री पद पायके गरोव जीव मारे है॥

चोरी निषेध—

चोर चित्त चिंत चौक बसी ही रहत भीत परधन देखि के हरण चित्त चहे है।
 मालधनी देखी होय कुपित पीटत ग्रही. मारे शस्त्र वाव वध, बंध दुःख लहे है॥
 नृप कोप तोपसे आरोंप के हरे है प्राण, मरिकं सीधवे यम लोक दुःख सहे है।
 कहे अमोरिख दुःखदाता है व्यसत यातैं, समझि विवेको त्यागी ज्ञान उर गहे है॥

परस्त्री गमन निषेध—

परत्रिय संग किये हारे कुल कान दाम, नाम धाम धरम आचार दे विसार के।

श्री अमृत

दाय्यसग्रह

सुबोध
शतक

[४३]

रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीचंद्रपिजी म०

लोकमें कुजस नहीं करे परतीत कोड, प्रजापाल दंडे औ विटंबे मान पारि के ॥
पातक है भारी दुःखकारी भवहारी नर, कुगति सीधोवे वश होय परनारि के ।
यातें अमीरिख धारे, शियल विशुद्ध चित्त, तजो कुव्यसन हित-साख उर धारिके ॥

एक २ व्यसनतें नष्ट भये —

जूवा खेली पांडवा गमायों राज साज सब, मांस भखी वक राय नरक सिधायो है
मदिरा प्रसंग सब जादव को नाश भयो, बेरया संग घम्मिल्ल कुमार नेह गयो है ॥
आखिटतें ब्रह्मदत्त, सत्यघोष ले अदत्त, परदारा संग दशकंध दुःख पायो है ।
कहे अमीरिख घने कुगति परे हैं यातें, व्यसन तजत उपदेश दरसायो है ॥८७॥

अनित्य भावना —

मात पितो नागी सुत, भ्रात परिवार देह, सेना गढ़ कोट पूर, भूमिगत माया है ।
भरित घडित हेम, मानिक जडित पट, भूषण अनेक विधि, विधतें निपाया है ॥
जे जे दृष्ट कृत्रिम सौ, अवश्य विनसि जाय अस्थिर अनित्य जिन-वेण दरसाया है
कहे अमीरिख यों विचार के भरत तजी, रिद्ध लहां केवल पद पाया है ॥८८॥

अशरण भावना —

अशुभ असाता उदे, आवे तव चेतनके, भिन्न परिवार कोऊ, होत ना सहाई है ।
सब देहधारी वश कालके विद्याल भये, तिहु लोक माही याको, फिरत दुहाई है ॥

श्री अमृत

भाव्यसंग्रह

सुबोध

शतक

[४४]

रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीरिखजी म०

शरण सहाई जिनराजको धरम एक, त्यागिके भरस उर धारो सुखदाई है ।
कहे अमीरिख भाई भावना अनाथी तप संश्रम कसाई भव भ्रमण मिटाई है ॥८६॥

संसार-भावना —

चानं गति साहे जीव, भय्यो है अनादि काल, लही उच नीच भव, नाना रूप धारे है ।
करम आधीन दीन संकट सहे है त्याही, जनम मरण जरा व्याधि दुःख न्यारे है ॥
पुद्गल परिवरतन जू अन्नं क्रिये, एक जिनमत भव वास्तं निकारे है ।
या विध विचार पाये शालिभद्र देवगति, अमीरिख यत्रा मुनि मोक्षमं पयारे है ॥६०॥

एकत्व-भावना —

आवे जीव एकलो सिधावे फिर एकलोही, भ्रमे जगमाही न सहाई कोउ और है ।
संपदा के भागा परिवार जीव सहे आप, सुख दुःख शुभाशुभ संचितके जोर है ।
दुष्कृत प्रताप आप कष्ट कुगतिके सहे, सुकृत कमाय करे उरश को दौर है ।
कहे अमीरिख तसि, -राय यों विचारी चित्त, करम हटाथ रिख पाये शिव डोर है ॥६१॥

अन्यत्व-भावना —

चिदात्तन्द भिन्न पुद्गलसे स्वरूप तेरो, अमल अमित-ज्योति भानु के समान है ।
अनंत चतुष्टय विराजे घटमाही यातें, सिद्ध सम आतम अपार अद्विवान है ॥
भरमते भूलिके स्वरूप जड संग राचो, करम कमाय सहे संकट समान है ।
यातें मृगापुत्र निजरूप में मगन भये, कहे अमीरिख पद, पाये निरवाण है ॥६२॥

श्री अमृत

दाअ्यसंग्रह

सुबोध

शतक

[४५]

*** चयिता:—शास्त्र-वशारद प्रौढ कवि श्री अमीरिखपिजी म० ***

*** चयिता:—शास्त्र-वशारद प्रौढ कवि श्री अमीरिखपिजी म० ***

अशुचि-भावना --

परम अशुचि-गेह देह है अन्तित्य सदा, मल मूत्र व्याधि निंद्य भरित विकार है ।
 पूतिगंध मर्त्य कलेवर सप्त धातुसय, कृमि कीट राशि यामें, सबे सब द्वार है ।
 अधिक असार नाम लेत उपजावे विन, तप जप क्रिया शिव साधन ही सार है ।
 अमीरख सन्तकुमार यों स्वभाव लखीं, त्यागी ऋद्धि धारी तप पापे भवपार है ।

आश्रय भावना --

शिवमुख घायक दायक भव भ्रमण को, संसार समुद्र में डुवावनकू घाट है ।
 आपद निशानी दुःखखाणो गुणहानि करे, कुगति को पथ शिव स्वर्गको कपाट है ।
 याते हित जानो सार संवर पिछानो ज्ञानी, आश्रय को दाटी तब पापें शिववाट है ।
 कहे अमीरख भाई भावना समुद्रपाल, करम कलंक मेटी, पाये सुखठाट है ॥६४

संवर भावना --

संवर की क्रिया परसोत्तम दखानी जिन, संवर मारा दुःख दोषको हरन है ।
 वारण करम दल, ठारन निजातम का, जारन विपद सुद मंगल करन है ॥
 भव जल तरण हरण अथ पुंज यहो सदाई उर सुबुद्धि भरन है ।
 कहे अमीरख दरिंकीशी ऋपिराय धन्य, संवर आराधो मेठ्या जनन मरन है ॥

काव्यसूत्र

निजरा भावना--

निजरा परम प्रधान जिनशासन में, शिवमुख दाता यही जिनजी बखानी है ।
जन्म मरण गढ़ औपथी अनूप अघपंक नीर भव तरु छेदन कृपानी है ॥
करम हटावन कटावन जगत बंध, दुःख की घटावन आनन्द की निशानी है ।
कहे अमीरिख अरजुनरिख धारी तप निजरा करी आप भये निरवानी है ॥६६

लोककार भावना--

लोककार हिये में विचारो शिवचाहो जन, नीचे है नरक सात, दश भौनवासी है ।
मध्यलोक व्यंतर मनुज्य तिरयंच पुनि, ज्योतिषी असंख्य द्योप सागर प्रकाशी है ॥
ऊरध कल्प अहमिंद्र अनुतर देव, सिद्ध शिला उपे बसे, सिद्ध अविनाशी है ।
कहे अमीरिख गों सेलकराय रिसि ध्याय, भये शिववासी सबकाटी भवफांसी है ॥

बोधि बीज भावना--

पामिबो मुलभ जग, पुद्गल जनित्र सुख, दुरलभ एक बोधिबीज समकित है ।
बाके विन क्रिया सब, अक विन शून्य सम, छार पर लोपन ज्यों जानिये अहित है
ये ही भव वासते निकासी शिव-वासी करे, हरे दुःख दोष भरे कोश निज विन है
भाई शुद्ध भावना यों, ऋपभजिनंद नंद, पाये अमीरिख शिव संपत्ति अमित है ॥

श्री अमृत
काव्यसंग्रह

धर्म भावना--

जग में अनेक भांति, धरम बलाने जन, जाने ना धरम कौन, सत्यमत सार है ।
जामें जीवदया मूल, सोही अनुभूल लखि, धारो निज हृदे, हृद निरधार है ॥
याके विन भय्यो भव चक्र में अनादि जीव, यही शिवसुर सुख संपति दातार है ।
कहे अमीरिख मरुदेवीजी धरमरुचि भावना आराधो शुद्ध पाये भवपार है ॥६६

समुच्चय १२ भावना--

जग है अनित्य नहीं, शरण संसार माही, भ्रमत अकैलो जीव, जड दोल भिन्न है ।
परम अशुचि लखी, देह तजी आश्रवको, संवर निर्जोरा हो तें, होय भव खिन्न है ॥
चित्तमें विचारी लोकाकार बोधबीज सार, सम्यक् धरम उर, धारो निश दिन है ।
कहे अमीरिख वारे भावना यों भाव उर, धारे जिनवेण एन, ताको धन धन है ॥

तीन मनोरथ--

कव दुःख दाता यह आरत तजूं गो दूर, कव धन धामतेही ममत मिटाऊं गो ।
कव निप तुल्य जानी, त्यागूं गो विपयराग, कव मैं कपाय जीती ज्ञान उर लाऊं गो ।
कवहो प्रमाद मद छोरिके करूं गो धर्म, स्थिर परिणाम करी, भावना सो भाऊं गो ।
कहे अमीरिख मनोरथ यों चितारे भवि, धन्य वह दिन घड़ी, सफल कहाऊं गो ॥

सुबोध
शतक

[४८]

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीशारदा-प्रौढ कवि श्री अमीरुपिजी म० ॥

रचयिता:—शास्त्र-विशारद ग्रीढ कवि श्री अमीरखुबिजी म०

कव दुःख-मोह त्यागी जगको सेनेह उर, धारिके विरग जीतो सेना काम आरि की ॥
 महात्रत धारी पाप आश्रव विदारी कव, होय जितेंद्रिय रोक्कं गति मत्त हरि की ॥
 कवहो करूंगो तप सहू परीमह दल, अनुमो अभ्यासी मेढुं भोति भव दरो की ॥
 कहे अमीरख कव संयमो वनूंगो शुद्ध, चिंते भवि धन्य वलिहारी वह वरी की ॥
 कव यह देउको अपायन अनित्य लखी सब भांति यातें मोह ममत उतारूंगो ॥
 होयके निःशल्य चारों आहार तजूंगो उर, उज्वल समाधि सात्री, पातक विदारूंगो ॥
 थिर परिणाम करी ध्याऊंगो मरूप निज, शत्रु भिन्न दोड एक, दृष्टिं निहारूंगो ॥
 कव वह दिन घरो आवेगी हमारो धन्य, कहे अमीरख निज आतम सुधारूंगो ॥
 मोक्ष अभिलाषो समदृष्टि जो विशुद्ध चित्त, चिंतें मनोरथ भेटी मत्तकी मलिनता ॥
 शक्ति अनुसार करे क्रिया रोकें आश्रवको, तजी दोष गले निजगुणमें प्रवीणता ॥
 पंकज समान जग भोगतें अलिप्त रहं, तवै महालाभ होय, धरम को वीनता ॥
 कहे अमीरख काज ताके होय भवियामें, शिव-वास पामे सबै कर्म करी चीणता ॥

गुरु-प्रशस्ति--

स्वादवाद मत में प्रसिद्ध जैन चक्री सम. भये रिख लवजी सुमग प्रगटायो हे ॥
 तांके शिष्य सोमजी ता शिष्य रिख कानजी के, नाम संप्रदायमें सुजस सरसायो हे ॥
 तांके अनुगामी घने कोविद भये हैं पूज्य, सुखारिख स्वामो मत पाखंड हटायो हे ॥
 तांके पद कंजको मिलिंद अमीरख आज, भव्य प्रतिवोधको ग्रंथ यो वनायो हे ॥

श्री अमृत
भाष्यसंग्रह.

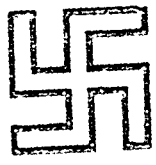
रचयिता:—शास्त्र-विशारद ग्रीढ कवि श्री अमीरखुबिजी म०

रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीरखण्डिजी म०

नय मुज ध्यान पक्ष, वर्द्धमान संवत्में (२४२७) मालव सौभाग्यपूर दीनो प्रतिबोधयो
 आश्रित पूरण शशी, ग्रंथके लक्ष्य उर. शांतता प्रगट भयो पाप ताप रोध यो ॥
 किंचित जिनाज्ञाके विरुद्ध पद चरणको, न्यूनाधिक जानो तार्ही गुणी लीजो शोधयो
 कहे अमीरख गुरुदेव की कृपातें आज, पूरण कियो हे ग्रन्थ शतकसुबोध यो । १०६

पद्धरी छन्द - -

इक शत पट् मान कवित्त नेक, दोधक चतु पद्धरी छन्द एकः।
 इह वध सुबोध कीनो प्रकाश, पूरण पीथूप मत्त सकल आश ॥१०७॥
 ॥ इति सुबोध शतक सम्पूर्ण ॥
 ॥ शुभम् ।



रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीरखण्डिजी म०

विविध-वीथ बांबनी

॥ सोरठा ॥ शासतपति जिनघोर, धीर धार बंदो सदा ॥

मेढ. सकल भव-पीर, दीजे अविचल संपदा ॥ १ ॥

सकल पदारथ जान, तीन लोक त्रिकाल के ॥

अविचल केवल भान, उदय करम-तम टालिके ॥ २ ॥

प्रगट करी जगमाथ, जिनवाणा मन भावना ॥

तिनको हृदय वसाय, कहूं वीथ हित बावनी ॥ ३ ॥

सुनो भविक हित चैन, नैन ज्ञानके खोलिके ॥

पावंगे चित्त चैन, बोल हृदय में तालि के ॥ ४ ॥

विविध बांध इह माय, समथ पाय वणन करे ॥

अमृत सम सुखदाय, सुनत हो उर आनन्द भरे ॥ ५ ॥

॥ सर्वथा तेवीसा ॥

॥ ॐ ॥ ॐ शुभ अक्षर, सार सुजाण. पिछान गुरुगम ज्ञान लही है ।

पूर्व आगम को यही सार सु दूसरो या सम मन्त्र नहीं है ॥

गर्भित है पद पच अनुपम, सिद्ध त्रिलोक स्वरूप यही है ।

अमृत कारज सिद्ध करे सब, या विध श्रोगुरुदेव कही है ॥ १ ॥

- ॥न०॥ निशि वासर स्नेह धरो कर सेव, नहीं जगमें गुरुसा उपकारी ।
 सब भ्रम मिटाय हटाय अज्ञान, जिनागम वेण दिये हितकारी ॥
 एर काम कपाय को लाय बुझाय, दियो शिव मारग साधन भारी ।
 मत सत्य असत्य विवेक भयो, रिख अमृत वा गुरु की बलिहारी ॥ २ ॥
- ॥म०॥ मत धार अनुपम शीख भवी, गुरुदेव दया करिके समस्तावे ।
 देव गुरु शुद्ध धर्म पिछान, सुनो जिन वैन सदा हित भावे ॥
 छोड़ कुंथ प्रमाद विषय मत, ज्यों उभये भव सौख्य दिखावे ।
 ईख समान ये सौख्य अमोरिख, मान भवा भव जाल मिटावे ॥ ३ ॥
- ॥सि०॥ सिद्ध स्वरूप सुचेतन है पर पुद्गल संग मलिन भयो है ।
 कर्म कमाय भग्यो जगम बहु देह धरो सुख दुःख लयो है ॥
 मात पिता सुत भ्रात लिया निज जानी ममत्त्वमं राचि रयो है ।
 या विध काल अनंत अमारिख ज्ञान विहान जु बोति गयो है ॥ ४ ॥
- ॥ध०॥ धंध तजो सजि साज भलो भजिये भगवंत सदा सुखदाई ।
 जीवदया नित धार हिये सत वैन मनोहर बोल सदाई
 धूलि समान गिनो पर माल लखो लियेन धिया अरु माई ।
 त्यागो ममत्व परिग्रह मोह अमारिख धर्म प्रधान है भाई ॥ ५ ॥

॥अ॥ अपने सम जाए शु जीव सभी सुख चाह करे दुःख से डरते ।
जिम कंटक आय चुभे तनके अत व्याकुल हो दुःखको भरते ॥
जिम मानि सुजान गरीब के प्राण प्रवीण अनीति नहीं करते ।
करुणामय धर्म अमीरिख धारत सो भव सागर से तरते ॥ ६ ॥

॥आ॥ आयु असार विचार हिए थिर अंजुलांको नहीं रेवत पानी ।
देह उदारिक नाश हुवे निज मानि समत्व करे अभिमानी ॥
काल बली शिर छाया रह्यो थित पूरि भये लहि जावत तानी ।
सुकृत साथ आराध सुधर्म अमीरिख मर्म पिछान मुजानी ॥ ७ ॥

॥इ०॥ इंद्र नरेंद्र समे रवि चंद्र करे नरदेव मसेव बने हे ।
केवल ज्ञान रु दर्शन तेँ सब लोक अलोक के भाव भने हे ॥
देत बताय सुमारगको अवलंबी भवो भय भीत हुने हे ।
नाथ अनाथन के जिनदेव अमीरिख सेवत काज बने हे ॥ ८ ॥

॥ई०॥ इष्ट अनिष्ट को जोग बने तब हर्ष विषाद नहीं चित्त आने ।
स्व पर रूप को बोध जगेशो पंच द्रव्य से भिन्न निजातम जाने ॥
धाय समान कुटुम्ब को पालत कर्म के बन्धन को डर माने ।
सम्यक् दृष्टि करे शिव-साधन अमृत यों जिन वैत बखाने ॥ ९ ॥

० अमृत

कः असंग्रह

वि. बोध
वाचनी

[५३]

चयिताः—शास्त्र-वशाद् प्रौढ कवि श्री अमीरिखिजी म०

चयिताः—शास्त्र-वशाद् प्रौढ कवि श्री अमीरिखिजी म०

॥३०॥ उत्तम संग उसंग धरी सजिये सुप्रसंग अतंग निवारी ।
ज्ञान वधे रु सधे जिन आद अज्ञान दुर्मति को मूल उखारी ॥
शोल संतोष क्षमा चित्त धीरज पातक से नित राखत न्यारे ।
डारत दुःख भवो भव के रिख असृत संगत उत्तम धारे ॥१०॥

॥३०॥ उपर मेह कुपात्र सनेह जुवारी को धन भयो न भयो ज्यों ।
जारको सुख रु छारवै लोपन सूड से गूढ कियो न कियो ज्यों ।
मरख मोन लवार को सोख अनीति को राज रियो न रियो ज्यों ।
सांच विचार अमीरिख धर्म विना जुग कोटि जियो न जियो ज्यों ॥११॥

॥३१॥ ऋद्धि अपार भई घर सूसके जीव जरी सम जानि के पाली ।
यत्न करी धरो भूमि के मांडो न खावन खर्च के काज निकाली ।
जन्म गया न लया टुक चैन जु मरण समै पिए संग न चाली ।
सुकृत लाभ लिया न अमीरिख हाथ पसारिके जात है खाली ॥१२॥

॥३२॥ रीति तजी अनरीति करे जु हिताहित वेन नहीं चित्त धारे ।
सत्य अस्त्य विज्ञान नहीं उर धर्म आनन समान विचार ॥
संत छली रु सती-कुलटा खल-पंडित एकही दृष्टि निहारे ।
तत्व विवेक न जासु अमीरिख सोही पशु तरके उणिहारे ॥१३॥

॥८०॥ लहिये शिवसुख अन्त भवी चित्त धारत शीख सदा गुरु की ।
खटदन्ध पदारथ भेद भला कहे राह सदा अमरापुर की ॥
परमाद कपाय विकार तजो यह औपव सार मिथ्या ज्वर की ।
भवि जीव अमीरिख होय तिनहें यह लागत ज्ञान तणी सुरकी ॥१४॥

॥८१॥ लीन परिग्रह आरंभ माही जिनागसपै चित्त नाहीं दियो है ।
कूड प्रपंच कपाय करी ठगि के पर द्रव्य को छीन लियो है ॥
राग रु द्वेष प्रमाद में राचि विपय वश विकल होय रयो है ।
मानव जन्म अमीरिख पायके सार पदारथ ख्यार कियो है ॥१५॥

॥८२॥ एकन के घर पुत्र भयो तहां आनन्द मंगल रंग बधाई ।
रोग वियोग भयो घर एकके रोय विलाप करे सुरभाई ॥
जां घर भानु उदे शुभ उत्सव सांफ समे तहां सोग सुनाई ।
केत अमीरिख था जगकी गति, जानिके मूल रह्यो किम भाई ॥१६॥

॥८३॥ ऐ मन मूढ लख्यो भव मानव नाहीं निजातम काज कियो अत्र ।
रात्रि रह्यो अति पातक में भय मौतहुको न धरयो चित्त में कव ॥
काल बली गहि लीन अचानक एक न दात्र उपाव चलयो तत्र ।
कोउ न संग भयो जियके धन धान कुटुम्ब धरयो रहियो सब ॥१७॥

रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीर-उ-द-दौला म०

॥क०॥ काम अज्ञान भयादिक दूषण जामें; न पावत मूल में कोई ।
केवल दर्शन ज्ञान करी लिन द्रव्य स्वरूप रखा सब जोई ॥
इन्द्र नरेन्द्र नमो सुरवृन्द जपे भवि सुख लहे अत्र खोई ।
अमृत देव घणै जगमें पण तारक देव कहावत सोई ॥२२॥

॥ख०॥ खट् कायकें जीव न जानत है शिव साधन को; बहु कष्ट करे है ।
धरि ऊर्ध्वाबाहु अधोमुख भूलत ताप; हुताशन देह जरे है ॥
अनगालित नीर से स्नान करे, फल फूल सत्ताय के पेट भरे है ।
करुणा विन कष्ट अनेक करे सिख अमृत काज कछु न सरे है ॥२३॥

॥ग०॥ गिने वनितादिक बंधन से पुनि काम विकार लखे जिम नाग ।
अनित्य अपावन देह लखे कबहू नहीं नेक धरे अतुराग ॥
गिने दुःखदायक सुख सभी धन धान ममत्व हरे करि त्याग ।
रहे निर्लेप सरोज यथा तर जान अमीरिख सत्य विराग ॥२४॥

॥घ०॥ ब्रूमत देश विदेश वृथा धन काज अकाज करे विघ्नाना ।
कष्ट सहे न लहे दुक चैन न खाय कमाय धरे लहि छाना ॥
पुर्य लसे विलसे धन अन्य पै तो संग नाहीं चले एक दाना ।
धार संतोष तजी तिसना हित सीख अमीरिख मान सयाना ॥२५॥

श्री अमृत

आव्यमंत्रहः

रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीर-उ-द-दौला म०

श्री अश्वत्

काव्यसंग्रह

शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अर्माऋषिजी म०

सुबोध
शतक

॥६०॥ नाचत यों भव मंडपमें जु अनादितें मोह-सहीप अधीना ।
चौगति लक्ष चौगसी भ्रम्यो करिके बहु भांतिके वेश नवीना ॥
यों भुगते सुख दुःख घने अबलों न थको दुःख-चैन न लीना ।
केत अमीरिख चेत चिदानंद देख निजातम रूप प्रवीना ॥२६॥

॥७०॥ चार विधे परखे जिम हेम निर्वाण-छेदन-तापन तीजे ।
ताडन चौधे लखे विबुध तिम धर्म परीक्षणमें चित्त दीजे ॥
ज्ञान आचार तथा तपस्या गुण जीव दया रसमें चित्त भीजे ।
केत अमीरिख राख विवेक तजी अघटेक सदा सुख लीजे ॥२७॥

॥८०॥ हांड परग्रह आरम्भ को गुरु सीख सदा चित्त लागत प्यारी ।
पंच महात्रत शुद्ध धरे समिति गुपति दृढ है ब्रह्मचारी ॥
आगम-वेण तणे अनुगार नित्य उद्यम चाह निवारी ॥
काम-विकार तजे रिख अमृत जात सदा तिएकी बलिहारी ॥२८॥

॥९०॥ जे जिनधर्म सुराग धरे कर जीवदया सुख भूठ न बोले ।
जे वृण गात्र न लेहि अदत्तको देखि त्रिया न कछु चित्त डोले ॥
बाह्य अर्थांतर त्याग परिग्रह जान अनंग विपै-विप तोले ॥
सुदृढ दान चमा तप भाव अमीरिख धर्म यही ज्ञानमोले ॥२९॥

शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अर्माऋषिजी म०

॥३०॥ झूठी सगाई संसार की चेतन स्वारथिने परिवार मिले हैं ।
स्वारथ होय आधीन रहे सध ग्रांति भरे कहे वेन भले हैं ॥
जो नहीं स्वारथ सिद्ध हुवे वनजारके वेल ज्यों छाँड चले हैं ।
आत्म कारज सार अमीरिख ज्यों भव के सब दुःख टले हैं ॥३०॥

॥३१॥ या जिन धर्म विना गति जीवकी काह भई नहीं जाय उचारी ।
राची रह्यो मन पुद्गलमें अति छाथ रही घट भम अंधारी ।
यद्यपि श्री गुरुके उपदेश-रवि किरणा न करे उजियारी ।
तदपि सूझो करे न कभू शिव पंथ पीयूष कहे सुविचारी ॥३१॥

॥३२॥ टेरत संत प्रवीण गुणी सब ग्रंथ सबे हितकी उचारे हैं ।
ये जग भोग असार लखी तजिके उर ज्ञान वैराग्य धरे है ॥
शील संतोष क्षमा करुणा तप धीरज धार प्रसाद हरे हैं ।
धारत धर्म अमीरिख याविध की शिव जात पल्लो पकरे है ॥३२॥

॥३३॥ टग वेश विवेक बिना करि के शठ मूर्ख लोकन को भरमावे ।
कोई यन्त्र दिवाय सिखावत मन्त्र स्वरोदे मिलाय के भाव बतावे ॥
ज्योतिष औपध सिद्ध रसायन भूमि निधान कही ललचावे ।
करि अमृत यों परपंच सृपा नर जन्म पदारथ व्यर्थ गमावे ॥३३॥

वि. बोध
वाचनो

रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीर-उ-दौलत म०

॥३०॥ शत्रु जंगम जीवन को सुख वहलम दुःख अनिष्ट लोगे है ।
प्राण की घात महा दुःखदायक मूढः मति हित मानि पगे है ॥
नर्क निगोद भसे मरि हिंसक तत्व विवेक हिये न जगे है ।
धसे के साधक जीव अमीरिख ऐसे अकाज से दूर भगे है ॥३८॥

॥३१॥ देत है औरत को उपदेश न आप हिये कछु बोध जगे है ।
हेतु दृष्टान्त अनेक भिलाय रिभाय के लोक अनोत पगे है ॥
अर्थ मरौरी करे विपरीत खुशामदी द्रव्य के लोभ लोगे है ।
पौथी के वैगत और है अमृत याविध मूरख; लोग ठगे है ॥३९॥

॥३२॥ धन धान तेजे गृह छोरि भजे जितराज के नाम लख्यो मन है ।
सुध सम्यग् ज्ञान विराग रु औ न करे परमाद इको छिन है ॥
निश वासर दुक्कर धारत कष्ट अनित्य लखे मनखा तन है ॥४०॥
जिन आन अमीरिख शीस धरे धन है धन है धन है धन है ।
जरे है ।

॥३३॥ नाद सुनी मग प्राण गये लखि दीपशिखा शलभादि जरे है ।
गंधते लीन मिलिंद गम्यो तन व्हे रसतावश मान मरे है ॥
स्त्री स्पर्श विपे गज प्राण गये एक एक अधीन व्हे दुःख भरे है ।
जो भये पंच विषय अनुरक्त अमीरिख तां गति को उचारे है ॥४१॥

रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीर-उ-दौलत म०

अमृत
व्यसंग्रह

॥प०॥ पंचम काल में पाप उड़े अर्थात् मत्परजव ज्ञान ज्ञु चांही ।
केवल ज्ञानी प्रभु गणराज न पूरव ज्ञान धरा मुनिराई ॥
वैक्रिय चारण लब्धिय आशरक नाहि जु संशय डेत मिःई ।
जाल प्रसाद लवे शिवपंथ अस्मरिख ये जिन वैन सहाई ॥४२॥

॥फ०॥ फलयुक्त लखी तरु को खग ज्यों निहां आयके मोड़ करे मनमानो ।
तिस स्वारथ सिद्ध भन्ने परचार रहे अनुकूल लवे मडु वानी ॥
अफलो तरु जानि विहंग तजे दिन स्वागथ सेण न पावत पानी ।
चित्त माहि विचार अस्मरिख यों जग तेभो न कोउ सहायक प्राती ॥४३॥

॥ब०॥ बालपणो शिशु के सग खेलत ज्ञान विना शठ वादि गमायो ।
शौवन अंग अनंग छयो तियके वश वहे धन लोभ वधायो ॥
बृद्ध भयो गद आय ग्रन्था न वदे सिर हाथ घणो पद्धतायो ।
कत अस्मरिख औसर पायके हाथ में सुकृत नाही कमायो ॥४४॥

॥भ०॥ असते गति चार संसार विषे तोही काल अनंत व्यतीत भया ।
पुण्य-योग लही भव मानवको कुल उत्तम आरज क्षेत्र लिया ॥
तन दीरघ आयु पंचेंद्रिय पूरण साधु-समागम धर्म क्रिया ।
इह औसर केत अस्मरिख यों जिन वैन धरो चित्तमें भविया ॥४५॥

श्री अमृत
श्री अमृत

श्री अमृत

॥ ग० ॥ मोक्ष मिले नहीं गायन से शिव नहीं मिले तन भस्म रमाये ।
 अंडिके मोह वसे वनमें नहीं मोक्ष मिले बक ध्यान लगाये ।
 चारहूँ धाम श्रो न मिले शिव नहीं मिले मुख मोन रह्यो । ४६।
 कंद भस्त्रे न मिले शिव अमृत मोक्ष मिले मतको वश लाये । ४७।
 ॥ य० ॥ यह पोय दयामय धर्म सुज्ञान अज्ञान हुई पर प्राण हरे क्यों ? ।
 नर देह से नेह करे निशवासर दौलत देख गुमान धरे क्यों ? ।
 सद् मोह समस्त कपाय विकार प्रमाद बोधो अब खान भरे क्यों ? । ४८॥
 इम केत पीयूष पीयूष तजी धरि हूँम विपै विप पान करे क्यों ? ॥ ४९॥
 ॥ र० ॥ राग रु द्वेष नहीं पक्षपात सभी जग जीवन को मुखवानी ।
 कुछ सिंगार न हास्य कथा विपयादिक को उपदेश ना जानी ॥
 शान्त विराग दया रस पूरण नाहीं विरुद्ध पगपर ठानी ॥ ४८८ ॥
 आँलख अमृत या जग में सब से अति उत्तम है जिनवानो ॥ ४८९ ॥
 ॥ ल० ॥ लाल खिरे मुख लाज गई चित लोभ बध्थो ललना विमुखी है ।
 लीलरी देह पडे लहि लाकड़ी लोक हैसे लडे होय दुःखी है ॥
 स्वांस रु खांस ग्रस्यो तन धूजत चेत नहीं परिवार रुखी है ।
 वृद्धपणे माही कष्ट बने रिख अमृत श्री जिनराज मुखी है ॥ ४९० ॥

श्री अमृत
श्री अमृत

श्री अमृत

श्री अमृत
काव्यसंग्रह

- ॥व०॥ विपयादिक सौख्य बुरे दुःखदाय तथापि रुचि करि मानत नीके ।
तिनके वश होय अकाज करे न धरे धर्म अनुकूल जी के ।
वह मात पिता वनितादिक बांधव होत न कोउ सहाय किसी के ।
इम कंत अमीरिख चेत जिया तज दूर लखी जग के सुख फीके ॥५०॥
- ॥श०॥ शुभ वीति गई लरिकाई कछु शिशु संग अजान व्हे जानो नहीं ।
तिम खोई जवानो कुसंगति से छिन एक सुसंग सुहानो नहीं ।।
जिन धर्म श्रद्धा तजि दिनमें मूढ विपै विप खाय अधानो नहीं ।
नरजन्म अमीरिख' व्यर्थ गयो पिये धर्म को लाभ कमानो नहीं ।५१॥
- ॥प०॥ षोडश वर्ष लौ गोकुलमें नंद गोप गृहे रहे गुप्त मुरारी ।
संगल गीत ओछाव भयो नहीं धेनु चरात फिरे धनु धारी ॥
मरण भयो वनमें तित कोउ न शोक कियो हरि नाम पुकारी ।
केत अमीरिख कर्म बली डिग या जग कौन बच्यो अवतारी ॥५२॥
- ।स०॥ सबे जग जाल संसार अनित्य विचारी सुजान तजे सुख सारे ।
गहे शिवमार्ग विराग रहे जग-राग रहे अघ-दाग निवारे ॥
करे नहीं नेह कर्मों तनते तप संजम से निज काज सुधारे ।
तजे वनिता धन धाम अमीरिख सत्य वही गुरुदेव हमारे ॥५३॥

वि. बोध
बावनी

रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीअमृतपिजी म०

॥१०॥ हे मतिमंद अज्ञान विचार मनु-भव पाय कहा करिवो ।
 सार असार पिछानि को मारग तत्त्व-विवेक हिये धरिवो ॥
 देव अदोयो गुरु निरलोभी दयामय धर्म सु आचरिवो ।
 दाव मिल्यो शिरेवेको अमोरिख नेक प्रमाद नहीं करिवो ॥५४॥

॥११॥ क्षत्रिय की मर्याद यही परजा-शरणागतको प्रतिपाले ।
 पीठ दे प्राण वचाय न भागत नारोके ऊपर धाव न चाले ॥
 कायर न्हे वृण ले मुखसें अरु दीन अनाथपै तेग न भाले ।
 उत्तम क्षत्रिय शूर सेही रिख अमृत नीतिके मारग चाले ।५५॥

॥१२॥ तृपणा वश है जग जीव सभो हित 'काज अकाज कछु न विचारे ।
 धन सहस्र हुये तो चहे लाख कोटि असंख्य अनंत हि चाह प्रसारे ।
 जिम इंधन डारत बन्दि बढे तिमही तृषणा धन चाह वधारे ।
 चित्त धारत ज्ञान संतोष अमिरिख तो जियके सब काज सुधारे ।

॥१३॥ ज्ञान क्रिया विन मोक्ष मिले नहीं श्रीजिन आगम माही कही है ।
 एक ही चक्र से नाहीं चले रथ दो विन काज होत नहीं है ।
 ज्ञान है पांगुलो अंध क्रिया मिल दोनु कला करि राज मही है ।
 कीजे विचार भली विध अमृत श्रीजिन धर्म को सार यही है ॥५७॥

श्री अमृत
 काव्यसंग्रह

रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीअमृतपिजी म०

चौरासी उपमा युक्त मुनि गुण बत्तीसी

॥ दोहा ॥ श्री वर्द्धमान जितेश्वरु, त्रिजग-तारण देव ॥
मन-वच-काये भावसु, ध्यान धरूं नितमेव । १ ॥
अनुयोग द्वारमें, सामायिक चउभेद ॥
भावी दोनदयालजी, सुणजो धर्ष उमेद ॥ २ ॥
समकित सामायिक प्रथम, दूजी श्रुत पहिवाए ।
देश ब्रती लीजी कहो, सर्वब्रती गुणखान ॥ ३ ॥

चार सामायिक-लक्षण—

सांचा देव गुरु धर्म तीन तत्त्र शुद्ध भाव, सहहणा रूप सामायिक समकित हे ।
नव तत्त्वादिक ज्ञानरूप श्रुत समभाव, देशत्रतो क्रिधित् सावयसे विरत हे ॥
सरव सावय जोग त्यागकें शरण भये, साही सर्व ब्रती सर्वदासे भयभीत हे ।
सर्वब्रतीको कहो उपमा दुवाइस जिन, अमोरिख कहे धारया होय जग जीत हे ॥ १ ॥

दोहा—

उपमा होय प्रकार है, देश सर्व प्रकार । देशथकी इहां बर्णवूं, सांभलजो चित्त धार ॥

रसुचय उपमा—

प्रथम सरप गिरि अगन समुद्र जाण . पंचमी आकाशको, उपमा पहिचाणिये ।
 तरुवर भ्रमर ने मृगकी अष्टमी कही, पृथिवी कमल रवि, एकादश ठानिये ॥
 पवनको उपमा सां, वाग्मी प्रकाशी जिन, एक एक भेद सात सात सुवहानिये ।
 कहे अमोरिख सब उपमा चौरासी होय, तांही सुण सुण विवेक मन आनिये ॥२॥

सर्प की उपमा—

जैसे अहि अन्यकृत स्थानकमें वास करे, तैसे मुनि निरवद्य ठामसे रहत है ।
 अगंधन अहि जिम, संग्रहे न वस्यो विप तैसे भोग त्यागके, न ग्रहण करत है ॥
 विल माहे नाग सम, जैसे तैसे तपाधन, मोक्षपंथ सरलसे, चरण धरत है ।
 विलमें पन्नग ज्यों नीरस रस लूह तुच्छ, राग द्वेष तज आर शुद्ध आचरत है ॥३॥
 कंचुक तजीने अहि भागत न देखे फिर, तैसे मुनि भोगादि संसार से डरत है ।
 उरग ज्यों कंटकादि तज के चलत पंथ, तैसे यति इरजा सहित विचरत है ॥
 विपधर देखी सहेँ होय भयभीत चित्त, तैसे ऋषिराय देख पाखंडी डरत है ।
 अमोरिख कहे मुनि टालत करम विप, बन्दो भय्य प्राणी भय भय को हरत है ॥

चरिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीर-उद-दौला म०

पर्वत की उपमा --
 जैसे गिरि नाना भाँति औपग्रह सहित होय, तैसे क्षीरासवाधिक लब्धिधारी संत है ।
 जैसे गिरि नाना भाँति औपग्रह सहित होय, तैसे क्षीरासवाधिक लब्धिधारी संत है ॥
 डुंगर उद्यो वाय करो होंवे न चलित कदा, तैसे आया परीसह अचल सहत है ॥
 जैसे नग जुंठुको आधार भूत होय तैसे, संतजन खटकाया जीवन के भित है ।
 जैसे गिरिबर सेतो निकले नदी प्रवाह, तैसे न्यायिक ज्ञान सरिता चलत है ॥५॥
 जैसे गिरि मेरु सब डुंगर से ऊँचो तैसे, मुनि वेप लोक माँहो उत्तम वंदत है ।
 जैसे नगराज मणि रतन से भरयो तैसे, ज्ञानादिक रतन से भरे गुणवन्त है ॥
 जैसे परवत महासुन्दर शोभित होय, तैसे आणमार ज्ञान गुण से दीपन्त है ।
 अमोरिख कहें चित्त धार भव्य प्राणी सीख, ऐसे गुणवंत नम्या होय दुःख अंत है ॥

अग्नि की उपमा --
 अगनि उद्यो इधन से होय न तृपत कदा, मुनि सूत्र भणतां न तृपत लगाय है ।
 जैसे आग प्रज्वलित होय दीप तेजवन्त, संत तप गुणे करी दीपत अपार है ॥
 जैसे तेरकाष्ठादिक बालत है तैसे भिन्नबु, तप आग कर्म काट वाली करे छार है ।
 जैसे आग उद्योत करत तैसे अनगर, धरम उद्योत करे टाले अंधकार है ॥७॥
 जैसे अग्नि धातुन के मैल को हरत तैसे, जग जीव घट मिथ्या मैल देत टार है ।
 जलण उद्यो धातु घूल दोउको करत भिन्न, तैसे भिन्न करे जीव कर्मको विकार है ॥

चरिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीर-उद-दौला म०

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीचन्द्रपिजी म० ॐ ॐ ॐ

आग काचा भाजनकु करत है पाका तैसे, जीव धर्म माझी करे पाका अनगार है ।
अमोरिख कहे ऐसे संत जगमांही तांकी, करे नित संव सुखे होय भवंपार है । ॥

समुद्र की उपमा—

जैसे नदीपति जल गहेर गंभीर अति, तैसे सर्वत्रती गुण गंभीर पिछ्वाणजी
जैसे रतनागर में रतन आगार होय, तैसे संत पास ज्ञान दिक रत्न खानजी ।
जैसे बिंधु तजे न मर्याद तैसे संत जन, आगम मर्याद नहीं तजे प्रभु आणजी ।
समुद्रमें जेसे आय मिले हैं नदी अनंक, तैसे संत पास भाना भांत बुद्धि जाणजी ॥
वर्धि जल करत किलाल न मलिन होय, तैसे न मलिन मति करे जो वखाणजी ।
सागर ज्यों कोई काल झलके न लेशमान, तैसे नहीं झलके करीने क्रोध मानजी ।
ज्वधिको जल जैसे नित्य निरमल रहे, तैसे यति-मति निरमल गुण नाणजी ।
अमोरिख कहे नित मन वच काय करी, कीजे संत सेव तासु होवे निरवाणजी ॥

आकाश की उपमा—

आकाश ज्यों निरमल हाय तैसे संत चित्त, अंतरंग भाव सदा होवे निरमल है ।
आलंबन रहित अंबर जैसे जाणोयत, तैसे निरालंब संत रहत अचल है ।
धर्मसिंहायादिक द्रव्य को भाजन नभ, तैसे पंच आचागदि पालत सकल है ।
जैसे व्योम ताप करी नहीं कुमलाय लेश, नहीं कुमलाय संत निंदा किया खल है

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीचन्द्रपिजी म० ॐ ॐ ॐ

गगन ज्यों अति बरसात हुए भीजे नहीं, तैसे कीधा कीरति न भीजे चित्त अंस है ।
 अरुपी आकाश नहीं छेदन भेदन होय, तैसे निज ज्ञान को न होवत विध्वंस है ॥
 नभको न अंत तैसे संत के अचंत गुण, पावे नहीं पार करे मुगुरु प्रयांस है ।
 अमीरिख कहे प्राणी मन भाव शुद्ध आणी, कौजे तांको सेव दूर होय कर्म बंस है ॥

वृत्त की उपमा—
 जैसे तरु शीतलाप सहे पर छांद करे, संत परीसह सहे करे अन्य छाया है ।
 जैसे वृत्त सेवन से मिलत है फल सार, तैसे संत सेव किये ज्ञान फल पाय है ॥
 जैसे तरुवर बहु पत्तीको आधारभूत, तैसे जग जीव को आधार भूत आय है ।
 छेदे कोई फरसी से वृत्त नहीं रोष धरे, तैसे वध किये संत रोष नहीं लाय है ॥१३
 चंद्रनादि लेन किया तरु न संतुष्ट होय, तैसे किये लेपन संतुष्ट न कहाय है ।
 तरु फल देई नहीं मांगत है दाम कछु, संत ज्ञान देई लोभ नहीं चित्त चाय है ॥
 बेल से बीटाणो तरु सूखत न छोड़े नेह, तैसे धर्म ग्रंथि नहीं तजे प्राण जाय है ।
 अमीरिख कहे ऐसे संत गुणवन्त नित, कांजे तांकी सेव मिले मोक्ष सुखदाय है ॥

अमर की उपमा—
 अमर ज्यों पुष्प रस पीए नहीं देवे पीड, तैसे ग्रहे आर देवे खेद न दातार को ।
 जैसे अलि हे मकरंद न सनेह धरे, तैसे संत दातासुं न धरे चित्त प्यार को ॥

रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीरिखजी म०

रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीरिखजी म०

अमृत
 यमंत्र

श्री अमृत
काव्यसंग्रह

फूल फूल फिरे अलि करत गुंजार नाद, तैसे मुनि गाम २ करत विहार को ।
अति रस भिले नहीं भ्रमर ग्रहण करे, मुनि न ग्रहण करे मिले अति ओर को ॥
जैसे मधुकर बिन नोत्या आवे वागसांही, आवे अणगार बिन नोत्या गुही द्वारको
जैसे अलि केतकी के संग अति नेह धरे, तैसे मुनि नेह धरे धरम विचार को ॥
पटपट काज नहीं करत है वाड़ी वाग, आहारादि किया नहीं योग अनगार को ।
अभीरिख कहे मुनि करम कलंक दहे, संजम सेहरो बांध वरे शिव-नार को ॥१६॥

मुग की उपमा —

जैसे मुग सिंह देख पावत अधिक त्रास, तैसे मुनि पावे त्रास देखी कर्म फंदसौ ।
जैसे केहरोको लंबव्यो घास नहीं खाय मुग, तैसे सद्योपी आहार ग्रहे न स्वछंदसौ ॥
जैसे मुग आणो भय रहे नहीं एक ठाम, तैसे मुनि रहे न डरत प्रतिबन्धसौ ।
कुरंग ज्यों रोग आयें करत न प्रतिकार, सावध दवाको तज रहत आनंदसौ ॥१७
रोग आयें जैसे मुग बसत है वृत्त मूल, तैसे आया रोग मुनि रहत एकांत है ।
मुग रोग आया नहीं बंछे परिवार साज, तैसे साज स्वजन को चाहे न महंत है ॥
रोगादिक गये तजे वृत्त मूल जैसे मुग, तैसे मुनि रोग गये सुखे विचरन्त है ।
अभीरिख कहे धन ऐसे संत शूर वीर, करम रिपुको तजी करे भव अंत है ॥१८॥

मुनि गुण
वत्तीसी

[७२]

धरती की उपमा—

सदत फरस सब नरम कठिन भूमि, तैसे स्पर्श खेद सब सहे मुनिराज है ।
 धन धान आदि करी पृथ्वी पूरण भरी, तैसे मुनि सम संवेगादि गुण साज है ॥
 पृथ्वी उ्यों बीजादिक उत्पत्ति को कारण है, तैसे मुनि स्वर्ग मोक्ष सुखके समाज है ॥
 धरणी उ्यों शीत ताप सहत अनेक विध, तैसे मुनि परीसह सहे शिव काज है ॥
 पृथ्वी को खोदत न काहूँपै पुकारे जाय, मुनि को मारत नहीं बोले वेणु गाज है ।
 उरबी कादव नोर सबको सोपत जैसे, संग शोष रागद्वेष लहे शिवराज है ॥
 प्राण भूत जीवको आधार भूत होय धरा, गंत है आधार सब जीव सिरताज है ।
 अमीरिख कहे भवि ऐसे को शरण गहो, तरण तारण मुनि तारे उ्यों जहाज है ॥

कमल की उपमा—

जल से कमल जैसे रहत अलिप्त सदा, तैसे मुनि लिप्त नहीं काम भोग नीर से ।
 नीरज पवन करी पंथी को शीतल करे, भवि चित्त शांत जिन वचन समीर से ॥
 मकरंद गुणयुक्त होवे जैसे शतपत्र, तैसे गुणयुक्त होवे क्षमा शील धीर से ।
 रवि शशि देख कंज होवत विकास तैसे, गुरु मुख देखी होय प्रफुल्ल शरीर से ॥२१॥
 सरोज हमेश जैसे रहत हरित अंग तैसे संत धरम में लीन हो रहत है ।
 चन्द्र सूर सनमुख रहत है पद्म जैसे, तैसे जिनवेण सनमुख हो बहत है ॥

श्री अमृत
काव्यसंग्रह

जलज उज्वल नित रहत है निरमल, मुनि धर्म-सुकलसु उज्वल कहत है ।
अमीरिख कहे ऐसे संत को त्रिकाल धोक, ध्यानरूप आग कर्म वनको दहत है ॥

^{११}
सूर्य की उपमा—

जैसे रवि करत प्रकाश तैसे संतजन, जीवादिक भाव को प्रकाशो अवदात है ।
दिनकर देख होय प्रफुल्ल कमल वन, तैसे मुनि देख भवि चित्त हरखात है ॥
भानु के प्रकाश ग्रहादिक ज्योति मंद होय, मुनि भये प्रगट पाखंड दब जात है ।
उदे भये सूरज करत अंधकार दूर, तैसे गुणवंत दूर टालत मिथ्यात है ॥२३॥
दिवाकर तेज करी होवत जाज्वल्यमान, तैसे मुनि ज्ञान गुण तेजसु विख्यात है ।
अगनि की ज्योति मंद होवत दिनंद उदे, मुनि आये मिथ्यामति मान जसघात है ॥
अनुदिन किरणा करीने होय भानु तेज, तैसे मुनिराज ज्ञानादिक गुण सात है ।
अमीरिख कहे मुनि टालत करम दल, निज गुण प्रगटाय होय जगत्रात है ॥२४

^{१२}
पवन की उपमा—

सर्व ठाम जावत पवन न स्वलित होय, मुनि सर्व ठाम जाय उगर विहारी है ।
वायु ज्यों रहत निशदिन प्रतिबन्ध बिना, तैसे मुनि तजे प्रतिबन्ध गुणधारी है ॥
लघुभूत होय वायु तैसे गुणवंत संत, द्रव्य उपधि से भाव रागद्वेष वारी है ।
वायु जैसे घर करी रहे नहीं एक ठाम, तैसे घर करी नहीं रहे अनगारी है ॥२५

त्रि. बोध
बावनी

[७४]

युग्म की सुगन्ध तम वायु विस्तार करे, मुनि चउ तीरथ के गुण विस्तारी है ।
 राजादिक रोके नहीं रेवत समीर जैसे, तैसं मुनि रहे नहीं मर्यादा निवारी है ॥
 उष्णता को करत शीतल ज्यों पवन वेग, ज्मरूप वायु से कपाय ताप टारी है ।
 जनम मरण तजी पावत अचल गति, अमोरिख कहे नित्य वंदना हमारी है ॥२६॥

समुच्चय मुनि-गुण --

पाले पंच महाव्रत जीते पंच इंद्रियों को महा दुःखदाय चार कपाय निवारों है ।
 भाव जोग कर्ण मत्य ज्माने वैरागवंत, मन-वच काय सम ज्ञान के भंडारी है ॥
 दर्शन चारित्र जाके संपूरण गुण होय, सहे सम वेदनी मरण दुःखभारी है ॥
 अमोरिख कहे गुण सत्तावीस धारी संत, सदा ही त्रिकाल ताकू वंदना हमारी है ॥
 असंजम बंध तज धारत रतन तीन, जोग शल्य दंड तीन गारव निवारों है ।
 विकथा अशुभ ध्यान डालत धारत शुभ, क्रिया-काम गुण छ्वांड सुमति सुधारी है ।
 स्वदकाय पाले तीन डालत अशुभ लेश्या, भय मद टाल नववाड ब्रह्मचारो है ।
 नव तस्य जाण नहीं करत निदान नव, अमोरिख कहे नित्य वंदना हमारी है ॥
 ज्मार्गादिक दशविध धारत धरम शुद्ध, प्ररूपत श्रावक की पडिमा इयारी है ।
 पढत इग्यारे अंग भिखुकी पडिमा धार, बारे विव करे तप टुककर करारी है ॥
 तेरे फिरिया कांठिया डाल पाले समृद्धिम, चउद पूरव ज्ञान भणे सुविचारी है ।
 परमाधामी से डर पालत जितंद आण, अमोरिख कहे तांकु वंदना हमारी है ॥

श्री अमृत
 काव्यसंग्रह

॥ ॐ ॥

रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अर्माचट्टपिजी म०

मुनि गुण
 वर्त्नीसी

श्री अमृत
काव्यसंग्रह

सोले कला पूरण टालत है कषाय भेद, संजस पालत स्थान अष्टादश टारी है ।
पाप सब करे दूर न्याय कथा धारे उर, असमाधि सबल दोष परिहारी है ॥
बाचीस परीसा जीत विषय न आणे चित्त, भणें दुजों अंग जिनराज ध्यानधारी है
भावना पचोस भावे वारत है क्रिया दूर, अमोरिख कहें तांकु वंदना ह्मारी है ॥
दशाकल्प व्यवहार धारे गुणवंत संत, आचार कल्प साध पाप वंध वारी है ।
महाभौहनीय स्थान तज गान सिद्ध गुण, जांग संप्रहीत धारे विनय विचारी है ।
पालत आचार वरजत दूर अनाचार, सेतालीस दोष टाल विशुद्ध आहारी है ॥
अमीरिख कहें दूर तजत समत मोह, सदाही त्रिकाल तांकु वंदना ह्मारी है ।
ऐसे गुणधारी उपकारी टाले करमाकुं, तारे भवि जीव निज आतमको तारी है ।
चौरासो उपमा कही अनुयाग द्वारमाही, ऐसे गुणवंत संत होय अविकारी है ॥
ऐसे गुण हीन होय भारकं बहणहार, द्रव्यलिंग सरे नहीं गरज लगारा है ।
रसना है एक संत गुण हें अनंत धार, अमीरिख कहें कैसे कहुँ मैं उचारी है ॥३२॥
सवत एगुणवीस एकावन साल माही, महाविद दशमी सुवार है आशित को ।
पीपलोदा माही सुनि गुण के वखाण किये, होवे बहुलाभ भवि वंदो धार चित्तको
जिनाज्ञा विरुद्ध होय मिच्छामिदुक्कड तस्य, शोता चूक होय तो सुधारो आणी हित्तको
गुरु सुखारिखजी पसाय कहें अमीरिख, गुणि गुण गावे सुण लहें जग जीतको ॥

॥ इति श्री चौरासी उपमा युक्त मुनि गुण वत्तीसी सम्पूर्ण ॥

मुनि गुण
वत्तीसी

एकल विहारी मुनि हितशिक्षा चालीसा

शादूल विक्रीडित--

बन्धों श्री जिन वीर धीर हितसे वाणी जिनों की सिरे ।
 सारंभी सपरिमहो गृहपती नेशाय ताके फिरे ॥
 पापस्था अनदशोत्तो सम गिणो स्वच्छन्दचारी मुनी ।
 तांके लच्छ प्रतच्छ स्वच्छ श्रुत से वोल् गुहसे मुनी ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

आचारांग के पांचमें, प्रथमोद्देशक धार ॥
 वीर प्रकाशित भाव को, कहूं करिके विस्तार ॥ २ ॥

घनाक्षरी कवित्त--

ल्यग वर नारी गुरुदेव से सिखा उपारी, अविनयकारी गुरु लीख नहीं धारी है ।
 महा अहंकारी क्रोध भारी मायाचारी लोंगी लोभ अधिकारी पाप इष्ट दुराचारी है ॥
 दुष्ट परिणामी दुष्ट करमी हिसक धूर्त, इच्छा मिच्छाकारो रस वश अविचारी है ॥
 अमृत उच्चारो नहीं संशय लगारी घणै, औगुण को धारी साथ एकलविहारी है ॥ ३ ॥

श्री अमृत

काव्यसंग्रह

एकल

विहारी

[७७]

रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीरुद्दीन मु०

श्री अमृत
काव्यसंग्रह

॥ दोहा ॥

दोपक आतम धर्म हस सिध्या कर वक्रवाद ॥
पाप छिपावे कपट करि, महा अदान प्रमाद । ४ ॥

घनाचरी -

विषय भिखारी नारी जात बातकारी, महा अधी व्यभिचारी दुराचारी कलाधारी है ॥
तंत्र मंत्र कारी ठगो परिग्रह धारी अध ओघको अहारी छिप रेल को विहारी है ॥
लोक लाज सारी हो विसारी धर्मनीति न्यारी, दोऊ भवहारी कुगतिको अधिकारी है
महागुन्हेगारोपै डरत ना अनारी भारी प्रभु आण टारी भयो एकल विहारी है ॥२
वेपका लजावे गाम देशको लजावे ज्ञाति जाति को लजावे मात तातको लजावे है ।
गच्छको लजावे धर्म स्वच्छको लजावे गुरुदत्त को लजावे मत पक्षको लजावे है ॥
इष्ट को लजावे जनशिष्ट को लजावे जैन वैत ऐत कैत सैन सब को लजावे है ।
मिलतां लजावे तांसे अमृत सुनावे भ्रात, मनको मुंडाय गुरु पास क्यों न जावे है
छोड घर द्वारा धन सारा परिवारा लखि जगको अक्षारा गुरु चरणे शिरधारा है ।
संजम दुधारा विपै जीतन करारा खार द्वेप क्लेशधारा किया अलग विहारा है ।
मत्त मतवारा रति अधमें अपारा भूठ कपट भंडारा व्रत भंजन हुरयारा है ॥
अमृत उच्चार ह्य मत्त बेल गाम वारा एकल विहारा जिनशासनसे न्यारा है ॥७

एकल
विहारी

[७८]

॥ दोहा ॥

अपछंडा परिवार को, छोड़ अकेला होय ॥
कौन कौन अवगुण बढ़े, कहूँ सुनो सब कोय ॥ ८ ॥

एकल

विहारी

श्री अमृत

काव्यसंग्रह

घनाक्षरी -

एकल विहारी देखि तुरत ही पूछे लोग, क्रोध करी तांसे लड़े बोले वेण खारा है ।
बंदना न करे वड़वड़े अहंकार भरयो, अधिक कपट जाल लोभ का पसारा है ॥
आरंभमें लीन रांचो करवा प्रवीन घणो, खान पान भोग रोग लंपट अपारा है ॥
गन परिणाम रहे मलिन अमृत सदा, एकल विहारी जिनशासन से न्यारा है ।
भूत मिलानी मटु मधुर प्रलापी वर रागको अलापी पेठ लोकमें जसोवे है ।
मैं तो तपधारी हूँ आचारी गुरुसाध सारे शिथिल आचारी भारी मोकोना सुहावे है ।
रखे कोई देखे मेरे अनाचार यों विचार, आजीविका काजे कळु डरसे लजावे है ।
अज्ञान प्रमाद दोष पोष पुष्ट काया करे, एकलके औगुण यों प्रगट लखावे है ॥१०॥
चाले आप छट्टि केइ भांत कर्म बांधे विनयादि नहीं सांधे खांधे आपणे नचीतजी
मोटो अविनीत पीत भागल निलज्ज चित्त, त्यागी धर्मनीत रीत धारी विपरीतजी
छांडी लोकलाज को अकाज करे नाहीं डरे, लोकसे लड़े है वड़े कड़े बाल सीतजी ॥११॥
आचारांग पंचमे अध्येनके उद्देश्ये पेलै, अमृत जिनंद्र वाणी धारो धरी प्रीतजी ॥११॥

श्री अमृत काव्यसंग्रह
रचयिता:—शास्त्र-विशारद श्री कवि श्री अमीश्वरिजी म०

रचयिता:—शास्त्र-विशारद श्री कवि श्री अमीश्वरिजी म०

रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमी अष्टपिजी म०

कर्म जोग आय कभी ध्यान डस जावे नारु, जानू डमरुको रोग वाये अकडावे है ॥
 दुःख ना क्षमाय तव कौन हो सहाय तन, साता उपजाय धर्म संजम पलावे है ॥
 सागारी लजावे मन औपध खिलावे आर पाणी भी करावे साधपणो उठि जावे है
 माटे ध्यान माही मरी कुगति सिधावे ताको, अमृत चेतावे, मन क्यों ना समझावे है
 वामा वतलावे तासे वाते लग जावे और चाले चढ जावे सब लाज विसरावे है ।
 महाव्रत जावे महा विपय वधावे छिप बेध्या घर जावे ताको कौन हटकावे है ॥
 रोग लागि जावे पाप बात प्रगटावे पास बैठते लजावे लोक नाहीं वतलावे है ।
 माटे ध्यान माही मरी कुगति सिधावे ताको, अमृत चेतावे मन क्यों न समझावे है
 कोई साधु साथ नहीं मिलावे स्वभान नेक, कोई साधु साथ नहीं मनको मिलापी है ।
 पाले ना आचार करे कपट अपार देवे साधु शिर, आल असंजस प्रलापी है ॥
 क्रोध मान कपट प्रमाद मिथ्यावाद अंग, आलसी अपार अनगार वन्यो पापी है
 गच्छ छोड़ गच्छे फिर एकलो स्वच्छंद मंद, अमृत विसार वीर आणाको उत्थापी है ।
 करत विहार कोई पूछे नरनार सब छोड़ परिवार को क्यों आतम विगोई है ।
 कोई बोले सूयो कोई क्रोध में धमाय जाय, मुखको विगार तकरार करे कोई है ॥
 कोई निज दोष ढांके औरमें वतावे चूक, लोक लखि लेत गुन्हेगार थार योही है ।
 अमृत विचारया वित न्यारा हो सिधारया तप संजमको हारया थे विगारया भव दोई है

श्री अमृत
शब्दसंग्रह

श्री अमृत

शब्दसंग्रह

उत्तराध्ययन चौथे आठमी गायामें देव, छाँचो रोक्खा विना नहीं मोह मिले आतजी नदविट चोर ध्यभिचारो ज्यों मिलाभी तैसे, एकल भी आपणी वधारी चाहे न्यातजी । एकल से मिले एक देख हरखावे अति, गूथे है अनेक जाल करे गुप्त वातजी ॥ संगलें वैराग्य बटे श्रद्धा विपरोत होय, बंदना करत लागे अमृत मिथ्यातजी ॥ चोरी जारी खूनी तांको राजा अपराधी जाए, देशसे निकाले मिले चोरों साथजायके ॥ चोर भी खुशी से राखे देशको विगाड़ करे, लूटे खावे माल धन प्रजा को सतायके ॥ परिचय करे चोर लार सोहो गन्हेगार, एकल को देखो उपनय यों लगाय के । प्रभु आण भांगे मांगे भ्रमत अन्तकाल, सहे धणो दुःख कहे अमृत सुनायके ॥२५

उपनय-यथा सर्वथा —

भूप प्रभु अपराधि कुमायु कुदूर वजीर आचारज कीयो ।
पह्लोजु गच्छ-पती जिम पूज्य रजा विनही अपनो करि लीयो ॥
आर विहार करे परिचै जिन लोपत आण गुन्हो कहि दीयो ।
काल अन्तं सजा भव कैद अमी समको परमारथ सीयो ॥ २६ ॥

धनाक्षरी —

क्रोध करि लड्यो साधु निकल्यो खमाया विना, अन्यगण अंगीकरो रेवाको विचार कल्पे गणाधोशको सो पंच रात्रि छेद करी, कोमल वाणी से समझाने हिताचार है ॥

श्री अमृत
शब्दसंग्रह

श्री अमृत
शब्दसंग्रह

पीछा उसी गणमें पठावे गुरु पास खास, आवे ज्यों प्रतीत विसवास व्रतधार है ।
 राख्यासुं अदत्त वृहत्कल्प के उद्देशे चौथे, पंचमी दफा में वीर कानून उद्धार है ।
 पासथो उसन्नो कुसीलियो संसत्तो नित्तियो, समाइयो पासणियो काहियो प्रचंड है
 नवमो संपसारियो वंदना करत यांको, प्रशंसा भी करे वीर नोति ये अखंड है ॥
 आहार विहार पास बैठके सज्जाय करे, उपधि के लेते देते होय जगभंड है ।
 निशीथके तेरमे उद्देशेमें प्रगट पाठ, आवे तिस साधुको चौमासो लघु दंड है ॥२८
 दुष्ट मन वैरि शिर पुष्ट पाप आश्रव में, विषय कपाय घन दृढ लंबे केश जी ।
 क्रोध मान माया लोभ और पांचों इंद्रियों को, करके प्रयत्न रहे मूंडता हमेशजी
 ताके साथ मूंडे सिर अमीरिख कहे तांको, होवे ना कलेश दुःख चिंता लवलेशजी
 मनको अकेला कर चेला तो भसेला मिटे, रहों किसी भेला धारी वीर उपदेशजी
 ग्रामको विगाड़े बारवार सती गंत आवे, कुमाणस पठे उसी घरको बिगाड़े है ।
 विगाड़े लुगाई रसलंगट कुशंग मिले, भरत हताइ साधु धर्मको उजाड़े है ॥
 सड्यो पान एकसारी चोलीको सडाय देत, खांटो साधु एक सारे गच्छको लजाड़े है
 सड्यो हाथ दूर किया होवत समाधि ऐसे, खोटे को अमृत सभी घरमें से काड़े है
 व्यवहार सूत्रके उद्देशे छट्टे बांची देख, बोल दश चारमें खुलासा अधिकार है ।
 ग्रामादिक मांही धर्मशालादि सकान खुल्ला, निकलण प्रवेश पृथक घणे द्वार है ॥

रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीचन्द्रबिजी म०

नाहीं कल्पे हे रेना एकले गीतारथको, जो हे बहुसुया बहु आगम के धार हे ।
अपसुया अप आगमीका तो केनाही क्योहे, अमृत विचारधार आणा श्रेयकार हे
बोल तेरसेमें क्यो पूर्वोक्त स्थान घणे, मिलके अगड सुया रेना मत भावो हे ।
हे कोई आचार कल्पधारी निशीथादि जाण, रहे लोकें आश्रित जो मोक्ष अभिलापी हे
हे तो घणे साधु पण नहीं को आचार जाण, रखा कल्प भांजे प्रमु याही रीत राखो हे
जेता दिन रहे तेतो छेद प्रायश्चित्त पात्रे, अमृत समान वीर वाणी खुद साखी हे ॥

बृहत्कल्प उदेशे प्रथममें खुलासा पाठ, सात चालीसमो बोल तोल चित्त ठाणेजी
कल्पे नहीं एकले साधुको रात्रो वा वियाले, वाहिर सज्ज्माय परिठात्रे काज जाणेजी
कल्पे अप्य सूधादोय तोनल्योही साधवी को आप सुधादोय तीनचार जाणो आपणेजी
वीर वेण मान्या द्रव्य भाव से समाधि रहे, अमृत एकल भूठी टेक मति ताणेजी ॥

वत्तीस में उत्तराध्ययन प्रमु वैन एन, निपुण सहाय चाहे मिल्या करे चेलो हे ।
न मिले सहाय गुणाधिक वा गुणे समान, निज हित जान कळो विचरे अकेलो हे ॥
ऐसे कही थापे सो उत्थापे वीर आगमको, चेले वित्त विचरे अकंलो गच्छ भेलो हे
अमृत अरथ कोई पंडित से धार भाई, मनघड अरथ करे सो मोह गेलो हे ॥३४

बैठ गुरु नैनमें सुऐन सेन केन मान, इंगित आकारी बरव्या को संग टार रे ।
मान सहित आण मान स्थान गुरु पास सदा, उद्यमी विवेकी वनी कार्यको सुधाररे

रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीचन्द्रबिजी म०

श्री अमृत
काव्यसंग्रह

शिवरिगी छन्द—

लिखी हे या मैंने कठिनतर शिक्षा हित भरी ।
दवाई ज्यों खारी कटुक गुणकारी सुखकारी ॥
खुरी से पी लोगे दरद मिट जावे भ्रमण के ।
सुखी होवे आत्मा निजगुण वदे ज्यों शमणके ॥ ३६ ॥
नहीं हूं मैं द्वेषो वनकर हितैपी कुल्य कहा ।
तुम्हारे अच्छे को मनन करिबे में हित महा ॥
खमाता हूँ भ्राता दुकृत मम मिथ्या कथनका ।
पुरी इन्द्रप्रस्थे रचित वर काव्ये वचनिका ॥ ४० ॥
॥ इति एकल विहारी-मुनि-हितशिक्षा चालीसा सम्पूर्ण ॥



एकल
विहारी

[५३]

रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीरुबिजी म०

श्री असुत
लावयमंडह

रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीरुबिजी म०

श्री अमृत

काव्यसंग्रह

श्री शारदा विनय

॥ दोहा ॥

श्री जितवाणी शारदा, श्रुतदेवी सुखदाय ॥
जगरत्नक जगदीश्वरी, होजे वेगि सहाय ॥ १ ॥

॥ घनाक्षरी कवित्त ॥

प्रथम भारती देवी दृजो सरस्वती तोजो, शारदा सुनामवर चोथो हंसगामिनी ।
पंचमो विश्व विख्याता छट्टो वागीश्वरो शुद्ध, सप्तमो कौमारी अष्टमो है ब्रह्मचारिणी
नवमो विदुषा देवी दशमो सुब्रह्मसुता, ग्यारमो ब्रह्माणी वारमो है ब्रह्मवादिनी ।
घात छठि पठन करे जो नर नाम एह, होवे अमीरिखपै प्रसन्न श्रुतस्वामिनी ॥२॥
आयो मैं शरण चलि शारदा तिहारे अब. छोड़के अभय ठौड़ औरकित जाऊँ मैं
सुनिके अरज कङ्कू देर ना करीजे मोहि, लीजे अपनाय दास तेरोही कहाऊँ मैं ॥
तेरे विन और दीन रत्नक नहीं है जग, और डिग जाय कित दीनता सुनाऊँ मैं ।
दया करी आज अमीरिखके सहाय होउ, जननि तिहारो अबलंब दृढ पाऊँ मैं ॥३॥
तेरी ही कृपातें मति-तिमिर विनसि जात, तेरो ही कृपातें ज्ञान-भानुको उजास होय ।
तेरीही कृपातें दूर कुमति पलाय वेगि, तेरीही कृपातें हित सुमति प्रकाश होय ॥

रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीरुद्दिन म०

तेरीही कृपातें गए दोष टलि जाय सब, तेरीही कृपातें बर काव्य को अभ्यास होय ॥४
 तेरीही कृपातें विद्या बुद्धिबल वाधे माय, अमीरिख सकल सफल उर आस होय ॥४
 तेरी ही कृपातें घने जड़मति दूत बने, तेरी ही कृपातें शुभ जग जस छायो है ।
 तेरी ही कृपातें श्रुतसागर को पावे पार, तेरी ही कृपातें गणराज पद पायो है ॥
 तेरी ही कृपातें सब आगम सुगम होय, आगममें तेरो ही अखंड बल गायो है ।
 सुमति बढ़ाय दे हृदाय दे अज्ञान तम, अमीरिख जननी शरण तव आयो है ॥५
 महिमा तिहारी भानु सम उजियारी, तिहुँ लोक में प्रचारी भारी दीन हितकारी है ।
 जिनजी उच्चारी सब जीव हितकारी गणराज शिवधारी कही शारदा पुकारी है ॥
 संशय निवारी उरधारी तरनारी भवविपदा विदारी निज आतम सुधारी है ।
 कहे अमीरिख मोद संगल करनवारी ऐरी महतारी मोको शरण तिहारी है ॥६॥
 मैं तो एक तेरो अबलंब दृढ़ धारयो मात, दया करी बेगि मति-लिमिर विनास दे ।
 तेरी ही कृपातें शुभ बनत सुखद काव्य, टले गनदोष बुद्धि विमल प्रकाश रहे ॥
 होजे बरदायी अमीरिख की अरज सुनी, सफल करीजे सब धारी उर आस जे ।
 मेरी ओर हेर कृपा कोर यों तिहारो निभ्य, जानि निराधार हो सहाय निज दास के
 एरी माय मेरी सुनि लेरी या अरज अथ, हेरी मम और जानो चाकर चरनको ।
 मेरे उर आश विसवाल है तिहारो गुण गाऊं मैं हमेशा दुःख दोषके हरनको ॥

श्री अमृत
काव्यसंग्रह

विमल करीजे विद्या बुद्धि औ हरीजे तम, विरद कहावे दीन पालन करन को ।
और कित जाऊँ गाऊँ दीनता सुनाऊँ अंबे, सोको तो भरोसो दृढ़ आपरे शरन को ।
तेरो ही सुजस सब आगम वखानत है, तूही शिवदाता गणराज ओ उचारी है ।
तूही सब जीवकी दयाल रक्षपाल मात, तू ही दुःखी दीन प्रतिपाल हितकारी है ॥
तूही सब ठौर में सहाय होय दीनन के, तूही सबे भव्य जग जीव महतारी है ।
दास अमीरिख की कुमति सब दूर कर, एरी महतारी सोको शरन तिहारी है ॥६॥
मैं तो हूँ अकेलो निराधार दुःखी दीन महा, सिमटी करम सब आन दियो देरोरी ।
वैरीको जुलम देखी चित्त अकुलानो तब रुटकिके शारदा शरण लियो तेरोरी ॥
दीखे नाहीं और तिहूँ लोकमें समर्थ कोउ, काहूँ भौति यांको नेक करत निवेरोरी ।
तूही दया धारिके अभय करसों को मात, अमीरिख तेरे पद पंकज को चरोरी ॥१०॥
करम आधीन दुःखी दीन मैं भयोरी अंबे, भ्रसत फिरूँ मैं भव नानारूप धारिके ।
अब तो सह्यो न जाय, संकट अपार यह, सबे भांति होय मैं निबल रह्यो हारिके ॥
जान्यो अरि जोर मन मेरो घबरानो सब सुधि विसरानो रहूँ कैसे मन मारिके ।
करूँ क्या उपाय वस चले ना हमारो यांते, अमीरिख आयो मैं शरन महतारिके ।
माता सातादानी जिनराजजी वखानी तोहि, परम प्रधानी गुणखानी सुखधामिनी ।
दया रस सानी मति तिमिर को भानी मोहि, दीजे पद पंकजकी सेव शिवगामिनी

शारदा
विनय

[६०]

शारदा-विनय-प्रचयिताः—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीरिखपिजी म०

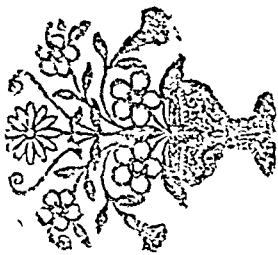
ॐ ॐ ॐ रचयिताः—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अर्माच्छृपिजी म० ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

भरग अविद्या मति विमिर विनासो मात, मिथ्यामति-भूधर विदारो वनिदामिनी ।
दया करी आज अमोरिख के सहाय होउ, पाहि पाहि पाहि जय जय श्रुतस्वामिनी

॥ कलश ॥ मालिनी छन्द ॥

सकल सुकृत स्वानी जग त्राता बखानी ।
परम पद निसानी तत्वदा सार जानी ॥
कुमति तरु कृपात्ती भव्य के चित्त आनी ।
विमल सुमति दानो जैति श्री जैनवानी ॥ १३ ॥

॥ इति श्री शारदा विनय सम्पूर्ण ॥



ॐ ॐ ॐ रचयिताः—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अर्माच्छृपिजी म० ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

१८ १६ २० २१ २२ २३ २४
 देवी माता प्रभावती पद्मावती वप्रा माय, शिवा वामादेवी विशलाजी प्रियकारणी
 धारणी रथणकुंख चौबीस जिनेंद्र माता, दोजे सुखमाता अमी संप हितकरणी २॥

चौबीस तीर्थङ्करों के पिताश्री ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
 नामि जितशुजी जितारिजी संवर मेघ श्रीधर प्रतिष्ठसेन महासेन भूपति ।
 ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६
 सुग्रीवजी दृढरथ विष्णु वासुपूज्य कृतवर्म सिंहसेन भानु विश्वसेनाविपति ॥
 १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४
 शूरसेन सुदर्शन कुम्भजी सुमित्र विजेसेण ने समुद्रविले अश्वसेन ही धृति ।
 सिद्धार्थ नरेन्द्र ये है चौबीस जिनेंद्र तात, उदित उदित कुलवंश चढतो रति ॥ ३॥

चौबीस तीर्थङ्करों की आयु ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०
 पूरव चौरासी लाख बहोत्र साठ पचास, चालीस ने तीस बीस दश दोय एकजी
 ११ १२ १३ १४ १५ १६
 वरस चौरासी लाख बहुतर साठ तीस, दश एक लक्ष शांतिनाथ आयु नेकजी ॥

तीर्थङ्कर
परिचय

१७ १८ १९ २० २१ २२
पंचाणु हजार ने चौरासी पंचावन तीस, दश एक सेंस नेमनाथ आयु लेखजी ।
२३ २४

एक सो व्होत्तर बरस महावीर नाथ, अमी भगवंत आयु धारो सुविवेकजी ॥४॥
चौवीस तीर्थङ्करों का देह भान ।

१	२	३	४	५	६	७
पांचसे वनुष्य भाडो चारसे चारसे साडो तीनसे तीनसे अढी दोयसे प्रमान हे ।	८	९	१०	११	१२	१३
१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७

डेढ़से सुविध शत नेउ असो सत्तरकी, साठ ने पचास पेंतालीस सुसंठान हे ॥
शांतिनाथ चालीस पेंतीस तीस पंचवीस, वीस पंदरा ने दश धनुष्य बखान हे ।
२३ २४

नव सात हाथ महावीर नाथ देहमान, अमृत समान जिन चौवीसको ध्यान हे ॥
चौवीस तीर्थङ्करों के प्रथम गणधर ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९
पुंढरीक सिंह चारु वज्रनाभ बरमजी, प्रद्योत विदर्भ दीन बराहक जाणिये ।								

श्री अमृत
काव्यसंग्रह

रचयिता:—शास्त्र-निवारद प्रौढ कवि श्री श्रीमतीश्वरजी म०

१० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९
 चंद्र कच्छप सुभूम मंदिर जस अरिष्ट, चक्रगुप्त गांव कुम्भ अभिन्नक मानिये ॥
 २० २१ २२ २३ २४ २५
 महि गुप्त वरदत्त आर्षदिन्न इन्द्रभूति, चौबीस जिनंद शिष्य प्रथम बखानिये ।
 गंगाधर लखिवंत चउदे पुरवधार, अमो निशदिन वंदो भाव शुद्ध आनिये ॥

चौबीस तीर्थहरों की प्रथम शिष्याएँ ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०
 ब्राह्मीजी फलगुनी श्यामा अजिता काश्यपी रती सोभामुमना वारुणी मुजसा विचारीदे
 ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
 धारणी धरणी धरा पद्मा आर्य शिवा युची, दामिनी रचिता वर बंधुमती भारी है
 २१ २२ २३ २४ २५
 पुण्यवती अनिलानी जज्ञदिना पुण्यचूला, चंदनवालिका सती शील अधिकारी है ।
 चौबोम जिनंद पंली चेली गुणवंत सती, अमी भावयुत नित बंदना हमारी है ॥७

चौबीस तीर्थहरों के भक्ति संपन्न भूपति ।

१ २ ३ ४ ५ ६
 भरतजी मगर अमितसेन मित्रवर्य शतवीर्यजी अजितसेनजी दयाल है ।

रचयिता:—शास्त्र-निवारद प्रौढ कवि श्री श्रीमतीश्वरजी म०

७ ८ ९ १० ११ १२ १३
 दाववीर्य मघवाजी बुद्धिवीर्य सीमंधर, त्रिप्रष्ठ द्विप्रष्ठजी स्वयंभु गुणमाल है ॥
 १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१
 नरोत्तम नरसिंह कोणाल कुबेरजी सुभूम जीत विजे हरिसेणजी विशाल है ।
 २२ २३ २४
 गोविंद प्रसेनजित श्रेणिक सुनीतिवंत, अमोजिनजी के भक्तिवंत ये नृपाल है ॥८॥

तीर्थंकर ध्यान विधान

रवि पद्मप्रम शशे चंद्र मंगल वासुपूज्य जिनेश्वरा ।
 बुध विमल से अरनाथ तक नमि वीर वसु जिन हितकरा ॥
 गुरु आदि पंच सपास शीतलजी श्रेयांस मनाइये ।
 जप शुक्र सुविधीनाथ सुनिसुन्नत शक्ती दिन ध्याइये ॥ ९ ॥

चौबीस तीर्थंकरों के चवन नक्षत्र ।

१	२	३	४	५	६	७	८
उत्तरापाठा रोहिणी मृगशिर पुनर्वसु, मघा चित्रा विशाखा सू अनुराधा जानिये ।							
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
मूल पूर्वाषाढा ने श्रवण शतभिषा नाम, उत्तराभाद्रपद रेवती प्रमानिये ॥							

१५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३

पुण्य भरनी कृत्तिका रेवती अश्विनी मङ्गल, श्रवण अश्विनी चित्रा विशाखा वृश्चान्तिये ।
२४

दस्तोत्तरा चक्रमें वीरश्री च्यवन जाण, असी या चक्रे यथाशक्ति तप ठानिये ॥

चौबीस तीर्थंकरों की जन्मभूमि ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७

इक्ष्वाकूमि अयोध्या सावन्धी अयोध्या जाण, कंचनपुर कोसंबी वाणारसी धाररे
८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५

चंद्रपुरी काकंडी महिलपुर सिंहपुर, चंभा कंपिल अयोध्या रत्नपुरी साररे ॥
१६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३

इत्थिणा ने गज नाग मिथिला औ राजगृहो, मथुरा सोरोपुरी वाणारसी विचाररे
२४

महावीर कुंडलपुरी में यो चौबीस जिनराजकी जन्मभूमि असी सुखकाररे ॥१॥

चौबीस तीर्थंकरों के लक्षण ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८

गुण गुणम गज हय कपि भालंको, पद्म कंज स्वस्तिक मयंक चिन्ह गात्रे है ।

श्री यमून

दाय्यमंत्र

स्मरयिताः—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीच्यपिजी म०

तीर्थंकर

परिचय

[६७]

श्री अमृत
काव्यसंग्रह

६ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७
मकर शीवत्स गेंडा महिष वाराह जाए, सीचाणो सुवज्र मृग एलक सुहावे है ॥
१८ १९ २० २१ २२
नंदावर्त कलश कच्छप मुनिसुव्रत के, नीलोत्पल शंख नेमनाथजी को पावे है ।
२३ २४
पार्श्वनाथ सर्प महोवीर सिंह लच्छन है, अमी प्रभु चरणो में शोसकों नमावे है ॥

चौबीस तीर्थङ्करों का छद्मस्थ काल ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०
सहस्र वरस वोरा चउदा अठारा वीस मास खट नव चार तीन दोय मास है ।
११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
एक एक मास तीन दोय एक एक वर्ष एक मास नवम लिल एक पोर ग्यारे मास खास है
२१ २२ २३
नवमास चौपन दिवस नेमनाथ जान, त्रासी रात पार्श्वजी छद्मस्थ पदवास है ।

२४

साड़ी चारे वर्ष एक पक्ष वर्द्धमान प्रभु, शुक्ल ध्यान ध्याया अमी केवल प्रकास है

तीर्थङ्कर

परिचय

स्वरचितः—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री श्री अमीन्हाजी म०



चौवीस तीर्थङ्करों के केवलज्ञान वृत्त ।

- १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
- सप्तवर्षी शाली राजादत्तो प्रियंगु ने, सप्ताह सरस नाग = महिला प्रधान है ।
- ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८
- द्विवृत्त पांडल जंबु सु अश्वत्थ वृत्त, दहिवन नदी तरु भिल्लक मुश्यात है ॥
- १९ २० २१ २२ २३ २४
- त्रिवृत्त चंपक वकुल तरु, वेडस धातकी शाली वृत्त वर्द्धमान है ।
- २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२
- आम्र ने अशोक वर चंपक वकुल तरु, अमी लोकलोक प्रकाशक पाया दिव्यज्ञान है

आम्र ने अशोक वर चंपक वकुल तरु, अमी लोकलोक प्रकाशक पाया दिव्यज्ञान है

- १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
- चौरासी पंचाणु एक शत दो एकसो ग्यारा, शत एक सोने सात पंचाणु विचारी है
- १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७
- त्राणु अठ्यासी वियासी सत्तोत्तर गुणंतर, सत्तावन पचास शत पेंतालीस धारी है ॥
- १८ १९ २० २१ २२ २३ २४
- तेतीसने अष्टवीस अठारे सतरे ग्यारे, दश ग्यारे महावीर धोर गुणधारी है ॥
- २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२
- चउदेसे वावन चौवीस जिन गए ईश, अमो कर जोडी सदा वंदना हमारी है ॥

स्वरचितः—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीन्हाजी म०

श्री अमृत

काव्यसंग्रह



चौबीस तीर्थङ्करों की केवली संख्या ।

सेस बीस बाबीस पंद्रा चौदा तेरा वारा, ग्यारा दस सेस साड़ी सात गुणवंत हे सात सोड़ी पट षट साड़ी पंच पंच साड़ी चार त्रेतालोससे बत्तीससे महंत हे । अठारोसे बाबीससे अठारोसे सोले शत, पंद्रासे पारस हजार सार सन्त हे । सातसे श्रीवीरजिन केवली मुनीश हुवे, करम खपाय अमी सादिया अनंत हे ॥

चौबीस तीर्थङ्करों की साधु संख्या ।

सहस्र चौरासी एक लक्ष दोय तीन लक्ष, तीन लक्ष बीस सेस साधु गुणधारी हे । त्रिलक्ष हजार तीस लक्ष तीन अठारो दोय, एकले चौरासी सेस बहोत्र अधिकारी हे ॥ अड़सठ अासठ चौसठ ने बासठ साठ, पचास चालीस तीस बीस सेस जारी हे । अष्टादश सोला वीरनाथ के चौदा सहस्र, अमी भावयुक्त नित्य वंदना हमारी हे ॥

चौबीस तीर्थङ्करों के निर्वाण नक्षत्र ।

अभिजित मृगशिर आर्द्रा पुष्य पुनर्वसु, चित्रा अनुराधा जेष्ठा मूल श्रेयकारी हे । पूर्वाषाढा धनिष्ठा उत्तरा भाद्रपद जाण, रेवती रेवती पुष्य भरणी ॥ कृत्तिका रेवती भरणी श्रवण अश्विना चित्रा, विशाखा ने स्वाति सुनक्षत्र साताकारो हे करम खपाय अमी पाया निर्वाण पद, चौबीस जिनेंद्र सदा वंदना हमारी हे ॥१८

॥ इति श्री तीर्थङ्कर परिचय सम्पूर्ण ॥

श्री अमृत

काव्यसंग्रह

श्री तिलोकाष्टक

उत्तम व्रत धारे दूर पातक हरन हारे । विपत्ति विहारे आग अमृत के क्यारे श्रे ।
 ज्ञान संयम मतवारे दान करुणा मतवारे, वित उज्वल हितवारे पंकदूषणते न्यारे श्रे
 तन्त्रमारग उचारे क्रिये कुमतिसे कितारे, होन शिवके दुलारे सुमति के प्राणन्यारे श्रे
 वचन अमृत उचारे अमर धामको पधारे, वे तिलोकरिख स्वामा जगजीव रखवारे श्रे ।
 मोत नातुके नाने नहीं रहे जग छाने विश्रमाही प्रगटाने जाम महिमा बखाने हे ।
 मुधा-वच सुनकाने घने जीव हरखाने, दया भाव उर आने जैन तत्वको अरसाने हे,
 क्रिया दान देत दाने मोक्ष मारग बताने, जिनराज गुण गाने नहीं नेक अरसाने हे,
 आज अमृत गुण जाने वे तिलोकरिख दाने, दाय। छिनमें बिलाने मेवइंद्र उयों छिपाने हे ।
 मनमें बैराग धार त्याग के संसार शिव मार्ग चित्त लाग सब पातकते न्यारे श्रे ।
 उड़े वड़े भोगे जैनागम अनुरागे सागे, आपके प्रताप आगे मिथ्यामति हारे श्रे ।
 वड़े वड़े पंडित के खंडित क्रिये हैं मान, अमृत बखाने धर्म दीपक उजारे श्रे ॥३॥
 महा गुणवारे ज्ञान-क्रिया-धनवारे वे तिलोकरिख स्वामो जगजीव रखवारे श्रे ।
 सकल संसार मुख जानके अनित्य चित्त, त्याग भाव धारी हितकारी शुभ संत है ।
 आश्रय प्रसाद टार राग द्वे पादि विदार, विषय कषाय लाय ठारी उवसंत है ॥
 धारे जिनकेन मोक्ष पंथ मुख देत ऐन, देखत दीदार भव्य हिय दुलसंत है ॥
 असीरिख कहे पाल संजम विशुद्ध चित्त, स्वामीजी तिलोक सुरधाममें वसंत है ॥

श्रीतिलोक
 अष्टक

रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीरुपिजी म०
 [१०१]

श्री अमृत
 काव्यसंग्रह

श्री अमृत
काव्यसंग्रह

वहे गयो जगत जाल पातकतें दूर शूर, धर्म दया मूल भेद रसनातें के गयो ।
के गयो अनेक मत आगम के भेद भार, अमृत जिनवेन चंद आननतें चे गयो ॥
चे गयो अमर धाम आतस आराम काम, घने भव्य जीवनको ज्ञान दान दे गयो ।
दे गयो सुमत चित्त अमृत अखंड सो तिलोकरिख स्वामी गुणनाभी एक वहे गयो ॥
गीता-छन्दः—कुमति-तिमिर-दल-दलन स्वामी धर्म-दीपक सम हृष्ट ।

शुद्ध जैन आगम भेद अमृत सार रसनातें चष्ट ॥

भवि जीव को दरसाय शिवभग जैनमत धारी किए ।

उपकारी धन्य तिलोकरिख गुरु आप सरवासी भए ॥ ६ ॥

दयाके निधान भय्य जीवनके प्राण औ सुजान ज्ञान ध्यानमें विमग्न गुणधामी थे ।
वाल ब्रह्मचारो महा दुष्कर आचारी सार काव्य कलाधारी हितकारी विसरामी थे ॥
सुधा सम वाणी मृदु सवन के शाता दानी, देय उपदेश जीव तारवे के कामी थे ।
अमृत रटत नाम लेतेही कटत पाप, ऐसेही प्रतापी श्रीतिलोकरिख स्वामी थे ॥७

तिलोक के नाथ की आन गहे उर, संजम ले चित्त होय विशोक ।

विशोक हिये तप चारित पालत, टालत पाप अनथ विलोक ॥

विलोक लिये जिनवेण भलोत्रिय, वंदत भव्य सदा देह धोक ।

धोक “पियूप” दिष्ट तिहुँ काल छुपाल कृपा कर स्वामि तिलोक ॥ ८ ॥

॥ इति श्री तिलोकाष्टक सम्पूर्णं ॥ [श्री सूर्य मुनि महाराज से प्राप्त]

श्री अमृत
काव्यसंग्रह

हिंसामति-हितशिक्षा ।

शासन्तायक सुखदाई सब जीवन को, निरबध बाणी उपदेश फरमायो है ।
 इहाँ काय जीव निज आत्म समान जान, दीजे न आसता यही भेद दरसायो है ।
 जीव दया धरम यों सवही पुकारत है, देखो जैन आगम में ठाम ठाम गायो है ।
 अमीरिख कहे मति कुमति ने हती तेरी, हिंसा मत थापी तेरे हाथ कहा आयो है ॥
 धारो जिन चैन जीवदया सुखदेन जाते पावे सुख चैन सबे कष्ट मिट जावेगो ।
 हिंसामें धरम थाप बांधेगो करम आप, पाप के प्रताप से संताप दुःख पावेगो ॥
 कीजिये विवेक तेक दीजे यह टेक छांड, एक दया धर्म तोहि मोक्ष पहुँचावेगो ।
 आवेगो न सीधे राह पावेगो तू सीधे फल, अमीरिख कहे रोय रोय पछतावेगो ।
 मुने नहीं बानी कुमतिके ग्रंथमानी निज शुद्धि विसरानी ताते उंयो मत धारयो है ।
 मुन तुन टीका क्रिया करुणाका भाव फीका, सम्यक्त्व अंकुर जड़ मूलते उखारयो है ।
 हिंसा माही राचरह्यो भूठो मत सांच मानी काचके भरोसेसार चिंतामणि डारयो है ।
 अमीरिख कहे भाई विना पहचाने धर्म, सुनरे सयाने नर जन्म क्रयों विगारयो है ।
 चैत्य शब्द देखे तहां ठाने जिनमूर्त को, मोह मद अंध फंद रचे ग्रंथ भूठे क्यो ?
 अष्ट द्रव्य पूजा और सतरे प्रकार आदि भाखत निःशंक शुद्ध-भारग से रुठे क्यो ?
 धरममें हिंसा करे हरख प्रशंसा चित्त लावत न संसा शंठ जानि विष धूटे क्यो ?
 अमीरिख कहे निराधार दीन प्राणिको, ऐरे हो अज्ञानी तू निशंक होय लूटे क्यो

श्री अमृत

काव्यसंग्रह

ॐ अमृत
काव्यसंग्रह
श्री अमृत

धन्य वीतराग दीने आश्रवको त्याग त्याग कुपुरुके केने पाप दाग तू लगावे क्यो
ढोलत सचित नीर जिनको स्नान नाम, सुगढ कुंडल तन अंगिया रचावे क्यो
मुद्रा कर ध्यान फेर होयके अजान आप, कोमल कुसुम चूंदी सिरपै चढावे क्यो
अमीरिख कहे भोला लेत अरिहतनाम, जीवनके लूटी प्राण भवको बढावे क्यो ?
दया दया दया सब आगम पुकारी कहे, तापर भी हिंसामत तेरे घट व्यापे क्यो
करनो करानो अनुमोदन त्रियोग त्याग, कड्डो चीतराग ताके वचन उत्थापे क्यो?
हिंसा उपदेश देके बांधे सिर पाप पोट, मोक्षफल दातास मकित मूल कापे क्यो
अमीरिख कहे जैन जैन सुनि होय ज्ञानी, ऐरे अभिमानी भोला हिंसा-मत थापे क्यो
फूलके चढाय फल बोले उपवास स्वर्ग, हनिके अतंत जीव साता सुख मागे क्यो
शङ्करके भांवे लोन डारी पय पीवे कोई,विना वस्तु भाव होतो खारो पय लागे क्यो
संहरि वंधाय ठाय प्रतिगा जो मोब होय, चक्री जिनराजा एतो संपदरिद्ध त्यागे क्यो
अमीरिख कहे भाव वस्तुके साथ जान, समझी अजान होय पापे अजुरागे क्यो
निरवद्य वाणी जानी सुधासम सातादानी, पाय धर्म जैन जैन हिंसा विप घोले क्यो
हिंसा सिद्ध करिवेको नानाविध युक्तिसाज, जाहरि आवाजसे निशंक होय बोले क्यो
कथी कथी भूटे पाठ भोले को सुलाय बाट, ले जा कुघाट बाट दुर्गलिकी खोले क्यो
अमीरिख कहे भोला पायके अमूल्य धर्म, कर्मवश होय दया अमृत-रस दोले क्यो

हिंसामति

हितशिक्षा

[१०४]

ॐ अमृत
काव्यसंग्रह
श्री अमृत

श्री अमृत
काव्यसंग्रह

करम के सारे शिवमारग से न्यारे, दिया मूल से उखारे छहों कायको संहारे है ।
 हारे हैं अमोल भव कुगुरुकी धारे केन, एन मग त्यागी धारे शीघ्र अघ भारे हैं ॥
 आगम उचारे वै विचारे ना मरम नीत, राग काज हने जीव मोद मच धारे है ।
 अमीरिख कहे अंध मंद मतवारे बने, जैन मत वारे ऐसे बने मतवारे हैं ॥६॥
 सावद्य रु निरवद्य ओं वाणी से परख परे, करताका हार्दिक भाव सो जनाये है ।
 सावद्य ना उपदेय यामें नहीं संशय तो, वीर अनुयायी कैसे सावद्य सुनाये है ॥
 देखो ज्ञान-नैनसे विचारो पक्षपात छोडो, आचारांग आदि जहां नंबर गिनाने है ॥
 यामें तो देखो प्रथम रहे ना अधूरो काम, अमृत सब ठौर वीर वचन मनाये है ॥
 मत भेद लुब्ध, तासे ग्रंथजाल ऐसी बढी, कहुँ क्या धनाय वात कहे ते लजात है ॥
 प्राकृत संस्कृत आदि भाषामें अनेक ग्रंथ, कथिके प्रसारे जग जाहिर जनात है ॥
 सावद्य आदेश उपदेश भरपूर ऐसे, निमित्त वेदांग नाम लेते सकुचात है ।
 कोक जैसे निच ग्रंथ करता श्रीजैनाचार्य, यातें क्रोड वातकी मैं एकही सुनात है ॥
 काहेको बढाये रागहृष क्लेश पक्षपात, होय कर्मबंध जो दू ज्ञाता तो पिछानी ले ॥
 हायेना निवेरो निरकाल लग लड़बेसे, प्रथम सावद्य निरवद्य भेद जानि ले ॥
 परे मतवारे प्यारे आतम को तारयो चाहे, एक मेरी सीख हितकारी हिय ठानि ले ॥
 कलिके आचारजके ग्रंथ भ्रम जाल तोरि, अमृत एकादशांग वीरवाणी मानि ले ॥



निश्चय-व्यवहार-चर्चा

सात नयसंज्ञी पैला चार व्यवहार धार, निश्चयको पावे व्यवहार उपकार है ।
 विद्याधन गमनादि क्रिया बिन उद्यमके. होय ना कदापि निश्चे भाविके आधार है ।
 बादल हुइ ने मेंह बरसे यों व्यवहार. नियत प्रधान तो भी उद्यम के लार है ।
 स्याद्वाद् नयसे विचार असीसार धार, आगममें निश्चय से मोटो व्यवहार है ॥
 समकित ज्ञान तप संजम जो सांचे मन, उद्यम से निकचित रस मंद भार है ।
 छिनमें निवृद्धित करम-दल टल जाय निश्चय रूपक श्रेणि चहे नरनार है ॥
 कथंचित् रथानक प्रधानता दिचारो उैन शारुन चले है दोय नयके आधार है ।
 स्याद्वाद् नयसे विचार असीसार धार, आगम में निश्चय से मोटो व्यवहार है ।
 कुंडरिक तप-फल हारथो व्यवहार तज्या, नरक स्थिधायो ज्ञाता अंग अधिकार है ।
 सात भांत आयु दूटे टाणंग सूत्रकी साख, वीर व्यवहारो लथो औपध आहार है ।
 मरुदेवी भावना विचार सोहो व्यवहार, केवली भरत वेप संजम आचार है ।
 स्याद्वाद् नयसे विचार असीसार धार, आगममें निश्चय से मोटो व्यवहार है ॥
 भागमें जो लक्ष्मी तो निश्चय मिलेगी आय, इत एत फिरत कथो करत व्यापार है ।
 बाहिर दे मेली धन थैली जो निश्चय दड, ताला कुंटा करत कथो जडित किवार है ।

निश्चय
व्यवहार

[१०६]

श्री अमृतः काव्यसंग्रहः श्री अमृतः काव्यसंग्रहः श्री अमृतः काव्यसंग्रहः श्री अमृतः काव्यसंग्रहः

श्री अमृतः

काव्यसंग्रहः

श्री अमृतः काव्यसंग्रहः श्री अमृतः काव्यसंग्रहः श्री अमृतः काव्यसंग्रहः श्री अमृतः काव्यसंग्रहः

५५ ५५ ५५ निरचयिताः—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री श्री अमी चृषिजी म० ५५ ५५ ५५

निरचय
व्यवहार

निरचे राखी छान्डे व्यवहार तो न चले कार, यत्त राखी कोहे ज्यो दीवालो साहूकार
 स्याद्वाह नयसे विचार अमीसार धार, आगममें निरचयसे मोटो व्यवहार हे ॥१४

केने व्यवहार केते निरचय को ताणे पै न जाणे परमार्थ सोही लडत गिवार हे ।
 दोय चक्र चाले रथ अंध पंगु नेत्र पद, माने समवाय न्याय सापेक्ष विचार हे ।
 रवाई केनेत्रा मम दोन्नों हाथे राखे ग्रही, गोण-पुढ्य कोधा मिले मक्खनको सारहे,
 स्याद्वाह नयसे विचार अमीसार धार, आगममें निरचयसे मोटो व्यवहार हे ॥१५

सामने का प्राप्त भी न जाय मुखमाँहो विच उद्यमके काम सिद्ध होय ना लगार
 अनेकान माने तांको मस्यक वखाने प्राणी एक पत्त ताणे सोही मिथ्यात्वी असार
 बीतराग वाणा में एकान्त की निशानी नाहो, सुगुणा विवेकी करे परल विचार हे ।
 स्याद्वाह नयसे विचार अमीसार धार, आगममें निरचय से मोटो व्यवहार हे ॥१६॥



श्री अरुण
काव्यमय्यद

५५ ५५ ५५ निरचयिताः—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री श्री अमी चृषिजी म० ५५ ५५ ५५

प्रकीर्णक

निंदा त्यज्जनोपदेश ।

आप घर बंधे नहीं बंधे है पाताल नभ, पग तल लागे लाय तांको तो बुझावरे ।
कुंभजल छरणे न निवाण छाणवेकी बणे, नभ न डंकाय घर चूवे सो वचावरे ॥
भेदिनी मढाय नहीं कंटक विणाय कैसे, या हित सुजान तूं निहारी धर पांवरे ।
औगुण विराने कथी निंदा पाप बंधे सती, अमोरिख अपनी निवेइ आप वावरे ॥

॥ दोहा ॥

तुम्हे पराई क्या पड़ी, तू अपनी हो निवेइ ॥
तेरी नाव दरियाव में, चालि रही सो खेइ ॥ १ ॥

पापीके पड़ोसी बसी क्यों तूं दिलगीर होय, तेरो ना विगाइ कछु करेगा सो भरेगा
परवांक काड़े तासे अपने क्या लाभ होय, आपेको तपास भैया तभो काज सरेगा
दूसरे की धूल मत डार सिर अपने तूं, चीकणा करम बांधी दुर्गति में परेगा ।
नाना भंत सांग कष्ट करिके सुखावे देह, अमोरिख होगा गुणग्राही तोज तिरोगा ॥

श्रीवीर प्रभु के दश स्वप्न ।

आदि पिशाचसे युद्ध कियो प्रभु दो विध कोकिल पंखी सुहावे ।
रत्न की माल विशाल सुगोकुल पद्म सरोवर पंकज छाये ॥

शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीरखण्डिजी म०

पार भये सुजसे उदधि रवि मानुष उत्तर आति विदाये ।
मंरुकी शीश विराजित वीर दशों स्वपने के प्रसु फल पाये ॥ ३ ॥
दश स्वप्नों का फल ।

मोह हन्थो वर उज्वल ध्यान विचित्र ही भावको जान लिये है ।
दो विध धर्म थपे चउ तीरथ चौविध देव ही सेव किये है ॥
पार संसार पमेलियो केवल त्रिजग में जसवाह छये है ।
परिषद् साही दियो उपदेश अमीरिख गों फल वीर लिये है ॥ ४ ॥
राम रेवाड़ी करे रघु सेवक राधे गोविंद को रास रचावे ।
मोमित ताजिया जैनी रचे रथ मांगि के भूपण वस्त्र पेनावे ॥
न्हावत गावत वाजत नाचत वे हाय दोस्त के सौर मचावे ।
गाम में केरि अमीरिख तोरि विगारिके धर्म की हांसी करावे ॥ ५ ॥
मंदिर भसजिद् राम खुदा वर गाम धरे गुरु पंडित काजी ।
वं उपवास वे रोजा रखे नित संघ्या करे वे बने है नमाजी ॥
जङ्गमें आव गंगाजल लावत ये करे तीरथ वे बने हाजी ।
पक्ष बंधे अपने अपने रिख अमृत सत्य से साहिव राजी ॥ ६ ॥

पेश्या व्यभिचारिणी दढावे शील पतिव्रत, वधिक अहिंसा सिद्धालको बखाने है ।
कृपण जचावे दान-पुण्य को उदारता को, कामी जन इंद्रिय-दमन मन ठाने है ॥

श्री अमृत
काव्यसंग्रह

शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीरखण्डिजी म०

प्रसिद्धी सद्गुणम मूर्ख विद्या पढिबेको, ब्यसनी त्यजावे खोट ताको सब जाने हे ।
अमीरिख ऐसे पर उपदेशको सुनावे पिण, आप विन साथे नहीं बात कोई माने हे

शोध सीमांसा

पानी हुको शोध कैसे कीजिये विवेकी भान, सूतक सुभावइ सदा मेलही धुवावे हे ।
रेसमका सोला भाला कीड़ेसे उपज होत, शंख कोडी मोर पीछी हड्डो संग आवे हे ।
खरबूजे तवूजे के काछेमें क्या शोध पड़े, काँदे मूले लसुन के स्वाद को सरावे हे ।
अमीरिख पुद्गलके लक्षण न जाने शठ, शोध शोध गावे कछु भेद नहीं पावे हे ॥
मेवा दाख मधु गुं द खांड गोल लूण हींग, शबैत सुरञ्जा प्राय भ्लेच्छही वनवे हे ।
डॉक्टरकी दवा खास वनत खिलात माही, उत्तम कुलीन कोई पावे कोई खावे हे ॥
चाय घृत खावे कीड़े युक्त फल चावे, औ तमासपत्र पीते खाते सुगहू न आवे हे ।
अमीरिख पुद्गलके लक्षण न जाने शठ, शोध शोध गावे कछु भेद नहीं पावे हे ॥६
भगीकी पातल चाट थान धसे पंपातमें, न्हाये विन विहो चाका माही धस जाने हे
चूहे भरे मुख पंठी थाली चाट नोच वर, उच वर आय दूध आयि अभड़ावे हे ॥
न्हाय धोय सोला पैन पंगतमें बाथ सरे, मांकी आय बैठे कैसे सोध गिता जावे हे
अमीरिख पुद्गल के लक्षण न जाने शठ, शोध शोध गावे कछु भेद नहीं पावे हे ॥
त्यागिये अभक्ष्य वस्तु और भी अयोग्य सब, कोई भी भिनस विन देखे नहीं खाइ ॥
अंवादि क मांही उपजे हे बस जीव वने, जीव युक्त शाक फल फूल छिटकाइये ॥

श्री अश्विन
शास्त्रसंज्ञ

श्री अश्विन शास्त्रसंज्ञ
श्री अश्विन शास्त्रसंज्ञ

आटे पद पानी छान जीवाणी यतन करो, इंधन को देखे पूजे विना न जलाइये ।
अमंत्रिय शोध करे जो सकल काम, यको नाम शोध और भ्रमणा मिटाइये
मिठारथ राय आयु सत्यापी बाल मात, तिराला दे मात वर्ष पिच्याम्बो विचारियो ।
सुधानजी नेउ नंदीवर्द्धन अज्याणु' वर्ष, सुदसणा वैन वर्ष पिच्याम्बो उचारियो ॥
वशोदाजी नेउ शत पूरण रिपभद्रत, देवानन्दा एक शत पंच सुखकारियो ।
सुनी शिवदर्शनजो पिच्याम्बो वरस ऐके, अमी महावीर परिवार आयु धारियो ॥

शास्त्रार्थ (चर्चा) करने की कला ।

स्थान मत छोड़ो हेतु वचो पको देख लीजे, परिपदा दृढ पंच आपकी विचारिजे ।
पुस्तकको राज मुख्य प्ररुको पकड़ दृढ, गहन संकले पाठ आप ना उचारियो ॥
क्रोध नहीं कीजे बीच बोलने न हीजे किसे, कठिन वचन अति हाम परिहारिजे ।
पेला ना उठीजे उवाय धीरजसुं हीजे अर्थ पेला न पूछीजे कला चरचाकी धारिजे ॥
न्यायी धीर पंडित विवेकी हो मध्यस्थ निहां, राजा हो सुलभ अविवेकी कौतुकी न हो ।
वादी प्रतिवादी समाधान तत्त्व खोजी हांय, अरथ की साक्षी वारंवार मुखसे कहे ।
औसर पिछान बोलो डालो ना कदापि प्यारे, चरचा मे शब्दको पकड़ दृढता गहो ।
अमीरिय याही गांत चरचा करीजे मिल, वदे ना बलेश तंति मौल साधिके रहो ।

श्री अश्विन शास्त्रसंज्ञ
श्री अश्विन शास्त्रसंज्ञ

श्री अश्विन शास्त्रसंज्ञ
श्री अश्विन शास्त्रसंज्ञ

प्रकीर्णक
काव्य

श्री अमृत
काव्यसंग्रह

मध्यस्थ हो विद्वान् धीर अपह्नपती क्षमी गुन्ती ।
जन्वाद् काले एकही बोले मधुर प्रेमी बनी ॥
जो होय अससंजस प्रलापी शिथिल आचारी जना ।
बिन कहे बोले वीचमें उसको भी कर दीजे मना ॥ १५ ॥
हो तत्त्वका निर्णय जहां पर पक्ष का क्या काम है ।
अविरोधता से बोध हो चरचा उसी का नाम है ॥
दोनों तरफ के वचन की रिपोर्ट भी लिख लीजिये ।
होने न पावे क्लेश 'अमृत' वाद्यों मिल कोजिये ॥ १६ ॥

ढंड़ाडी भाषा का काव्य ।

चेतन विचार मन कोय नहीं थारो अठे, जैनधर्म सार एक गुरुजी जतावे छे ।
कुटमरे काज भोरा अठी उठी दोड्यो फिरे, ठगाया करीने माल भेला करी लावे छे
कोडासु आयो भाया कोडाने सिधावसी तूं, मनमें विचार कर केंने तूं लुभावें छे
जम धेर लेगा जदे खाली हाथे चाल्यो जाती, करले धरम असोरिल समभावें छे ॥

रतलामी भाषा का काव्य ।

अरज करां हां गुरु घणा इन वया तोबी, अइयाड़ी पधारवारी दया वी नी करी है ।
मायाजसा आपरेतो शावक नरा हे पण, माणें तो हजर आपरीज बाल खरी है ॥

अर्द्धभागवती भाषा का काव्य ।

अब तो पधारी दीजो वेगही दरस माने, माणी आतमा तो आखी पाप थीज भरी है
 कांह पण गुनो मांसे वयो वे तो कीजो माफ, कहे अमीरिख माणीमें तो भूल नरी है

चउगह भवरुत्वसंसार कंतारे जीवो, भमह अणह काला सुहदुहे लहइ ।
 पुण्णजोग णरजन्म अज्जखित सुकुलं व, दीहाऊ अहीण पंचिदिय कायं लहइ ॥
 सुसाहु संजोग सुत्तरुह परम दुल्लहा, सद्धा संजम वीरियं जिणवायं वयइ ।
 मुक्खमभगं लद्धं सारं गिण्हइ परसं धम्मं, अमीरिखि वय जन्म जरा कट्टं दहइ ॥

चारह मास रत्नेप काव्य ।

वेत भवि धार ज्ञान संजम वैसाय होय, जेष्ठ पद आपाह समान सुविचारिये ।
 श्रवण आगम सुणी धार भद्र पद रोक मन अन्धिन को कालो कपट को टारिये ॥
 मगशिर सिह जस काल गही तेगो सांते पोप पट्काय सहसुनि पद धारिये ।
 फाणुणमें फाग सखी सुमता के साथ खेल, अमीरिख ऐसे वारे मासको उचारिये ॥

एकाग्र-चित्त-प्रशंसा ।

नागरीको चित्त जैसे गागरीके माही रहे, सागरके संग ज्यां सराल मन धरयो है ।
 तटवी ज्यां नृत्य ध्यान अटवी सो करी प्रान, जलि मन पुष्प मकरंद संग अरयो है ॥

श्री अमृत

कान्यसंहर

हठेस्तिग सनधार जय्यो न केवलचन्द्र, रूपचन्द्र पाय तुलीचन्द्रजी कहायो है ॥
 शूरयो भगवानचन्द्र वर्यो सरदारसिंह, दानमल नेमचन्द्र चित्त न वसायो है ।
 असीरिख कहे सुखदेवकी जां आस होय, धारले धरमचन्द्र ज्ञानचन्द्र गायो है ॥
 मनद्वाराम वरा होय वांछत करमचन्द्र, मानसिंह साहदास तासे प्रेम ठायो है ।
 धनराजजी की मन धारत उमैदचन्द्र, भगद्वजी वरा जसराजजी गसायो है ॥
 सुखलाल माहे जीवो रह्यो है भगनमल, उदेचंद आयो धर तवे पद्धतायो है ।
 असीरिख कहे प्राणी कालुरामजी से डर, ज्ञानचन्द्र सीखधार खीमजी कहायो है ॥
 हैसराज कर कर जोइत कनकमल, मनसें हरखचन्द्र अधिक धरत है ।
 फनेचन्द्र आस करे होवत फकीरचन्द्र, गानचन्द्र सेती प्यारचन्द्र तू करत है ॥
 रवृचन्द्र देख देख भाय नहीं जोगराज, उत्तमचन्द्र की चाल छोइके फिरत है ।
 असीरिख कहे नित भजले तिलोकचन्द्र, लाधचन्द्र संग लंके संसार तिरत है ॥
 हीरालाल जैसो पाय करमों का रणछोइ, गोतीलाल सीस छायो तासे गन डर ।
 संतदास देख देख वर्यो है तू तंदराम, खीमाजी कू धार जगनाथ ध्यातु धर ।
 भूलंमिग छोइ तव होवत सांभागचन्द्र, मदनजी त्यागों से आनन्दराम पर ।
 असीरिख कहे चेत चेत माहे जोवराज, दयाचन्द्र धारे सेती होवत अगाररे ॥१७०॥

चोखो धार फांतरे का दृष्टान्त ।

एक दिन चोखो करी मान फांतरा से कहे, छोइदे हमारो संग काद काम आंवेता

प्रकीर्णक

कान्य

गुरु प्रार्थना ।

यद् धर्मं लता जो लगाहै गुरु तिहीं नींच अलं सरसाहंभ्रंजी ।
लाहि औरसर नेक पधार इतें जिन वेन सुधारस पाह्यंजी ॥
गुरुदेव पीयूष सुतेन अरजी इतना न हसैं तरलाहंभ्रंजी ।
इम औरैं हंभारी कु सोइबिहु मुख रंडु गुनी दरसाहंभ्रंजी ॥ ३४ ॥
दरसन दीप दया करिके अहलार भयो चित्त धर्म उद्धारव में ।
दान को लाथ दियो न हगें दिन वीत गये कितने चित्त चावमें ॥
दा अपराध वन्यो हंभारी यह ऐसी न चाहिये धर्म के भाव में ।
काहे पिबूप इते हंभको तरसावत हो रही एक ही गाव में ॥ ३५ ॥

जीव की स्थिति ।

या जिनधर्म विना गति जीवकी काह भई नहीं जाय उचारी ।
राचि रह्यो मन पुङ्गलसें अति ह्याय रही घट भर्म अंधारी ॥
यद्यपि श्रीगुरु के उपदेशा रवि किरना न करे उजियारी ।
सूक्ति परे न कभू तदपि शिव पंथ पिबूप कहे सुविचारी ॥ ३६ ॥

शब्दुषों के तागों पर से आध्यात्मिक उपदेश ।

दासजीको संग पाय धारयो है गुमानचंद्र, फूलचंद्र होय दयाचन्द्र न सनायो है ।

असत
काव्यसंद्रह

श्रीगुरुचरिताः—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री श्रीगुरुपिजी म०

प्रकीर्णक

काव्य

[११८]

श्रीगुरुचरिताः—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री श्रीगुरुपिजी म०

प्रवचिताः—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीश्वरपित्री म०

हठेसिंग मनधार जल्मी त केवलचन्द्र, रूपचन्द्र पाय तुलीचन्द्रजी कहायो है ॥
 भूल्यो भगवानचन्द्र वरयो सरदारसिंह, दानमल नेमचन्द्र चित्त न वसयो है ॥
 अमीरिख कहे सुखदेवकी जाँ आस होय, धारले धरमचन्द्र ज्ञानचन्द्र गायो है ॥
 मलद्वाराम वरा होय बांधत करमचन्द्र, मानसिंह साहदास तासे प्रेम ठायो है ॥
 धनराजजी की मन धारत ज्योदचन्द्र, भगडूजी वश जसरराजजी गमायो है ॥
 सुखलाल साहे जीवो रह्यो है भगनमल, उदेचंद्र आयो घर तवे पछतायो है ॥
 अमीरिख कहे प्राणी कालरामजी से डर, ज्ञानचन्द्र सीखधार खीमजी कहायो है ॥
 ईसरान कर कर जोड़त कलकमल, मनसें हरखचन्द्र आधिक धरत है ॥
 फत्तेचन्द्र आस करे होयत फकीरचन्द्र, मानचन्द्र सेती प्यारचन्द्र तू करत है ॥
 खजचन्द्र देख देख भाग्य नदीं जोगराज, उत्तमचन्द्र की चाल छोड़के फिरत है ॥
 अमीरिख कहे नित अजले तिलोकचन्द्र, लाभचन्द्र संग लंके संसार सिरत है ॥
 हीरालाल जंतो पाय करमों का रणछोड़, गोतीलाल सीस छायो तारें गन डरै ॥
 संतदास देख देख वरयो है तू नंदराम, खीमाजी हू धार जगन्नाथ ध्यातु धरै ॥
 भूलसिंग छोड़ तव होयत साभागचन्द्र, भद्रनजी त्याग से आनन्दराम घरै ॥
 अमीरिख कहे चेत चेत भाई जोवरान, दयाचन्द्र धारे सेती होयत आभारै ॥४०॥

चोखा और फोतरे का दृष्टान्त ।

एक दिन चोखो करी मान फोतरा से कहे, छोड़इ द्यारो संग काद काम आवेगा

श्री अमृत
कान्यकसंभव

रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीरखण्डविजी म०

शारो संग छूटा म्हारो सुकन लेवेगा लोक, वर राज साजनके सीसपै चढावेगा ॥
थालमें परूसी वीर वाला भिन्न सामे धरे, परव दिवस आया सुभले मनावेगा ।
नाना सांत वस्तु लोक चाहसे करेगा सुणो, थाके गया म्हाको धणो आदर वधावेगा
फोतरा रीसाई कहे चौलाजी अरज सुणो, रत्ना कर्कू थाकी नी तो धणो दुख पावोगा
धमाधम भूसला की मार जो पड़ेगा थाके, छूटे साथ म्हारो जद रूपमें रुलावोगा
पाणीमें डुबावे थाने रांधेगा चरुमें घाल, आगमें पचावे और पट्टीमें पिसावोगा ।
कहे अमीरिख मति करो थे चौलाजी मान, म्हारो साथ छोड्या पीछे धणो पछतावोगा
रीस करी चौखा कहे फोकट विचार करे, फोतरा अभागी संग छोड़ी क्यो न जावे है ।
जाणी अपमान चाल्या फोतरा सराप देई, निसंतान हो जो एम वचन सुनावे है ।
एमही विचारो जन संप से वने है काज, आपस की फूटमें विपत दुख पावे है ॥
अमीरिख जुगत लगार्इ सभभाई कहे, संप सुखमूल सभो साजन सुनावे है ॥४३॥

गौ का दृष्टान्त ।

एक माती गाय दूजी गायसु कुशल पूछे, कांप वाई एती तूं क्यो दुबली शरीरको ।
बोली म्हारा मालिकके दया नही मनमाय, नाखत न पूरो घास रहूँ पीवी नीरको ॥
माती कहे वाई क्यो नी आवे तू हमारो संग, जब जारो माती करू मंट भूख पीरको
कह्यो मान गई संग मुख धाल्यो खेत मांही, खावा लागी जब गाय आणो मन धीरको

प्रकीर्णक
काठ्य

[१२०]

रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीरखण्डविजी म०

यत्ना माहीं धरथणी आयो हे चलाय जहां, देखी मातो नाय वाड़ कुंदी गई नास है ।
 सकी नदीं भाग दूजी खेत थणी मारी वणी, लाठी पथरासु मारी दीधी अति त्रास है ।
 वंधन से बांधी नाय पृथ्वत पृथ्वत धर, गाली मुख केतो गयो मालिक के पास है ॥
 करी हे लड़ाई अति लोक बहू मिलया आय, गाय थणी छोड़ाई करीने अरदास है ॥
 रसभोगे गयो धर पथेसु नायको थणी, हींगलो लेईने तस बांध्यो गलमाही है ॥
 पनासाही बांध्यो काठ दीवी हे बहुत मार, फिरत फिरत फेर मिली माती गई है ॥
 पृथ्वत कुशल तैस वाई गोणो पेरयो केम, बोली सुंदी नाय परताप थारो बाई है ॥
 अमीरिख कहे भवि धारिये ज्यंता चित्त, खोटी संगति कियासुं ऐसा दुःख पाई है ॥

जीव रूप द्रोण में पुण्य रूपी मिठाई ।
 जरी के रसमाल में लपेट्टी ऊंचे धरे है ।

एक सेठ दून में मिठाई भरी लायो धर, जूला से कुटायके अशुचि ठौर परे है ॥
 खायके मिठाई दूनो फेकत वजार बीच, जूला से कुटायके अशुचि ठौर परे है ॥
 तैसे जीव दूना रसा पुण्यकी मिठाई भरी, आदर वधारे लोग खसा खसा करे है ॥
 पुण्य खिस जात तब भ्रमत हुगति मांदी, अमीर्यदिप कहे नाना भाति दुख भरे है ॥
 एक सेठ कहे प्रिया लीजे एक भैस मोल, बोली खिया वेगो करो विलंब लगायो क्यां ?
 पति दरसाई सब दूधकी मलाई भेरी, सा कहे आवेरं भैस तरी तुम खायो क्यां ?
 राड भेटवकी एक नर फोड़े भाजतको, भैसते उजाड्यो खेत गाली भो सुनावो क्यां ?
 सेठ कहे कैसी कदी भैस है हमारी तब, कहे अमीर्यदिप युं ही भगदो मचावो क्यां ?



रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री श्रीमतीऋषिजी म०

श्री अष्टत
काव्यसंग्रह

एक जड़मति को सकल पुरवासी मिल, बोलत मूरख नाम ताम दुःख आययो है ।
गयो परदेश भयो तपित आरत ध्यान, अंजुलि को मांडी जल पीवत अधानयो है
धून्यो तिन शीस एक वाई कह्यो मूरख है, पूछत है तासो मोही कैसे पहिचानयो है ।
ताम पण्हारी कहे प्रकट उचारी बात, कहे अमीरिख तोय लक्षण ते जाएयो है ॥

एक नृप जीतवेको शत्रुदल लायो तामें, देखके अधिक गज राजा यों विचारे है ।
सिंह देख भागे गज सोची पकराई श्वान, खाल पहेराई किये सिंह अनुहारे है ॥
चढ्यो सजीसेना किये आगे जुटे सिंह रूप, हाथी देखी भूंसा श्वान राय दल हारे है
कहे अमीरिख चित्त माही सुविचार देख, गुण विना वेप कछु काज नहीं सारे है ।

एक सेठ भाड़ेकी टुकान ले व्यापार करे, लाभ जाती सार करे भाड़ो भी चुकावे है
करत व्यापार पन जाने नहीं लाभ कछु, तुरत ही छोड़के अनेरे ठाम जावे है ॥
ड्यापारो समान संत भाड़ेकी टुकान देह, लाभ जानी सार करे साता उपजावे है ।
जाने नहीं लाभ तब देह वोसराय देत, अमीरिख लाभ धर्म मोलको कमावे है ॥

एक सिंह कानलमें थापद विनाशे तदा, मिलि सब जांतु वारी बांधी सुविचार के ।
आयो वृद्ध श्याल वारो गयो है विलंब करी, कुपित हृदये पूछ्यो सिंह ललकारके ॥
श्याल कहे स्वामी आज घेरयो अन्यसिंह भोग, सिंह कहे कित संग चाल्यो हित धारके
कहे अमीरिख कूप जलमें बतायो रूप, मरयो सिंह प्रतिबंध निजको निहार के ॥

रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री श्रीमतीऋषिजी म०

प्रकीर्णक
काव्य

[१२२]



सिंह भय एक मृग भारयो पङ्क्त्यो पाश माही, युक्ति करी छूटो दूजी जालमें बंधानो है करके प्रयास तोड़ो पलायन भयो तब, आगे दावानल देखी अति घबरानो है ॥ वची भागो नासे आगे छोड़्यो है वंदी कमान, धारो अकुलान एक कूपमें गिरानो है करी क्यो न रह्यो अमोरिख नाना भांतं युक्ति टले नहीं काल चोट निरचै करी जान्यो है पालकने श्याम दीय तंद्रसे गोविंद कहे, देऊँ अथ्य पेला पद वंदे नेमि स्वामी के । पालक तुरत गयो वागमें दर्शन काज, गेर रही भावे तब वंदे सिर नार्मी के ॥ पृष्ठे हरि नेम से प्रथम वंदे किन पाय, द्रव्य कहे पालकने भावे श्याम पार्मी के । श्याम अश्व पार्मी दरसायो भोलो भावही में कहे अमोरिख धारो वेण शिवगामीके शिलावट एक दत्त उदर निमित्त जाय, हुं गरसे लायो अच्छो पत्थर निहारके । गाय सिंह मूर्ति यो तीनोंदा वनाया रूप, धरे यथायोग्य स्थान सुविध सुधारके ॥ गाय दूव देव और सिंह उठके मारे ये, दोनों सत्य होय तो ये मूर्ति दे तारके । दीय है अस्त्य तीजी सत्य केमें दीय ज्ञानो, कहे अमोरिख सोची हियमें विचारके ॥

कपट करने का फल ।

श्याल कहे ऊँट मामा चालो ने चणुके खेत, कपट न जाण्यो ऊँट संगही सिधायो है श्याल कहे आया खेत बीचमें पधारो क्योनी श्याल ऊँट दोनों आछे र चूँट खावे है जंबक भरयो पेट खेत धणी आयो जाणी, बोल्यो मामा मोयतो भूकणवाय आवे है ऊँटकी न मानो श्याल भूकंके गयो है भाग, लाठी पत्थरा की मार ऊँट मामाखावे है

रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीरुज्जिजी म०

ऊँट मामा दाव राखी भाणुजाको एक दिन, कहे गोठ कीजे एक खेत आर्यो पायो हे ।
मानी मनवार चालया मारगमें आर्य नदी, कैसे पार पोचुं जल अधिक भरयो हे ।
पीठपै विठायो ऊँट आयो मभधार कहे, भाणुजाजी म्हाते तो लोटणवाय आयो हे ।
कहे आसीरिख मभधार में बह्यो हे रयाल, कपट कियायुं जीव दुःख ऐसो पायो हे ॥

मधु-विन्दु टटान्त ।

चउगाति कानन में पंथी जीव काल गज, नरभय वट आयु शाखा लटकाते हे ।
कूप है निगोह अहि क्रोध मान दंश लोभ, अजगर दोग रागद्वंष भीम जाती हे ॥
सुरे दिन रैन परिवार मधुपत्नी सस, विद्याधर संल उपदेश फरमाते हे ।
आसीरिख कहे विपै सुख मधु विंदु सस, सह एते संकट में मूढ ललचानो हे ॥१८

अंध गज दृष्टान्त ।

पंच जाति अंध गज देखनेको आये तहां, पेले गयो पांव थंभ जैसे दरसायो हे ।
दूजे गयो कान कहे सूप सस जानो गज, गही तीजे केल थंभ सस तिन गायो हे ।
चौथे गही दंत कहे सुसल ससान करी, पुच्छ गही पाचमें सो वांस के सुतायो हे ।
आसीरिख कहे तिनहें ठानी रार आपसमें, दगावंत न्याय कही भगडो सिटायो हे ॥
पेले यों कहत कालही के वश जानो सब, त्योही नर दूजे ने स्वभाव सस भाख्यो हे ।
तीजे कह्यो भावी चौथे करम प्रधान कह्यो, पंचमें उद्यमवश मानी मत दाख्यो हे ॥

श्री अश्वत्

कान्त्यसंग्रह

श्री अश्वत्थः—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीश्वरिणी म०

आपसमें पांचों ही विवाद करे अथ सम, एक एक बात गृही पक्ष दृढ रख्यो है ।
सरवज्र दगावंत दाख्यो सरवंग नय, सो ही स्याद्वाद से अश्वत् अभिलाख्यो है ॥
हैंस-काक दृष्टान्त ।

हैंस काक द्रोय आथ बैठे एक वृत्त पर, आपस में स्नेह सिए ठाख्यो सुप्रसंगसे ।
ताही समे भूप एक जानी शीत छाथ बैठो, विट करी वाथस लगी है नृप अंगसं ॥
कोपी एक सारथो बाण थायल वहे परयो हैंस, अहो श्वेतकाक भूप दाखत उमंगसे
अमीरिख कहे नहीं काक हैंस हैं नरेश, पायो में सरण नीच वाथसके संगसे ॥६१
भूपक पन्नग दृष्टान्त ।

जो जो जिए अंतरमें शुभाशुभ होनहार, तांही को भिटावे ऐसो नहीं कोई जगमें
काहू चूहे चुप धरो पन्नग पिटासो काट्यो, उद्यम करयो पै जाथ पड्यो उवसगममें
कीनो नहीं उद्यम तथापि अहि पेट भरो, वंधन से छूट के सिंघायो सोही भगमें ।
अमीरिख कहे ऐसे ससभने सुजान जन, धारया जिनवेण सुख होथ पग पगमें ॥
श्री नेमिनाथजी और राजीप्रतीजी के नौ भव ।

धनराय धनवंती पंले देवलोक देव, चित्रगति विद्याधर रत्नवती नारो है ।
चौथे कल्प अप्राजित राथ प्रीतिमती राणी, ग्यारसे स्वरगे दोनु देव प्रीति धारो है ।
शंखराय जशोमती राणो दाख पाणी दियो, अनुन्न विमान चौथे देव अचतारी है ।
नेमिनाथ राजीमती सुक्तिमें पधारया दोई, कहे अमीरिख सदा वंदना हमारी है ॥

प्रकीर्णक

काव्य

[१२५]

श्री अश्वत्थः—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीश्वरिणी म०

दीक्षा देने के लिए अग्रोग्य ।

^१ क्रोधो ^२ मानो ^३ दंभी ^४ लोभी ^५ कौतुकी ^६ पापिष्ठ धूर्ता, ^७ हीनाचारी ^८ नपुंसक शिष्य ^९ नदीं कोजिये
^{१०} वेश्यासुत ^{११} अंधो ^{१२} बेरो गूंगो ^{१३} छिन्न अंग कुष्ठो जाति-कुल-तुद्धि-बल हीन ना पतीजिये ।
^{२०} अण्डलखित बाल ^{२१} वृद्ध ^{२२} अपराधी ^{२३} व्याधि, ^{२४} उनमत्त दास ^{२५} दुष्ट मोल ^{२६} नदीं लोजिये ।
^{२९} गर्भवती ^{३०} धाय ^{३१} रिणो ^{३२} निंदक ^{३३} मिथ्याती द्वेषी, ^{३४} अमीरिख यांकी ^{३५} जैनदीक्षा ^{३६} नदीं दीजिये

संसार के मुख्य स्वप्नवत् हैं ।

एक महारंक नर भग्न्यो है नगरी माही, शक्यो तब सूतो आय तरुवर छांय है ।
 नींद कश हुवां तब लाधो है सुपन तस, हुवो चक्रवर्ती छत्र चामर धराय है ॥
 गज रथ तुरी देश देश के भूपाल जीते, कामिनी के संग करे केल मेल मांय है ।
 जारयो तब वोहो रंक तैसे ही संसार रीत, अमीरिख कहे कैसे रह्यो तुं लोभाय है ।
 एक निरधन नर दंढ्यो है सुपन रेन, तामें एक धनको भंडार तिन पायो है ।
 बांधी है हवेली सार देश देश गाम गाम, कीनी है टुकान अति वणज चलायो है ।
 पुरमें आदर मान खमा खमा कहे सहैं, चाकर अनेक नारी संगमें लुभायो है ।
 जारयो तब निरधन मिलत न पूरो अन्न, अमीरिख कहे ऐसो संसार कहायो है ॥

असुत
 काव्यसंग्रह

एक महाभूद के स्वप्नवत् संसार ।

एक महाभूद अविवेकवत् स्वप्न में, हुबो अति चतुर परिद्धत सरदार है ।
सिद्धांत पुरात वेद न्याय तर्क ग्रंथ कोष, काव्य श्लोक व्याकरण छंदको उच्चार है ।
वहोतर कला विद्या चउदे निपुण भयो, करी करी वाद जीत्या पंडित अपार है ।
जायो तव अक्षर न याद रह्यो एक तस, अमोरिख कहे तैसो जाणिये संसार है ।

एक वंध्या नारी के स्वप्नवत् संसार ।

एक वंध्या नारी तिन स्वपनमें पूत जन्यो, जानत सकल दिन आतत उल्लास है ।
सोदागणो आय केई गावत मंगल गीत, वटत वधाई सब पूगी मन आस है ॥
वाजिंत्र अनेक वाजे सज्जन सकल मिल, ब्राह्मण भी आय कीनो नामको प्रकास है ।
नींद गई खुले नैन हुई है उदास मन अमोरिख कहे तैसे जगत के विलास है ॥६८

संसार में सार वस्तु ।

स्वपन सप्तान ये संसार है असार तामें, आयो तज भूल्यो फिरे भृगु ज्यो अज्ञान है ।
दारा सुत आदि मोह पाश में बंधायो भूद, करत भगत कूड कपट की खान है ॥
आष्टादश पाप कर बांधत करम शठ, काल मुख जाय मन करे पछतान है ।
अमोरिख कहे यामें तप जप वतसार, धार सुद्ध भाव तासे होय निरवान है ॥

श्री आशुत

काव्यसंग्रह

प्रतीतिर माला

॥ दोहा ॥

श्री गुरु पद पंक्त नमूँ, समरी अमरी गाय ॥
प्रसंगाला रचना कहूँ, भविजन ने सुखदाय ॥

सवैया २३ सा ।

कौन है बंध ? विपै अतुराग, सुमुक्ति ? विरक्त दशा चिन्ता आने ।
को भव छेदक ? श्री जिन आगम, मोक्ष-सुहेतु ? क्रिया अरु ज्ञाने ।
नर्क का द्वार ? त्रिया चित्त जानहूँ, स्वर्ग प्रदायी ? अहिंसा प्रधाने ॥
को अति आनन्द ? लालच त्याग, अभीरिख धार सुसोख सुजाने ॥ १ ॥
को सुख ? सेन करे समतायुत, जागृत कौन ? विवेक हिए ।
कौन ठगी ? हह इंद्रिय पाँच, सुभिन्न कहो ? शिव राह दिए ।
कौन दरिद्र ? करे अति लोभ, कहो धनवंत ? संतोष लिए ॥
जीवत सत्यु ? निरुधमवन्त, अभीरिख प्रस सुधा सुपिए ॥ २ ॥
कौन है फाँस ? समत्व अहंपद, सो उभये भव दुख दिखावे ।
अंध से अंध है कौन कहो गुरु, जो विपयातुर चिन्ता कहावे ॥

प्रकीर्णक

काव्य

[१३८]

को दुःखमूल है ? कामिनी द्रव्य, कहां कहा मृत्यु ? कुत्राश वतावे ।
 धार हि ए हित सीख सुजान, अभीरिख भेद कही समभावे ॥ ३ ॥
 को गुरु ? दे उपदेश भलो हित, कौन सुशिष्य ? सुभाकि रचावे ।
 को महारोग ? ये है जग जाल, कहा उपचार निजातम ध्यावे ॥
 कौन आभूषण ? शील मनोहर, तोरथ को ? मन शुद्ध रहावे ।
 धार हि ए हित प्रश्न सुजान, अभीरिख उत्तर दे समभावे ॥ ४ ॥
 रयाग के योग्य कहा जग में ? सुत. कंचन नारी कहे गुरु ज्ञानी ।
 सेवन योग्य कहा जु भले ? गुरुदेव पदांबुज आगम जाती ॥
 कौन सुसाधु ? नहीं जस चाह, कहां कृण मुढ ? विवेक न जानी ।
 जीवन सोहि नहीं कष्टु दोष, अभीरिख सीख गहो भवि प्राणी ॥ ५ ॥
 विद्या कटा कहां ? स्वर्ग की दायक, ज्ञान कहा ? अक्षय सुख देवे ।
 लाभ कहा ? निज आत्म जानल, शूर कहां ? जो विपै नहीं सेवे ॥
 को जग जीत ? रहे वरा में मन, विप कहा ? विपया रस लेवे ।
 कौन दुःखी ? जिनके अनुराग, अभीरिख सार विचार के केवे ॥ ६ ॥
 को नर प्राज्ञ सुधीर कहां ? त्रिय काम कटाक्ष से चित्त आडोले ।
 है धन्य ? जो उपकार करे पर, को पूजनीय ? सुजान अभीले ॥

पातक मूल ? अधिष्ठा कही, कहा धर्म को मूल ? विनय गुरु बोले ।
कौन पशु ? नहीं जानु विवेक, अमीरिख प्ररत सुधा-रस तोले ॥ ७ ॥
कौन बड़े रिपु ? कर्म अरो दुःखमूल कहा ? ममता अधिमान ।
का मुख शोभ ? लवे मधुरापन, दान सिरे कहा ? है अभेदान ॥
कौन है तस्कर ? इन्द्र विकार, सुशोभ सभा विच विद्या प्रधान ।
निर्य कहे किन से दरिये ? अपवाद अरु जग जाल तूफान ॥ ८ ॥

सर्वैया इकतीसा ।

किनतें रहीजे दूर ? पापी खल दुष्टाते, चित्तसे न भूलूँ कहा ? कामिनी चरितको ।
मोक्ष अभिलाषा तांहु शीघ्र कहा योग का ? दया दान मन दम साधन पवितको ॥
कौन नर मूक ? जो न बोली सके ससे युक्त ? बधिर को ? सुने नहीं हित अधितको ।
कौन न भरोसे योग ? अमीरिख कहे त्रिय, कौनसे अंतर तजू ? जान निज भित्तको ॥

सनतकुमार चक्रवर्ती ।

सौधर्मी सभा सकार देवी देव परिवार, आवधि प्रयुञ्ज इन्द्र ऐसी कहे बात है ।
चक्रवर्ती सनतकुमार महा गुणधारी, रूप है उदार सार निरुपम गात है ॥
नहीं ऐसी रूपवंत अन्य कोई देव नर, तीन लोक मांहीं जस महिमा विख्यात है ।
अमीरिख कहे एक देव नहीं मानी बात, देखण उमायो चाल्यो चित्त हरखात है ॥

अभिव्यक्ताः—शास्त्र-विशारद पौढ कवि श्री अमीश्रुषिजी म०

वृद्ध विप्र रूप कियो हाथ पग डोले सिर, अंग सब धूजे नहीं सूके पूरो नेणसो ।
 पण्डी पोट सोस पर तोकके आयो चलाय, राजद्वारे आयो पोट डारत अनेणसो ॥
 पैरायत पूछे आयो कहां से नवरूप कियो, मारगामें एती जूती फाटी कहे वेणसो ।
 असी कहे भूप-रूप देखणे की चाह मुक्त, देखूंगा दीदर तब पामू चित्त चैनसो ॥

रत्नक चलाय गयो भूप पास ततलण, सांड वात कहे सब अरज गुजारी है ।
 भूप आज्ञा पाय आय देख रूप हरखाय, अहो रूप अहो रू न वाणीयो उचारी है ।
 सुणयो जैसो देखयो आज्ञा जालनद अपार भयो, राय कहे पूरो रूप नहीं हणवारी है ॥
 अमीरिख कहे करो खान अलंकारधार, वंदूं सभामांही तब देखो छवि मारी है ॥

गंधोत्क रत्नाग करो धारया है अमोल वस्त्र, रतन जडित भलो मुकुट सो सीस है ।
 कुंडल अनूप कंठ द्वार कड़ा पांचो कर, मुंदड़ी अंगुलि मांही पैरो आवतोस है ॥
 रतन सिंहासन किराजे सब खान सज विप्रको बुजायो मन धारके जगीस है ।
 अमीरिख कहे विप्र आयके सभा मभार, निरख डोलायो सीस देखे नर ईस है ॥

पूछे भूप विप्रसुं डोलायो किण काज सिर, विप्र कहे राजा आव वैसो रूप ताइ है ।
 अस्मिमान करत बिणस गर्ह देह तरी, थूंक क्यों न देखे भूप पीकनानी मांइ है ॥
 कीड़ा कलबल देखे हृवः भयभीत नृप, देवता प्रकासे अक्व चेतें क्यों न भाई है ? ।
 साड़ी सातसे वरस द्यायो रक्त पित्तो तन, अमीरिख देव गयो गगन सिवाइ है ॥१॥

अभिव्यक्ताः—शास्त्र-विशारद पौढ कवि श्री अमीश्रुषिजी म०

प्रकीर्णक

काव्य

[१३२]

श्री अमृत
शास्त्रसप्रह

ततस्त्रिण राजा सब संसार असार जाण, छोड़ राज्य ऋद्धि लियो संजमको भार है ।
चौरासी चौरासी सेस हाथी घाड़ा रथ छोड़, छन्दुकोड पाला देश बत्तीस हजार है ।
चवदे रतन नव निधके भंडार त्यागे, लक्ष एक बाणु सेस तजो जिये नार है ।
अमीरिख कहे मोह वश खट मास लग, संग संग फिरयो अंतजर परिवार है ॥
भुरे परिवार सब देख आयो इंद्र तब, समभाया सत्रको धीरजपन धारी है ।
मुनिको वंदन कर इन्द्र सुरलोक गयो, पालत आचार तब संजम करारी है ॥
दुक्कर परीसा सखा कियो नहीं काया सार, वनघाती घात कर केवल जजारी है ।
अमीरिख कहे मुनि पाया है मुगतगढ़, सदाहो त्रिकाल ताकूं वंदना हमारी है ॥७
चेत भवि प्राणी जाण काचा कुंभ जैसे काया, हाडको पिंजर छायो उपरसु चाम है ॥
महा अपवित्र दुर्गाथो नहीं सार कछु, करे क्यों गुमान मत मान थिर ठाम है ॥
बादल की छाया जैसे इन्द्र के धनुष्य सप्त, पल में पलट जाय होत्रत निकाम है ।
अमीरिख कहे यामें तप जप व्रत सार, धार प्रभु वेणु जासूं मिले शिवधाम है ॥

चार प्रकार के गीते ।

सद्गुरु वारवार समभावे हित करी, चिंतामणि रतन सो नरभव पायो है ।
भटकत चारु गति ऊंच नीच भव किया, शुभाशुभ कर्मवश सुख दुःख आयो है ॥
मनुष्य जनम क्षेत्र आराज उत्तम कुल, पंचद्रिय पूरी आयु दीरघ कहायो है ।
सुगुरु सिद्धांत वेणु सुश्रद्धा प्रतीति सार, अमीरिख कहे कीजे उद्यम सवायो है ॥

ी अमृत
क ज्यसंप्रह

लाख का गोला ।

दूजो नर वाणो सुण चाल्यो है आवास निज, निद्रक के वेण नहीँ चित्तमं धरत है ।
तव कहे लोक भाई करिये धरम निरय, आयो मात पास तव माता उचरत है ॥
भाल सल चढा कहे घर से निकल दुष्ट, निर्दयी पातकी होय धरमी फिरत है ।
लाख गोला सग सुण वचन विगारयो धर्म, अमोरिख कहे नहीँ संसार तिरत है ॥

काष्ठ का गोला ।

तीजो नर सुणके वखाण चल आयो घर, लोक और साता मिल बोली दुष्टवाणी है
रीभया है अचल जाए आयो निज नारो पार, क्रोधण कराल करो रीस कहे ताणी है
मरुं अपघात करो डरयो है वचन सुण, रखे विप खाय होय घर धूलवाणी है ।
अगत के जोग काष्ठ गोलो जलो राख हुयो, अमीरिख कहे सोही धरम अजाणी है ॥

भिद्रो का गोला ।

चोथो नर बात सुणो प्राणी चित्ता ठाभ राखी, आयो है बजारमांही लोक कहे बात है
धरमको धोरी हुयो बाबो होय थैठी जाय, सिह जैसे गाजी बोलयो वचन विरथात है
धरम अजाण मूढ बांधे क्यो करम पीढ, उताम की निद्रा क्रिया आवे कांड हात है ।
कांड में विगाड्यो तुज देवो क्यो फोगट गाल, अमीरिख कहे ऐसा कथा अवदात है ॥

प्रकीर्णक
काव्य

श्री अमृत

काव्यसंग्रह

माता करी रोस तब दीधो है जवाब तस, धरम करत मोकुं बरजे क्यों मात है ? ।
साची माता सोहों जो सिखावे धर्म नंदनको, वेरण है पूरी जो तूं करे भूढी बात है ।
तूही कर धरम संसार को अस्तर जाण, परभव जाना संग जावे धर्म आथ है ।
अमीरिख कहे सुण पुत्र का वचन बोली, कर पूत सुकृत धरम हरखात है ॥

माता समसाय कर आयो है त्रिया के पास, देखी भरतार बोली वेण विकराल है ।
रे भूंडा तू निशदिन लगो है साधु के संग, रही हूँ अकेली धर मारग निहार है ॥
साथको सुंडाय क्यों न मांगो भीख धर धर, कहां लग कहूं नहीं कामकी संभाल है ।
वारवार कहूं तोय लाज नहीं तिल भर, अमीरिख कहे भवि देखो जग जाल है ॥

क्रोधण कंकाली करी लडक फडक बोली, पकड़ीने बांह आगे न्हायथा नाना बाल है ।
यो लं धारो धर जाय पड्डं कुत्रामें आज, कर जैसी आवे दाय देवे इम गाल है ॥
सुनके वचन नहीं डरयो है लगार सन, कहे कयों करत कोप खोटी जग-जाल है ।
अमीरिख कहे नहीं ओइ में धरमपंथ, मिट्टी गोली पाक होय सहै आग जाल है ।

चार विध गोला सम पुरुष वखाएया पड्डं, तामें मिट्टी गोली महा उत्तम विचार है ।
कष्ट मांहि रहे दृढ़ डंग न धरम सेती, शिवपंथ साधे होय आनन्द अपार है ।
दुविध धरम शुद्ध भावसु आराधो भव्य, जनम मरण टाल होय निराकार है ॥
गुरु सुखारिखजी प्रकाद अमीरिख कहे, धारो हिल सीख नित रहे जै कैकार है ॥१२

प्रकीर्णक

काव्य

ॐकार का स्वरूप ।

तीन सुवरत मिले बने ॐकार वर्ण, अकार उकार पुनि मकार सुधारिये ।
अराध सुभात्रा ताके उपर जो विंदु देहि, याहीको विचार हिय माही सुविचारिये ॥
अधोलोक अकार उकार ते उराध लोक, मकारसे मध्यलोक कीजे निरधारिये ।
अर्द्धमात्रा सिद्धशिला विंदु सिद्ध रूप शुद्ध, अभीरिख कहे न्याय पक्ष से निहारिये ।

श्री महावीर रतुति ।

जपो जिनराज सरे सब काज मिले सब साज हरे दुःख धंदा ।
सिटे भयभीत लहे जगजीत प्रभुजी से प्रीत किया सुख कन्दा ॥
करो नित्य जाप हटे सब पाप, वधे सुप्रताप टले सब फन्दा ।
धरो हित सीख आनन्द प्रतीख, जपे अभीरिख सिद्धारथ नन्दा ॥२॥

सर्व लघु वर्ण काव्य ।

परम धरम सज ऋषभ ऋषभ भज, फलत सकल कज सरख भमन हर ।
गहत धरम धज हटत आनष गज, टरत भरम रज खलपण तजकर ॥
करम करत लज कठ अठ कठ दज करण चरण भज धरम सरण वर ।
असरत वच अज रहत वरत मज, जनम मरण तज लहत अचल धर ॥३॥

रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीरखिजी म०

रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीरखिजी म०

प्रकीर्णक
काव्य

[१३६]

देव-वर्णन काव्य ।

.....
.....
हिंसा भूठ चोरी लोण मत्सर न भय लेश, प्रेम न प्रसंग हास पास न वसाहये ।
अमीरिख कहे गुण द्वादश विराजमान, ताको भव्य प्राणी नित्य शुद्ध भाव व्याहये
गुरु-वर्णन ।

गुरु पंच महाव्रत धारी पंचेन्द्रिय जीत, कषाय तजत चार जग दूर करिया ।
जाने भाव कर्ण जोग-सत्य कथा जिनराय, क्षमाने वैराग्यवंत सत्यशील दरिया ॥
मन वच काया सम धारत वारत काम, दर्शन चारित्र्य दान-गुण शुद्ध भरिया ।
जीवण की आश भय मरणको नहीं लेश, कहे अमीरिख जाके पद सीस धरिया ॥
धर्म-वर्णन ।

धरम परम सुखदायक जगतमाही, केवलि प्रणीत धार तिहुँ लोक नित को ।
अहिंसां वचन सत्य अदन्त न लीजे पर, धारिये शीयल व्रत दूर तज वित को ॥
समिति गुपति शुद्ध दान शील तप भाव, क्रोधादिक झोड़ भान वेण चित्त हितको
अमीरिख कहे खंती आदि दश भेद धर्म धारी कर्म-रिपु टाल लहे जग जीतको ॥

श्री अमृत

काव्यसंग्रह

शुद्धचित्ताः—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीरिखपिजी म०

प्रकीर्णक
काव्य

[१३७]

शुद्धचित्ताः—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीरिखपिजी म०

धनवंत देख सब आदर करत कहै, घर है तुमारे आप आगे पांव धारिये ।
धन सेती माने राय पंचमें बड़ो कहाय, करत है चाह सब कीरत उचरिये ॥
देखके दौलत नहीं धारिये गुमान मन, पूरव सुकृत फल दिलमें विचारिये ।
अमीरिख कहै धन बादलको छाया समं, धन को तो सार एक सुकृत वधारिये ॥७
मुखमें भिठाय और अंतर कपट वसे, तांको भव्य भूल मत कर विसवासे ।
जहर को कुंभ और अमृत को ढांकण है, सरप ने मोर को दृष्टांत तस भासरे ॥
वक सम ध्यान धरे कपट कलुप भाव, चित्त०..... में विभास रे ।
अमीरिख कहै तांके भूलहु न जाजे पास, कपट प्रताप मरी दुरगत वासरे ॥८॥

विवेकी पुरुष तोलकर बोलते हैं ।

बोलीमें आदर और जग में सुजास होय, बोली से सकल जन मिन हो रहत है ।
बोली से अनेक विध भोजन मधुर मिले, बोली से खावत मार गालीभो सहत है
बोली से है खांड और बोली से पैजार त्यार, बोली से तो जाय मूढ कैद ही लहवत है
अमीरिख कहै भवि बोली है रतनसार, सुगुणी विवेकी बोल तोलके कहत है ॥९

संसार की अनिरप्यता ।

भूठी काया माया जैसे बादल की छाया सम, पुर्य खिस जाय नहीं ठेरे पाय पलत है
दासिलो उजास जैसे संभाको प्रकाश जाण, ठेरे नहीं मूढ जैसे अंजुलिको जल है

लाभ अथ विंदु जैसे इंद्र के धनुष्य सम, कुंजर को कान जैसे तरुवर दल है ।
 अमोरिख कहे चेत चेत हो हृसियार नर, गाफिल रहे ते आगे पड़े मुसकल है ॥
 प्रभु-प्रार्थना ।

कृपानाथ कृपा करी दुष्ट बुद्धि नाश कर, काम क्रोध मोह लोभ चारों रिपु मारिये
 होय दूर अहंकार रुचें चित्त उपकार, शांत चित्त क्लेश नाश कुबुद्धि को टारिये ॥
 मेरी लाज राखो नाथ मैं तो हूँ अनाथ दीन, कर्म रिपु टार मेरी बाहंको संभारिये
 अमोरिख कहे प्रभु तारन तिरन आप, दुःख रूप सागर के पार यों उतारिये ॥

अभवी पहिचान ।

वरसत भेववार भेदे नहीं मगसूल, अभवि को चित्त नहीं भेदे जिनवाणीए ।
 जलत जवायो जैसे अति घन वरसत, खारको जमीपै नहीं बीज बुद्धि मानिये ॥
 तुपको पछारे नहीं मिलत तंदुल कन, निकसे न माखन मथावे कोई पानिये ।
 सन्निपात रोगी तांको दूध खांड जहर होय, अमोरिख कहे ऐसे अभवी पिछानिये

जीव दया महस्व ।

जगत के जीव तांको आतम समान जान, सुख अभिलाषी सब दुःख से डरत है ।
 जाणी इम प्राणो पालो दया हित आणी यही मोक्षको निलाणी जिनवाणी उचरत है ।
 भेवराथ राय भेषकुंवर धरमस्त्वि, निज प्राण त्याग पर जतन करत है ।
 जनम मरण भेद पामत अनंत सुख, अमोरिख कहे शिव सुन्दर वरत है ॥१३॥

प्रकीर्णक

काव्य

[१३६]

शिकार निषेध ।

ससल्या मृगादि केह वनमें गरीब जीव, सभी निराधार ताकां कौन आधार हं ।
दोडत फिरत निज प्राण के बचायवेको, वैरी है अनेक काहं न करत सार हं ॥
लोक सब जाण वाका कोहं नहों सार करे, अमीरिख कहे अणी बातने त्वचारिये ॥
कायर अनाथ ऐसे जीवनको करे घात, ऐरे निदये ताको दया नहों आहं हं ॥
वेद औं पुराण वार्त्ता सुतिके विचार रखे, इश्वर रची है सृष्टि पत्त हृद धारे हं ।
प्रभुके बनाये पशु पत्नी आदि जीव सब, तांकां मारी डारे हियं न्याय न विचारे हं ।
कुंभकार पात्र कोऊ फोड़े ता दिरावे दंड, आप सजावान भये ताकां ना निहारे हं ।
कहे अमीरिख कर्म न्यायके विरुद्ध देखो, 'कत्रीपद पायके गरीब जीव मारे हं' ॥

जिनवाणी स्तुति ।

पाप हरे चित्त शुद्ध करे शिव वास वतावन को अगवानो ।
कर्म अहि विष गारुडी मंत्र अनंत अखूद निधि दरसानी ॥
तारक जहाज समान महोदधि रोग अज्ञान सुधा सम जानो ।
धर्म विवेक हिय प्रगटावन या जग में प्रगटी जिनवाणो ॥१६॥
ताप अज्ञान नसे हिय के मनु चंद्रकला सम है सुखदानो ।
चातक भव्य मिटावन प्यास मनु शुभ स्वांत सुधा सम जानी ॥

श्री अमृत
काव्यसंग्रह

टालत जन्म जरादिक रोग कही हितकारन केवलज्ञानी ।
श्रीगणराज प्रकाश करी भवि तारण कारण ये जिनवाणी ॥१७॥
केवलवंत महंत जिनेश प्रकाश करी सबको सुखदानी ।
या सुन होय मिथ्या तम दूर लहे निज आतम रूप पिछानी ॥
जास प्रसाद अनंत तिरे तिरिहैं तिरते जुं अभी भव प्राणीः ।
या सम अमृत और नहाँ धन है धन है धन है जिनवाणी ॥१८॥

रफुट समस्या पूर्तियाँ

मंगलाचरण ।

केवल दरस ज्ञान भानको प्रकाश भयो, संशय तिमिर पुंज दियो है निवारि के ।
चौतीश अतिशौं वर पैंतीस वचन गुण, देव पद राजे होय दश गुण धारि के ॥
लोकलोक द्रव्य क्षेत्र काल भाव भव आदि, भव्य तारवैको कह्यो भेद विसतारिके
अमीरख कहे ऐसे देव अरिहंत ध्याय, कहूँ हैं समस्या प्रति उत्तर विचारि के ॥१९॥

किन कां न रुचे जिन वेण सुधा ।

शुभ शब्द अनूप गंभीर महा स्वर पंचम वाणि वदे विबुधा ।
नर नारी पशु सुर इंद्र शची मिल आवत वैन पिपू लुधा ॥

प्रकीर्णक
काव्य

सब लोक अलोक के भाव कहे पदद्रव्य पदारथ भेद सुधा ।
चित मोद अमीरिख होय तवे किनको न रुचे जिनवेन सुधा ? ॥२॥

गुनरच ।

नहि जानत जेह निजातम रूप रता पर द्रव्य चले विरुधा ।
घट जोर मिथ्या ज्वर को तिहसे सब दूर भई निज धर्म छुधा ॥
मन लीन परिग्रह आरंभ में प्रभु शीख न धारत भेद दुधा ।
जु अमीरिख जीव अभ्यर्थ हुवे जिनको न रुचे जिनवेन सुधा ॥३॥

शिव पामिवेको कह साधन है ?

धन धान तजे गृह छोरे भजे जिनराज के नाम लगयो मन है ।
शुद्ध सभ्यक् ज्ञान विराग रुचे न करे परमाद इको छिन है ॥
निश्वासर दुकर धारत कष्ट आनन्द लखे मनुपा तन है ।
जिन आन अमीरिख शोस धरे शिव पामिवेको यह साधन है ॥४॥

प्यारो शया कव नैनको पाती ?

शासन नायक वीर जिनेश त्रयोश बोल अभिग्रह ठानी ।
द्वादश बोल मिले चंद्रना गृह आते लखि प्रभुको हरखानी ॥
नैनमें नीर निहारयो न वीर अमीरिख ताम फिरे जिनजानी ।
देख विमूरति आर लियो जिन प्यारो भयो तव नैनको पाती ॥५॥

श्री अमृत
काव्यसंग्रह

श्री अमृतचरिताः—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीन्धुषिजी म०

किह कारण दिव्य प्रकाश भया ?

जनमें जब श्री जिनराज तबै सबही जिय चेतन चैन लिया ।
तिह औसर देव सुरेश मिली जिन ते गिरि जाय कल्यान किया ॥
सुर आवत जात असंख्यन ते वर यान प्रकाश आकाश छया ।
गुस्देव अमी मुक्त सत्य कखो इह कारण दिव्य प्रकाश भया ॥ ६ ॥

तुमरी छवि जात न सोपे कही ।

माणि मांडित हेम सिंहासनपै जिनराज विराजत ज्ञान लही ।
विव चामर दीजत देवपति त्रय छत्र सुशोभित आज मही ॥
शुभ वृत्त अशोक ध्वजा लहिके नभमें वर टुंठुभी बाज रही ।
तव देव सुरेश कहे प्रभुजी तुमरी छवि जात न सोपे कही ॥ ७ ॥

पुनरच ।

गई ओपम ताप मिथ्यात तणी रितु रीतल सम्यक् आय रही ।
तिह औसर ज्ञान घटा उभड़ी जिनवेन घुपा भर लाय पही ॥
सब भूलकी धूल दबी तिस ये हरितगई विरागसु छाई मही ।
रट दादुर मोर पीयूष भवी तुमरी छवि जात न सोपे कही ॥ ८ ॥

श्री अमृतचरिताः—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीन्धुषिजी म०

[१४३]

प्रकीर्णक
काव्य

श्री अमृत

काव्यसंग्रह

श्री अमीश्वरचरिताः—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीश्वरपिजी म०

प्रतिरोम हि लोचन कर्णो न भये ? ।

विसला जननी सजनी गण माही विराजत है जिन गोद लिये ।
सुखमा तन भूषणकी अधिकी रिय अमृत त्यां छवि पुंज छये ॥
लखि शोभित आनन रूप तवे सजनी गण यो अभिलाष किये ।
तुमरो छवि देखन को हमरे प्रति रोम हि लोचन कर्णो न भये ? ॥६॥

पुनरच ।

जनमें जिनदेव सुरेश मिली लेह उरसव काज सुभेर गये ।
तिह औसर कीर वधि जल लाय न्हवायत है जिन गोद लिये ॥
नखतें शिखलौं सब भूषण साज पियूष रात्री चख अंक किये ।
सुखमा निरखी कहे देव सबे प्रतिरोम हि लोचन कर्णो न भये ? ॥१०॥

जल पात बिना कर्णो वधी लकरी ।

मुनि विष्णुकुमार बली छलिवे हित वाचन रूप अनूप धरी ।
रहिवे हित श्रीपद भूमि मगो फिर लाख सुयोजन देह करी ॥
इम केत अमीरिख ता सभये पद द्वे भरि लीध धरा सगरी ।
मुतिराज के लेटिका हाथ हती जल पात बिना सो वधी लकरी ॥११॥

श्री अमीश्वरचरिताः—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीश्वरपिजी म०

प्रकीर्णक

काव्य

[१४४]

विधवा सिर कीध सुहाग को टीको ।

वैधवता लही पाप उदे संड नेक न चित्त धरे सुमती को ।
छोरि के लाज अकाज करे विषया वरा होय तजी शुभ धीको ॥
अंतर भूपण साज सजी तन वैधन प्राण चलो पर पीको ।
धिक् है धिक् है यों पिण्ड कहै विधवा सिर कीध सुहागको टीको ॥१२॥

पुनरप्य ।

कुल कान कटा करिके कुलटा अधराश्रुत बूँद चटा पर पीको ।
ठारि अटा तन धारि छटा करि वंक कटाच्छ कटा जनहीको ॥
लाय वटा निज नेम घटा उलटा करि काज हटा सुमती को ।
हे धिक वेश पिण्ड गुणी विधवा सिर कीध सुहाग को टीको ॥१३॥

विधवा सिर सोहे सुहाग को टीको ।

ज्ञान-विराग जग्यो विधवा चित्त संपति सुख लख्यो जग फीको ।
चारित भाव पिण्ड गुनी गुरुणो पद धारण कीन भतीको ॥
संजम देवन उत्सव ठानत वेश सुहाग सज्यो शुभ नीको ।
ताहि समे लखि तेहु गुनी विधवा सिर सोहे सुहागको टीको ॥१४॥

जगमें सब ही जन स्वाराथ के ।

जब चाह हुए चिन्ता में कछु भी मुख मंजुल शब्द कहे कथ के ।
नहीं श्रौंगुन जानि परे तिनके अति आदर देत कभू न थकें ॥
सरिये जब कारज रिख विधूष सो होत अरो परमारथ के ।
तिन कारन रंत कहे सुगना जगमें सबही जन स्वाराथ के ॥२१॥

धारत है तिनकी बलिहारी ।

माशाक भर्म मिथ्यात्म मूर जगे हिय सम्यक् भाव उजारी ।
दायक द्रव्य पदारथ भेद भयानक कर्म रिपु क्षयकारी ॥
जीव अन्त तरे चित धार गये शिव मंदिर वहे अविकारी ।
केत अभीरिख धन्य जिनागम धारत है तिनकी बलिहारी ॥२२॥

मिट जाय चउ गत आगत फेरी ।

कामही काम कहा कहे मूरख काम है काल अनादिको वैरी ।
भौ वन में भटकण्य भ्रमाय दिखे अति कष्ट व्यथा अधिकारी ॥
छेड़हु रांग सुजान अभीरिख धारहि ये मुक्त सीख भलेरी ।
आत्म ज्ञान विचार गुनी मिट जाय चउगत आगत फेरी ॥२३॥

ॐ श्रीगणेशाय नमः

श्री अश्वत्थ
काव्यसंग्रह

ॐ श्रीगणेशाय नमः—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीरुषिजी म०

प्रमाण करी विपता हि टरी ।

हमारे चित्त श्री जिनधर्म वसे न गमे अन्नमत मिथ्यात अरी ।
परसेष्टि सदा उर ध्यान धरे रुज संकट मेदत काम जरी ॥
उजरी चित्त लेश धरो हियमें यह सार सुधारस सीख भरी ।
गुरुदेव पिपूष दिया यह ज्ञान प्रमाण करी विपता हि टरी ॥२४॥

तारक देव कहावत सोई ।

काम अज्ञान भयादिक दूषण जामें न पावत मूलही कोई ।
केवल दर्शन ज्ञान करी जिन द्रव्य स्वरूप रक्षा सब जोई ॥
इन्द्र नरेन्द्र नमो सुरवृन्द जपे भवि सुख लहे अघ सोई ।
देव पिपूष घने जगमें पर तारक देव कहावत सोई ॥२५॥



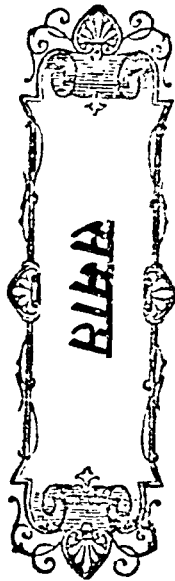
ॐ श्रीगणेशाय नमः

ॐ श्रीगणेशाय नमः—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीरुषिजी म०

प्रकीर्णक
काव्य

श्री अमृत
कान्यसंपद

रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीरुपिजी म०



रचयिता:—शास्त्र-विशारद प्रौढ कवि श्री अमीरुपिजी म०

श्री जैनधर्म प्रसारक संस्था, सदर बाजार—नागपुर द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की सूची

नाम पुस्तक	मूल्य	नाम पुस्तक	मूल्य	नाम पुस्तक	मूल्य
श्री पञ्च परमेशो वन्दना (हिन्दी)))	जैन धर्माचें अहिंसा तत्त्व (मराठी) -))	गुरु गुण महिमा, (मराठी) -)	मूल्य
आत्मांजलि चा सरल उपाय,	(मराठी))	अहिंसा, "))	आविका धर्म दर्पण, " -)	" -)
अन्यधर्मापेक्षा जैन)	उपदेश रत्नकोष, "))	आलोचना (अलोचना) (हिंदी) -)	" -)
धर्मातील विशेषता "))	पद्यारमक वैराग्य शतक "))	श्री सामायिक सूत्र सार्थ, " -)	" -)
वैराग्य शतक, "))	माण्डुसारीचे ३५ गुण, "))	श्री रत्न ऋषिजी महाराज का	
जैनदर्शन व जैनधर्म, "))	जैनधर्मा विषयी अजैन विद्वा- "))	जीवन चरित्र, " ≡)	" ≡)
माझी भावना, "))	नांचे अभिप्राय, भाग २ रा, " -))	अध्यात्म दशहरा, " ≡)	" ≡)
जैनधर्माविषयी अजैन विद्वा- "))	श्री महावीर सन्देश, "))	तपस्वी पूज्य श्रीदेवजी ऋषिजी	
नांचे अभिप्राय भाग १ ला, " -))	गजल गुलचमन बहार, " -))	म.का जीवन चरित्र अर्द्धमूल्य, " ≡)	" ≡)
उपदेश रत्न कोष, " =)	=)	श्री तिलोक ऋषिजी महाराज विरचित		श्री तिलोक ऋषिजी महाराज	
मराठी जैन पद्यावली, " -))	पत्रे चित्रालंकार काव्य, (हिन्दी) =)	=)	का जीवन चरित्र " -)	" -)
हिन्दी जैन पद्यावली (हिन्दी) -))	ज्ञान कुञ्जर, " =)	=)	जीवन चरित्र सहित श्रीसत्यबोध, २।	" २।
		शीलरथ, " -))	श्री श्रेणिकचरित्र " २)	" २)

पुस्तकें मिलने का पता:—

श्री रत्न जैन पुस्तकालय,

सु. पो. पाथड़ी (अहमदनगर)



मुद्रक:—

श्री जैनोदय प्रिंटिंग प्रेस, रतलाम,

